Centre for Distance & Online Education (CDOE)

Bachelor of Arts

(B.A.Ist year)

HISTORY SEMESTER- 1

C24MIC112T

Indian National Movement

Minor Course (MIC)

Guru Jambheshwar University of Science & Technology HISAR-125001

CONTENTS

Sr. No	Title Name	Author	Pages
1	Unit-1 अध्याय – 1 **राष्ट्रीय चेतना का उदय एवं प्रारम्भिक राष्ट्रवाद** Rise of National Consciousness and Early Nationalism in India	Dr Sandeep Bishnoi	3
2	अध्याय – 2 **गाँधी युग एवं जन-आंदोलन** Gandhi Era and Mass Movements in India	Dr Sandeep Bishnoi	32
3	Unit-2 अध्याय - 3 **क्रांतिकारी राष्ट्रवाद एवं स्वतंत्रता के वैकल्पिक मार्ग** Revolutionary Nationalism and Alternative Paths to Independence	Dr Sandeep Bishnoi	61
4	अध्याय - 4 **सांप्रदायिक राजनीति एवं भारत विभाजन की ओर बढ़ते कदम** Communal Politics and the Steps Towards Partition of India	Dr Sandeep Bishnoi	90

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24MIC112T	**AUTHOR : DR. SANDEEP BISHNOI**
LESSON NO : 1	**VATTER : Dr. DHARAMBIR**

अध्याय – 1

राष्ट्रीय चेतना का उदय एवं प्रारम्भिक राष्ट्रवाद

Rise of National Consciousness and Early Nationalism in India

अनुभाग **विषय-वस्तु**

1.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

1.1 प्रस्तावना

1.2 राष्ट्रीय चेतना का उदय

1.2.1 'राष्ट्रीय चेतना' और 'राष्ट्रवाद' की अवधारणा + तालिका

1.2.2 ब्रिटिश शासन का प्रभाव — आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक

1.2.3 राष्ट्रीय चेतना के उदय के कारण — शिक्षा, प्रेस (6 अखबार), रेलवे, इल्बर्ट बिल

1.3 सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

1.3.1 8 प्रमुख सुधार आंदोलनों की तालिका (ब्रह्म समाज ⟶ देवबंद)

1.3.2 राजा राममोहन राय — 'आधुनिक भारत के जनक'

1.3.3 स्वामी विवेकानंद — शिकागो भाषण, हिंदू राष्ट्रवाद

1.3.4 स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज

1.4 Check Your Progress — 1

1.5 1857 का महाविद्रोह

अनुभाग	विषय-वस्तु
1.5.1	5 दृष्टिकोणों की तालिका (सावरकर से Majumdar तक)
1.5.2	कारण — सैनिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक
1.5.3	7 प्रमुख केंद्र और नायक — लक्ष्मीबाई, कुँवर सिंह आदि
1.5.4	असफलता के कारण
1.5.5	राष्ट्रीय चेतना पर प्रभाव
1.6	Check Your Progress — 2
1.7	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और प्रारम्भिक राष्ट्रवाद
1.7.1	INC की स्थापना (1885) — तथ्य-तालिका
1.7.2	'Safety Valve' बनाम राष्ट्रवादी मत
1.7.3	उदारवादी चरण (1885-1905) — 6 नेताओं की तालिका
1.7.4	उदारवादियों की माँगें और कार्य-प्रणाली
1.7.5	दादाभाई नौरोजी — Drain Theory
1.7.6	गोपाल कृष्ण गोखले
1.8	Check Your Progress — 3
1.9	प्रारम्भिक राष्ट्रवाद की सीमाएँ, उपलब्धियाँ, 1905 का मोड़
1.10	Check Your Progress — 4
1.11	समकालीन प्रासंगिकता
1.12	सारांश (10 बिंदु)
1.13	शब्दावली (16 शब्द)

अनुभाग **विषय-वस्तु**

1.14 Self-Assessment Test (दीर्घ + लघु + वस्तुनिष्ठ)

1.15 Answers to Check Your Progress

1.16 References / Suggested Readings

1.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय के कारणों और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक नीतियों का भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रभाव जान सकेंगे।
- 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों और उनके राष्ट्रवाद से संबंध की व्याख्या कर सकेंगे।
- प्रेस, शिक्षा और पाश्चात्य विचारों के प्रसार की राष्ट्रीय जागृति में भूमिका को रेखांकित कर सकेंगे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) की स्थापना, उद्देश्यों और प्रारम्भिक चरण की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- उदारवादी नेताओं — दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले — के योगदान की विवेचना कर सकेंगे।
- 1857 के महाविद्रोह की प्रकृति, कारणों और राष्ट्रीय चेतना पर उसके प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- प्रारम्भिक राष्ट्रवाद की सीमाओं और उपलब्धियों का समालोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास विश्व के सबसे प्रेरणादायक राजनीतिक आंदोलनों में से एक है। एक ऐसे देश में जो सहस्राब्दियों की सांस्कृतिक एकता के बावजूद राजनीतिक दृष्टि से सदा खंडित रहा, राष्ट्रीय चेतना का उदय एक ऐतिहासिक क्रांति थी। यह चेतना रातोंरात नहीं आई — यह 18वीं और 19वीं शताब्दी की जटिल परिस्थितियों की उपज थी।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारत को आर्थिक रूप से दोहन का शिकार बनाया, सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी और भारतीयों को उनके ही देश में दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया। किंतु विरोधाभास यह है कि इसी औपनिवेशिक शासन ने अनजाने में राष्ट्रीय चेतना के बीज भी बोए — पाश्चात्य शिक्षा, अंग्रेजी भाषा, रेलवे, प्रेस और आधुनिक प्रशासन ने भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का काम किया।

19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधारकों — राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद — ने भारतीय समाज को नई दृष्टि दी और आत्म-सम्मान की भावना जगाई। इसी के साथ 1857 का महाविद्रोह, जो यद्यपि विफल रहा, राष्ट्रीय चेतना की पहली बड़ी अभिव्यक्ति थी।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने इस बिखरी हुई चेतना को एक संगठित राजनीतिक स्वरूप दिया। इस अध्याय में हम इस पूरी यात्रा को क्रमबद्ध रूप से समझेंगे।

1.2 राष्ट्रीय चेतना का उदय: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.2.1 'राष्ट्रीय चेतना' और 'राष्ट्रवाद' की अवधारणा

'राष्ट्रीय चेतना' (National Consciousness) से तात्पर्य उस सामूहिक अनुभव और भावना से है जिसमें एक भू-भाग के लोग स्वयं को एक राष्ट्र के रूप में पहचानते हैं, साझी पहचान महसूस करते हैं और बाहरी शासन से मुक्ति की आकांक्षा रखते हैं।

'राष्ट्रवाद' (Nationalism) एक राजनीतिक विचारधारा है जो मानती है कि प्रत्येक राष्ट्र को स्वशासन का अधिकार है। यूरोप में राष्ट्रवाद 18वीं-19वीं शताब्दी में उभरा और भारत में इसका आगमन मुख्यतः पाश्चात्य शिक्षा और ब्रिटिश दमन की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।

भारत में राष्ट्रवाद की विशेषताएँ:

विशेषता	विवरण
औपनिवेशिक विरोध	यह राष्ट्रवाद मुख्यतः ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोध में उभरा
सांस्कृतिक आधार	वैदिक परंपरा, रामायण, महाभारत — सांस्कृतिक एकता का आधार
बहुधर्मीय	हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई — सभी धर्मों के लोग शामिल
अखिल भारतीय	सभी क्षेत्रों, भाषाओं और जातियों का समन्वय

क्रमिक विकास	1757 से 1947 तक धीरे-धीरे विकसित; कई चरणों में
अहिंसक (अंततः)	गाँधी के नेतृत्व में अहिंसक प्रतिरोध की परंपरा

1.2.2 ब्रिटिश शासन की स्थापना और भारत पर इसके प्रभाव

1757 में प्लासी की लड़ाई के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत पर नियंत्रण करना शुरू किया। 1857 के बाद ब्रिटिश ताज (Crown) ने सीधे शासन अपने हाथ में ले लिया। इस शासन के भारत पर बहुआयामी प्रभाव पड़े:

(अ) आर्थिक प्रभाव — 'धन-निष्कासन' (Drain of Wealth)

दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'Poverty and Un-British Rule in India' (1901) में 'धन-निष्कासन के सिद्धांत' (Drain Theory) का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार ब्रिटेन भारत से प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये का धन खींच ले जाता था:

- भूमि-कर (Land Revenue): अत्यधिक भूमि-कर जिसने किसानों को बर्बाद किया।
- व्यापार-शोषण: भारतीय वस्त्र-उद्योग नष्ट किया; ब्रिटिश माल पर शुल्क-छूट।
- होम चार्जेज: ब्रिटेन में भारत की ओर से होने वाले व्यय का बोझ।
- कच्चे माल का निर्यात: भारत से कच्चा माल ले जाकर इंग्लैंड में तैयार माल बेचना।

धन-निष्कासन के अतिरिक्त ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण भारत की परंपरागत अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदल गया। स्थायी बंदोबस्त (1793), रैयतवाड़ी और महालवाड़ी जैसी भू-राजस्व व्यवस्थाओं में किसानों पर कर का भारी बोझ रहा। कृषि के व्यावसायीकरण (नील, कपास, अफीम) से किसान बाजार और साहूकार पर निर्भर हो गए, और बार-बार पड़ने वाले अकालों (जैसे 1876-78 का अकाल) ने स्थिति और बिगाड़ दी। भारत कच्चे माल का निर्यातक और ब्रिटिश तैयार माल का बाजार बन गया।

(ब) सामाजिक प्रभाव

ब्रिटिश शासन ने भारतीय सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला। एक ओर सती-प्रथा निषेध (1829), विधवा-पुनर्विवाह अधिनियम (1856) जैसे सुधार हुए, तो दूसरी ओर जाति-व्यवस्था को कठोर बनाया गया और 'divide and rule' की नीति अपनाई गई।

ब्रिटिश काल में आधुनिक शिक्षा, प्रेस और कानून के समक्ष समानता जैसे विचारों के प्रसार से सामाजिक चेतना बढ़ी, किंतु औपनिवेशिक सत्ता ने जनगणना और कानूनी वर्गीकरण के माध्यम से जाति और धर्म की पहचानों को अधिक कठोर भी

बनाया। ग्रामीण समाज में ज़मींदार, साहूकार और सरकारी अधिकारियों के गठजोड़ से किसानों और शिल्पकारों की स्थिति दयनीय हुई, जिससे असंतोष बढ़ा।

(स) राजनीतिक प्रभाव

ब्रिटिश शासन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन यह थी कि इसने भारत को पहली बार एक राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित किया। रेलवे, तार, डाक-सेवा और केंद्रीय प्रशासन ने भारतीयों को एक-दूसरे के निकट लाया।

एकीकृत प्रशासन, अंग्रेजी भाषा, समान कानून-व्यवस्था और न्यायिक ढाँचे ने भारत में राजनीतिक एकता की भावना को बल दिया। किंतु साथ ही औपनिवेशिक शासन ने भारतीयों को उच्च प्रशासनिक पदों से दूर रखा और सत्ता पर अपना नियंत्रण बनाए रखा; यही विरोधाभास आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन का कारण बना। लॉर्ड लिटन के काल की नीतियों (वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट 1878, आर्म्स एक्ट 1878, ICS की आयु-सीमा घटाना) ने भारतीय असंतोष को और तीव्र किया।

1.2.3 राष्ट्रीय चेतना के उदय के कारण

भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय के पीछे अनेक कारण थे जिन्हें हम निम्न श्रेणियों में समझ सकते हैं:

राष्ट्रीय चेतना का उदय किसी एक कारण का परिणाम नहीं था। यह आर्थिक शोषण, नए शिक्षित वर्ग के उदय, सामाजिक-धार्मिक सुधार, संचार के साधनों के विस्तार और ब्रिटिश नीतियों के प्रति असंतोष जैसे कारकों के संयुक्त प्रभाव से विकसित हुई। इन कारणों को नीचे क्रमशः समझाया गया है।

(अ) पाश्चात्य शिक्षा और विचारों का प्रभाव

1835 में लॉर्ड मैकाले की शिक्षा-नीति ने अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा को बढ़ावा दिया। इससे एक नए 'शिक्षित मध्यवर्ग' का उदय हुआ जो स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र और राष्ट्रवाद जैसे पाश्चात्य विचारों से परिचित था। यूरोप के स्वाधीनता-संग्रामों — अमेरिकी (1776), फ्रांसीसी (1789), इतालवी — ने भारतीय युवाओं को प्रेरित किया।

अंग्रेजी शिक्षा के साथ विश्वविद्यालयों (कलकत्ता, बंबई, मद्रास, 1857) की स्थापना हुई, जिनसे निकले वकील, शिक्षक, पत्रकार और डॉक्टर जैसे वर्ग ने आगे चलकर राजनीतिक नेतृत्व सँभाला। जॉन स्टुअर्ट मिल, बर्क और मैज़िनी जैसे चिंतकों के विचारों से भारतीयों ने उदारवाद, राष्ट्रीयता और प्रतिनिधिक शासन की अवधारणाएँ सीखीं। विडंबना यह थी कि जिन आदर्शों की शिक्षा अंग्रेजों ने दी, उन्हीं के आधार पर भारतीयों ने ब्रिटिश शासन के अन्यायों पर प्रश्न उठाए।

(ब) समाचार-पत्र और प्रेस

19वीं शताब्दी में भारतीय समाचार-पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई:

समाचार-पत्र	संस्थापक / काल	योगदान

Bengal Gazette	जेम्स हिकी (1780)	भारत का प्रथम समाचार-पत्र; ब्रिटिश नीतियों की आलोचना
Sambad Kaumudi	राजा राममोहन राय (1821)	सामाजिक सुधार; बंगाली में राष्ट्रीय विचार
केसरी / मराठा	बाल गंगाधर तिलक (1881)	जन-जागरण; 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'
अमृत बाजार पत्रिका	शिशिर कुमार घोष (1868)	ब्रिटिश नीतियों की तीव्र आलोचना
The Hindu	जी.एस. अय्यर (1878)	दक्षिण भारत में राष्ट्रवाद
इंडियन मिरर	नवीनचंद्र सेन (1861)	भारतीय दृष्टिकोण की पैरवी

(स) रेलवे और संचार का विस्तार

ब्रिटिश सरकार ने व्यापारिक और सैन्य उद्देश्यों से रेलवे का निर्माण किया, परंतु इसने अनजाने में राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया। एक बंगाली, मराठी और तमिल व्यक्ति अब आसानी से मिल सकते थे और अपनी साझी पीड़ा साझा कर सकते थे।

रेल, डाक और तार से केवल यात्रा ही नहीं, विचारों का आदान-प्रदान भी तीव्र हुआ। समाचार-पत्र, पुस्तकें और पत्र अब दूर-दूर तक पहुँचने लगे, जिससे विभिन्न प्रांतों के शिक्षित भारतीयों में संपर्क बढ़ा। 1853 में पहली रेलगाड़ी बंबई से थाना के बीच चली, और कुछ ही दशकों में रेल-जाल पूरे देश में फैल गया; इसी के साथ अखिल भारतीय संगठनों और अधिवेशनों का आयोजन संभव हुआ।

(द) ब्रिटिश नीतियों की प्रतिक्रिया

इल्बर्ट बिल विवाद (1883) जब अंग्रेजों ने भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार देने का प्रयास किया और यूरोपीय समुदाय के दबाव में इसे वापस लेना पड़ा — यह घटना भारतीयों के लिए एक झटका था जिसने राष्ट्रीय चेतना को तीव्र किया।

इल्बर्ट बिल विवाद के साथ-साथ 1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट और 1876-78 के अकाल के दौरान सरकार की उदासीनता जैसी घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश शासन भारतीय हितों के प्रति उत्तरदायी नहीं है। इल्बर्ट बिल (लॉर्ड रिपन के

समय) के विरोध में यूरोपीय समुदाय के संगठित आंदोलन से भारतीयों ने भी संगठित राजनीतिक प्रयास का महत्त्व सीखा, और यही अनुभव आगे चलकर 1885 में कांग्रेस की स्थापना की भूमिका बना।

1.3 सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन और राष्ट्रवाद

1.3.1 19वीं शताब्दी के प्रमुख सुधार आंदोलन

19वीं शताब्दी में अनेक सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन हुए जिन्होंने भारतीय समाज को नई दृष्टि दी और राष्ट्रीय चेतना की नींव रखी:

आंदोलन / संस्था	संस्थापक	वर्ष	राष्ट्रवाद में योगदान
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	1828	पाश्चात्य-भारतीय समन्वय; सती-प्रथा विरोध; तर्कवाद
आर्य समाज	स्वामी दयानंद सरस्वती	1875	'वेदों की ओर लौटो'; आत्म-सम्मान; हिंदी-भाषा प्रचार
रामकृष्ण मिशन	स्वामी विवेकानंद	1897	हिंदू पुनर्जागरण; 'उठो जागो'; शिकागो भाषण (1893)
प्रार्थना समाज	आत्माराम पांडुरंग	1867	मराठी क्षेत्र में सुधार; जाति-भेद विरोध
थियोसोफिकल सोसायटी	ब्लावात्स्की/ऑलकॉट	1875	भारतीय धर्म-दर्शन का पुनर्मूल्यांकन; आत्म-गौरव
सत्यशोधक समाज	ज्योतिबा फुले	1873	दलित उत्थान; जाति-व्यवस्था पर प्रहार; शूद्र अधिकार
अलीगढ़ आंदोलन	सर सैयद अहमद खान	1875	मुस्लिम शिक्षा; MAO College (1875); आधुनिकता
देवबंद आंदोलन	मुहम्मद कासिम	1867	इस्लामी शिक्षा; ब्रिटिश-विरोध; परंपरावादी

	नानौतवी		सुधार

1.3.2 राजा राममोहन राय: 'आधुनिक भारत के जनक'

राजा राममोहन राय (1772-1833) भारतीय नवजागरण के प्रथम प्रतिनिधि थे। उन्हें 'आधुनिक भारत के जनक' (Father of Modern India) की उपाधि दी जाती है:

योगदान	विवरण
ब्रह्म समाज (1828)	एकेश्वरवाद; मूर्ति-पूजा विरोध; भारत-पाश्चात्य समन्वय
सती-प्रथा विरोध	1829 में सती-प्रथा निषेध अधिनियम पारित कराया
स्त्री-शिक्षा	महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों का समर्थन
प्रेस की स्वतंत्रता	Sambad Kaumudi; प्रेस पर प्रतिबंध का विरोध
धार्मिक सुधार	हिंदू, ईसाई, इस्लामी सभी ग्रंथों का अध्ययन; एकेश्वरवाद
आधुनिक शिक्षा	अंग्रेजी और विज्ञान शिक्षा का समर्थन

> भारत उठेगा, तभी विश्व आगे बढ़ेगा।
> जो व्यक्ति स्वयं अपना सम्मान नहीं कर सकता,
> वह अपने देश का सम्मान नहीं कर सकता।
> — राजा राममोहन राय

1.3.3 स्वामी विवेकानंद: हिंदू राष्ट्रवाद का उत्कर्ष

स्वामी विवेकानंद (1863-1902) ने न केवल भारतीय दर्शन का विश्व-प्रसार किया बल्कि भारतीय युवाओं में राष्ट्रीय गौरव और आत्म-विश्वास का संचार किया। 1893 में शिकागो के 'विश्व धर्म संसद' में उनके भाषण ने भारत को विश्व-मंच पर प्रतिष्ठित किया।

> उठो, जागो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।
> भारत की आत्मा धर्म में है। यदि भारत धर्म खो दे तो भारत खो जाएगा।
> — स्वामी विवेकानंद

विवेकानंद ने कहा था:

> मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से संबंधित हूँ जिसने विश्व को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया।
>
> हमें ऐसे धर्म की आवश्यकता नहीं जो हमें यह न सिखा सके कि दूसरे धर्मों का सम्मान करो।
>
> — स्वामी विवेकानंद — शिकागो, 1893

1.3.4 स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज

स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-1883) ने 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। उनके 'सत्यार्थ प्रकाश' ने हिंदू समाज में क्रांति ला दी। उनका नारा 'वेदों की ओर लौटो' (Back to the Vedas) एक सुधार-आंदोलन के साथ-साथ आत्म-सम्मान का उद्घोष भी था:

- शुद्धि आंदोलन: जो हिंदू अन्य धर्म अपना चुके हों, उन्हें वापस लाना।
- हिंदी-प्रचार: हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन।
- स्त्री-शिक्षा: महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों का समर्थन।
- जाति-विरोध: जन्म-आधारित जाति-व्यवस्था का विरोध।
- राष्ट्रीय जागरण: 'स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम' — यह उनका प्रसिद्ध कथन था।

1.4 अपनी प्रगति जाँचें — 1 (Check Your Progress — 1)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

☐ राजा राममोहन राय ने _____ समाज की स्थापना _____ ई. में की।

☐ स्वामी विवेकानंद ने _____ में शिकागो के विश्व धर्म संसद में भाषण दिया।

☐ 'Poverty and Un-British Rule in India' पुस्तक _____ ने लिखी।

☐ आर्य समाज की स्थापना _____ ने _____ ई. में की।

(ब) सही (✓) या गलत (✗) बताइए:

☐ राजा राममोहन राय को 'आधुनिक भारत का जनक' कहा जाता है। ( )

☐ इल्बर्ट बिल (1883) से भारतीयों को लाभ हुआ। ( )

□ मैकाले की शिक्षा-नीति (1835) ने भारत में हिंदी माध्यम शिक्षा को बढ़ावा दिया। ( )

□ 'केसरी' समाचार-पत्र के संस्थापक बाल गंगाधर तिलक थे। ( )

1.5 1857 का महाविद्रोह: राष्ट्रीय चेतना की प्रथम अग्नि

1.5.1 1857 के विद्रोह का स्वरूप और महत्त्व

10 मई 1857 को मेरठ में सिपाहियों ने विद्रोह किया जो शीघ्र ही दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी और आरा तक फैल गया। इस घटना को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा गया है:

दृष्टिकोण	विचारक / मत
सैनिक विद्रोह	सर जॉन लॉरेंस, सील
राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम	वीर सावरकर
जन-विद्रोह	S.B. Chaudhuri
सामंती प्रतिक्रिया	R.C. Majumdar
सभ्यताओं का संघर्ष	T.R. Holmes

1857 के विद्रोह के स्वरूप पर इतिहासकारों में मतभेद है। जहाँ ब्रिटिश इतिहासकारों ने इसे केवल सैनिक विद्रोह कहा, वहीं सावरकर ने इसे 'प्रथम स्वातंत्र्य समर' कहा। आधुनिक इतिहासकार इसे सेना के विद्रोह के रूप में शुरू होकर किसानों, कारीगरों, सामंतों और अन्य वर्गों की भागीदारी वाला व्यापक जन-विद्रोह मानते हैं, यद्यपि यह पूरे देश में समान रूप से नहीं फैला। इसका महत्त्व इसलिए अधिक है कि इसने भारतीय और ब्रिटिश दोनों पक्षों को शासन की नीतियों पर पुनर्विचार के लिए बाध्य किया।

1.5.2 1857 के विद्रोह के कारण

1857 के विद्रोह के अनेक कारण थे जो लंबे समय से संचित हो रहे थे:

1857 का विद्रोह किसी एक कारण से नहीं, बल्कि दशकों से संचित राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक और सामाजिक-धार्मिक असंतोष का परिणाम था। चर्बी वाले कारतूसों की घटना केवल तात्कालिक कारण बनी, जिसने इस असंतोष को विस्फोट का रूप दे दिया। कारणों को नीचे वर्गीकृत किया गया है।

(अ) सैनिक कारण

- चर्बी-युक्त कारतूस (Greased Cartridges): एनफील्ड राइफल के नए कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगाने की अफवाह।
- भारतीय सैनिकों के साथ भेदभाव: वेतन में असमानता; पदोन्नति में भेदभाव।
- 'गनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट' (1856): समुद्र पार जाने की बाध्यता — हिंदुओं के लिए धर्म-भ्रष्ट करने वाला।

1857 के विद्रोह की शुरुआत बंगाल सेना से हुई, जिसमें उच्च जाति के सिपाहियों की संख्या अधिक थी। मंगल पांडे ने बैरकपुर में चर्बी वाले कारतूसों के विरोध में अपने अधिकारी पर हमला किया और उन्हें 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दी गई। 10 मई को मेरठ में सिपाहियों ने बगावत की और दिल्ली पहुँचकर बहादुरशाह जफर को अपना नेता घोषित किया।

(ब) आर्थिक कारण

- किसानों पर अत्यधिक भूमि-कर का बोझ।
- 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' (Doctrine of Lapse): डलहौजी की नीति से राज्यों का ब्रिटिश अधिग्रहण।
- भारतीय व्यापार और उद्योग का विनाश।

ब्रिटिश आर्थिक नीतियों से किसान, कारीगर और जमींदार --- सभी प्रभावित हुए। भू-राजस्व की ऊँची दरें, कठोर वसूली और भूमि-जब्ती से किसान कर्ज में डूबे। अंग्रेजी मशीन-निर्मित माल की प्रतिस्पर्धा से हस्तशिल्प उद्योग नष्ट हुआ और बड़ी संख्या में बुनकर बेरोजगार हुए। इनाम कमीशन द्वारा जागीरों और माफी-भूमि की जाँच और जब्ती से अनेक पुराने ज़मींदार और जागीरदार असंतुष्ट हुए।

(स) राजनीतिक कारण

- डलहौजी की 'व्यपगत नीति': झाँसी, सतारा, नागपुर, अवध का अधिग्रहण।
- अवध का अधिग्रहण (1856): लखनऊ दरबार का उजड़ना; सैनिकों की भावनात्मक चोट।
- पेशवा-पद का अंत: बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब की पेंशन बंद।

अवध का अधिग्रहण (1856) कुशासन के आरोप पर किया गया, जिसने बंगाल सेना के अनेक सिपाहियों को भड़काया क्योंकि उनमें से बहुत अवध के निवासी थे। डलहौजी ने 'व्यपगत सिद्धांत' के तहत सतारा (1848), झाँसी (1853) और नागपुर (1854) जैसे राज्यों को अपने अधीन किया। इसके अतिरिक्त मुगल सम्राट की उपाधि समाप्त करने की चर्चा से भी असंतोष फैला।

(द) सामाजिक-धार्मिक कारण

- ईसाई धर्म-प्रचारकों की गतिविधियाँ और धर्म-परिवर्तन का भय।
- 1850 का 'धार्मिक अशक्तता अधिनियम': धर्म-परिवर्तन से संपत्ति का अधिकार न छिनना।
- अंग्रेजी शिक्षा और पाश्चात्य प्रभाव से परंपरागत संस्कृति को खतरा।

ब्रिटिश सुधार-कानूनों --- जैसे सती-प्रथा निषेध, विधवा-पुनर्विवाह अधिनियम --- को रूढ़िवादी समाज ने अपनी परंपराओं में हस्तक्षेप माना। रेल, तार और अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से जाति-व्यवस्था और धार्मिक मान्यताओं पर आघात की आशंका बढ़ी। मिशनरियों की गतिविधियों और जेलों में सामूहिक भोजन जैसे नियमों ने भी धार्मिक भावनाओं को आहत किया।

1.5.3 1857 के प्रमुख केंद्र और नायक

1857 के विद्रोह में अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी:

विद्रोह-केंद्र	प्रमुख नेता	विशेषता
दिल्ली	बहादुर शाह जफर II	मुगल सम्राट — विद्रोह का प्रतीक; बाद में रंगून निर्वासन
कानपुर	नाना साहब, तात्या टोपे	पेशवा-परंपरा; ब्रिटिश पराजय; बाद में पतन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	अवध की रानी; दीर्घकालीन प्रतिरोध
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	'खूब लड़ी मर्दानी'; ग्वालियर में बलिदान (1858)
बिहार (आरा)	कुँवर सिंह	85 वर्षीय वृद्ध योद्धा; जगदीशपुर विजय
मेरठ	सिपाही — मंगल पांडे	10 मई 1857 का विद्रोह; 'पहली चिनगारी'
बरेली	खान बहादुर खान	रोहिलखंड का केंद्र; ब्रिटिश-विरोध

विद्रोह के दौरान भारत के अलग-अलग केंद्रों पर स्थानीय नेताओं ने नेतृत्व सँभाला। बिहार में आरा के जमींदार कुँवर सिंह ने वृद्धावस्था में भी अंग्रेजी सेना का सामना किया। फैजाबाद के मौलवी अहमदुल्ला शाह और बरेली में खान बहादुर खाँ जैसे नेताओं ने भी विद्रोह को नेतृत्व दिया। ब्रिटिश सेना ने दिल्ली पर सितंबर 1857 में पुनः अधिकार किया, तथा लखनऊ (मार्च 1858) और झाँसी (अप्रैल 1858) को भी पुनः जीत लिया।

1.5.4 1857 की असफलता के कारण

अनेक कारणों से 1857 का विद्रोह अंततः विफल रहा:

- केंद्रीय नेतृत्व का अभाव: कोई एक सर्वमान्य नेता नहीं था।
- सीमित भौगोलिक विस्तार: दक्षिण भारत, पंजाब और बंगाल के अधिकांश भाग शांत रहे।
- ब्रिटिश सैन्य-श्रेष्ठता: आधुनिक हथियार, तेज संचार (तार), रेलवे से सुदृढ़ीकरण।
- समन्वय का अभाव: विभिन्न केंद्रों में आपसी संपर्क और सहयोग नहीं था।
- ब्रिटिश भारतीय सैनिकों का सहयोग: सिक्ख, गोरखा, मद्रास सैनिक ब्रिटिश के साथ रहे।

इसके अतिरिक्त अधिकांश शिक्षित भारतीयों और अनेक रियासतों के शासकों ने विद्रोह का साथ नहीं दिया; कुछ देशी रियासतों ने तो अंग्रेजों की सहायता की, जिसे लॉर्ड कैनिंग ने 'तूफान में बाँध' (breakwaters) कहा। विद्रोहियों के पास स्पष्ट योजना, एकीकृत विचारधारा और भविष्य के शासन का कोई सुस्पष्ट आदर्श नहीं था; वे मुख्यतः पुरानी व्यवस्था की पुनर्स्थापना चाहते थे।

1.5.5 1857 का राष्ट्रीय चेतना पर प्रभाव

यद्यपि 1857 का विद्रोह सैनिक दृष्टि से विफल रहा, परंतु इसका भारतीय राष्ट्रीय चेतना पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा:

- पहली बार विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के लोगों ने एक साथ ब्रिटिश शासन का विरोध किया।
- 'शहादत' की परंपरा: रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, कुँवर सिंह — ये नाम भारतीय राष्ट्रवाद के प्रेरणास्रोत बने।
- ब्रिटिश सरकार ने नीति-परिवर्तन किया: 1858 में ईस्ट इंडिया कंपनी का अंत; ब्रिटिश ताज का सीधा शासन।
- भारतीयों में यह विश्वास जागा कि एकजुट होकर लड़ा जा सकता है — यह राष्ट्रीय चेतना की आधारशिला थी।

1858 के 'भारत सरकार अधिनियम' तथा महारानी विक्टोरिया की घोषणा (1 नवंबर 1858) द्वारा ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को धार्मिक सहिष्णुता और रियासतों के अधिकारों का सम्मान करने का आश्वासन दिया। साथ ही सेना का पुनर्गठन हुआ --- यूरोपीय सैनिकों का अनुपात बढ़ाया गया और तोपखाना यूरोपीय हाथों में रखा गया। इस प्रकार 1857 ने ब्रिटिश शासन की नीतियों को बदला, पर भारतीयों में राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना को भी जगाया।

1.6 अपनी प्रगति जाँचें — 2 (Check Your Progress — 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए (लगभग 50 शब्दों में):

□ 1857 के विद्रोह के सैनिक कारण क्या थे?

□ वीर सावरकर ने 1857 को किस नाम से संबोधित किया और क्यों?

□ रानी लक्ष्मीबाई का 1857 में क्या योगदान था?

□ 1857 की असफलता के कोई दो प्रमुख कारण बताइए।

1.7 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और प्रारम्भिक राष्ट्रवाद

1.7.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885)

28 दिसंबर 1885 को बंबई में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' (Indian National Congress) की स्थापना हुई। यह भारतीय राजनीतिक इतिहास का एक ऐतिहासिक क्षण था।

स्थापना से संबंधित प्रमुख तथ्य:

तथ्य	विवरण
स्थापना तिथि	28 दिसंबर 1885
स्थान	बंबई (गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय)
संस्थापक	ए.ओ. ह्यूम (Allan Octavian Hume) — सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी
प्रथम अध्यक्ष	व्योमेशचंद्र बनर्जी (Womesh Chandra Bonerjee)
प्रतिनिधि	72 प्रतिनिधि; मुख्यतः वकील, पत्रकार, शिक्षक
उद्देश्य	अखिल भारतीय राजनीतिक मंच; ब्रिटिश सरकार से संवाद
नाम का सुझाव	दादाभाई नौरोजी ने 'Indian National Union' से 'Congress' नाम सुझाया

स्थापना के संदर्भ में ए.ओ. ह्यूम ने लिखा था:

> यदि 50 लोग भी मेरे साथ मिलकर काम करें,
> तो मैं इस देश में एक ऐसा आंदोलन खड़ा कर सकता हूँ

> जो भारत को उसकी नियति की ओर ले जाएगा।
>
> — ए.ओ. ह्यूम, 1883

1.7.2 कांग्रेस की स्थापना के पीछे के उद्देश्य — विभिन्न मत

कांग्रेस की स्थापना के वास्तविक उद्देश्यों के बारे में विद्वानों में मतभेद है:

मत	प्रमुख विचारक	व्याख्या
'Safety Valve' सिद्धांत	लाल लाजपत राय	ह्यूम ने 1857 जैसे विद्रोह को रोकने के लिए INC बनाई
राष्ट्रवादी आंदोलन	प्रारम्भिक नेता	भारतीयों की राजनीतिक माँगों का मंच
ब्रिटिश षड्यंत्र	बाल गंगाधर तिलक	'Safety Valve'; भारतीयों को नियंत्रित करने का उपकरण
वास्तविक राष्ट्रवाद	बिपिन पाल, लाला लाजपत राय	प्रारम्भिक कांग्रेस वास्तव में राष्ट्रहित में थी

कांग्रेस की स्थापना के उद्देश्यों के बारे में 'सेफ्टी वॉल्व' सिद्धांत को आधुनिक इतिहासकारों ने सीमित रूप में ही स्वीकार किया है। बिपन चंद्र जैसे इतिहासकार मानते हैं कि कांग्रेस के संस्थापक नेता दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी और फिरोजशाह मेहता जैसे राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने ह्यूम के सहयोग को रणनीतिक रूप से स्वीकार किया ताकि उन्हें ब्रिटिश दमन का सामना न करना पड़े। इस प्रकार कांग्रेस एक वास्तविक राष्ट्रवादी मंच थी, भले ही उसके आरंभिक तरीके सुधारवादी थे।

1.7.3 प्रारम्भिक कांग्रेस: उदारवादी चरण (1885-1905)

कांग्रेस के प्रारम्भिक 20 वर्ष (1885-1905) 'उदारवादी चरण' (Moderate Phase) कहलाते हैं। इस चरण में नेतृत्व करने वाले प्रमुख नेता 'उदारवादी' (Moderates) कहलाए:

उदारवादियों के प्रमुख नेता:

नेता	क्षेत्र / पद	प्रमुख योगदान
दादाभाई नौरोजी (1825-	बंबई; तीन बार	'ग्रैंड ओल्ड मैन'; Drain Theory; ब्रिटिश संसद में पहले

1917)	अध्यक्ष	भारतीय सांसद
सुरेंद्रनाथ बनर्जी (1848-1925)	बंगाल	'राष्ट्र-निर्माता'; Indian Association (1876); ICS का पहला भारतीय
गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915)	महाराष्ट्र	'उदारवाद का शिरोमणि'; Servants of India Society; गाँधी के गुरु
फ़िरोज़शाह मेहता (1845-1915)	बंबई	'बॉम्बे का असंताज'; Bombay High Court; तीन बार अध्यक्ष
मदन मोहन मालवीय (1861-1946)	इलाहाबाद	BHU संस्थापक; हिंदी-समर्थक; अध्यक्ष 4 बार
फज़ल-उल-हक़	बंगाल	मुस्लिम सहभागिता; बाद में मुस्लिम लीग से अलगाव

1.7.4 उदारवादियों की नीतियाँ और माँगें

उदारवादी नेताओं की राजनीतिक कार्य-प्रणाली 'constitutional agitation' पर आधारित थी। वे ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास रखते थे:

उदारवादियों की प्रमुख माँगें:

- प्रतिनिधि सभाओं में भारतीयों की अधिक भागीदारी।
- भारतीय नागरिक सेवा (ICS) परीक्षा भारत में आयोजित करना।
- सैन्य व्यय में कमी और किसानों पर कर-बोझ घटाना।
- न्यायपालिका और कार्यपालिका को अलग करना।
- अकाल-राहत के लिए अधिक धन।
- प्रेस की स्वतंत्रता।

उदारवादियों की कार्य-प्रणाली:

- ब्रिटिश संसद में प्रार्थना-पत्र और याचिकाएँ भेजना।

- भाषणों और समाचार-पत्रों के माध्यम से जनमत तैयार करना।
- सहयोगी अंग्रेजों (John Bright, Charles Bradlaugh) का समर्थन लेना।
- वार्षिक अधिवेशन में प्रस्ताव पारित करना।

1.7.5 दादाभाई नौरोजी: 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया'

दादाभाई नौरोजी (1825-1917) भारतीय राष्ट्रवाद के पितामह थे। उन्हें 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' कहा जाता है:

योगदान	विवरण
Drain Theory	ब्रिटेन द्वारा भारत के आर्थिक शोषण का वैज्ञानिक विश्लेषण
ब्रिटिश संसद में	1892 में ब्रिटिश संसद में निर्वाचित प्रथम भारतीय सांसद (Finsbury, London)
East India Association (1866)	लंदन में भारतीयों के हित-संरक्षण के लिए
तीन बार INC अध्यक्ष	1886, 1893, 1906 — 1906 में 'स्वराज' शब्द का प्रयोग
Poverty and Un-British Rule	1901 में ब्रिटिश शोषण का दस्तावेजीकरण

> भारत गरीब है — इसलिए नहीं कि भारतीय आलसी हैं,
> बल्कि इसलिए कि उनकी संपदा का निरंतर निष्कासन हो रहा है।
> — दादाभाई नौरोजी

1.7.6 गोपाल कृष्ण गोखले: उदारवाद का शिखर

गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915) उदारवादी राष्ट्रवाद के सर्वाधिक प्रभावशाली प्रतिनिधि थे। महात्मा गाँधी उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे:

- Servants of India Society (1905): देश-सेवा के लिए स्वयंसेवी संगठन।
- भारत परिषद् (Imperial Legislative Council) में: किसानों और मजदूरों के हित।

- प्राथमिक शिक्षा: सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा का प्रस्ताव।
- बजट पर भाषण: प्रतिवर्ष 'बजट भाषण' से ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की आलोचना।

> संवैधानिक साधनों से परिवर्तन संभव है।
> मेरा विश्वास है कि अंग्रेज न्यायप्रिय हैं —
> हमें उन्हें हमारी पीड़ा दिखानी है।
> — गोपाल कृष्ण गोखले

गोखले ने 1911 में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य करने का विधेयक प्रस्तुत किया, जो 1912 में अस्वीकृत हो गया। वे 1905 में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन के अध्यक्ष थे और 'भारत सेवक समाज' के माध्यम से ऐसे कार्यकर्ता तैयार करना चाहते थे जो निःस्वार्थ भाव से देश-सेवा करें। गाँधी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु माना और 1915 में भारत लौटने पर उनकी सलाह से एक वर्ष तक देश का भ्रमण किया।

1.8 अपनी प्रगति जाँचें — 3 (Check Your Progress — 3)

सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ (नेता)	स्तम्भ-ब (उपाधि/विशेषता)
दादाभाई नौरोजी	'उदारवाद का शिरोमणि'; गाँधी के गुरु
गोपाल कृष्ण गोखले	INC के संस्थापक; सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी
ए.ओ. ह्यूम	'ग्रैंड ओल्ड मैन'; Drain Theory; ब्रिटिश सांसद
सुरेंद्रनाथ बनर्जी	'राष्ट्र-निर्माता'; Indian Association (1876)
व्योमेशचंद्र बनर्जी	INC के प्रथम अध्यक्ष (1885)

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

☐ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब, कहाँ और किसके द्वारा हुई?

☐ 'Safety Valve' सिद्धांत क्या है?

□ उदारवादियों की प्रमुख कार्य-प्रणाली क्या थी?

1.9 प्रारम्भिक राष्ट्रवाद की सीमाएँ और उपलब्धियाँ

1.9.1 उदारवादी राष्ट्रवाद की सीमाएँ

उदारवादियों की आलोचना की गई है क्योंकि उनकी कार्य-प्रणाली और दृष्टिकोण में कुछ सीमाएँ थीं:

- सीमित जन-आधार: उदारवादी मुख्यतः उच्च-मध्यम-वर्गीय शिक्षित भारतीयों के प्रतिनिधि थे; किसान, मजदूर और महिलाएँ इनसे जुड़ी नहीं थीं।
- ब्रिटिश न्याय में अत्यधिक विश्वास: वे यह मानते थे कि ब्रिटिश सरकार को सही तर्क से समझाया जा सकता है।
- याचिका-राजनीति: प्रार्थना-पत्रों और याचिकाओं पर अत्यधिक निर्भरता; जन-आंदोलन का अभाव।
- स्वराज की माँग नहीं: 1906 से पहले 'पूर्ण स्वतंत्रता' की माँग नहीं; केवल सुधारों की इच्छा।
- सांप्रदायिक प्रश्न उपेक्षित: हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रश्न पर ध्यान कम।

1.9.2 प्रारम्भिक राष्ट्रवाद की उपलब्धियाँ

अपनी सीमाओं के बावजूद, प्रारम्भिक राष्ट्रवाद ने कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कीं:

- अखिल भारतीय मंच: पहली बार एक ऐसा मंच बना जो सभी प्रान्तों के भारतीयों को एक साथ लाया।
- आर्थिक आलोचना: धन-निष्कासन के सिद्धांत ने ब्रिटिश शोषण को उजागर किया।
- राजनीतिक शिक्षा: अधिवेशनों और प्रेस के माध्यम से भारतीयों को राजनीतिक जागरूकता मिली।
- भावी आंदोलन की नींव: उदारवादियों ने जो नींव रखी, उस पर तिलक, गाँधी ने जन-आंदोलन खड़ा किया।
- ICS परीक्षा में सुधार: भारत में भी इंग्लैंड के साथ-साथ परीक्षा का प्रावधान।

1.9.3 उदारवाद से उग्रवाद की ओर: 1905 का मोड़

1905 में बंगाल-विभाजन (Partition of Bengal) ने भारतीय राजनीति का स्वरूप बदल दिया। लॉर्ड कर्ज़न ने प्रशासनिक आधार पर बंगाल को दो भागों में बाँट दिया — पूर्वी बंगाल (मुस्लिम बहुल) और पश्चिमी बंगाल (हिंदू बहुल)। यह स्पष्टतः 'Divide and Rule' की नीति थी:

प्रतिक्रिया का स्वरूप	विवरण

स्वदेशी आंदोलन	ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार; स्वदेशी माल अपनाना
बायकॉट आंदोलन	विदेशी वस्त्रों की होली; 'वंदे मातरम्' का नारा
राष्ट्रीय शिक्षा	ब्रिटिश शिक्षा-संस्थाओं का बहिष्कार; राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थान
जन-आंदोलन	पहली बार जनता का व्यापक सहभाग; उग्रवाद का उदय
सूरत अधिवेशन (1907)	उदारवादी-उग्रवादी विभाजन; INC का विभाजन

1.10 अपनी प्रगति जाँचें — 4 (Check Your Progress — 4)

(अ) रिक्त स्थान भरिए:

□ बंगाल-विभाजन _____ ई. में _____ वायसराय के कार्यकाल में हुआ।

□ Servants of India Society की स्थापना _____ ने _____ ई. में की।

□ 1885 में INC का प्रथम अधिवेशन _____ नगर में हुआ था।

□ सूरत अधिवेशन (1907) में INC का _____ और _____ में विभाजन हुआ।

(ब) दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए:

□ उदारवादियों की प्रमुख सीमाएँ क्या थीं? कोई तीन बताइए।

□ बंगाल-विभाजन (1905) ने राष्ट्रवाद को किस प्रकार प्रभावित किया?

1.11 समकालीन प्रासंगिकता

प्रारम्भिक राष्ट्रवाद का अध्ययन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है:

- लोकतांत्रिक चेतना: प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों ने जो संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांत स्थापित किए, वे आज भारतीय संविधान की आत्मा हैं।
- आर्थिक स्वतंत्रता: 'ड्रेन थ्योरी' का आधुनिक रूप 'आत्मनिर्भर भारत' और 'Make in India' में दिखता है।
- 'स्वदेशी' की प्रासंगिकता: 1905 का स्वदेशी आंदोलन आज 'Vocal for Local' नीति का पूर्वगामी है।

- सामाजिक-धार्मिक सुधार: राममोहन राय, विवेकानंद, दयानंद की परंपरा NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुद्धार में दिखती है।
- राष्ट्रीय एकता: 'अनेकता में एकता' का वह पाठ जो प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों ने सिखाया, आज भी प्रासंगिक है।

1.12 सारांश (Summary)

इस अध्याय में 'राष्ट्रीय चेतना का उदय एवं प्रारम्भिक राष्ट्रवाद' का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. राष्ट्रीय चेतना का अर्थ: एक भू-भाग के लोगों में साझी पहचान और बाहरी शासन से मुक्ति की आकांक्षा।
2. ब्रिटिश शासन का प्रभाव: आर्थिक दोहन (Drain Theory), सामाजिक हस्तक्षेप और राजनीतिक एकीकरण — तीनों ने मिलकर राष्ट्रीय चेतना को जगाया।
3. सामाजिक-धार्मिक सुधार: ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन ने भारतीय समाज में आत्म-सम्मान और नई दृष्टि जगाई।
4. प्रेस की भूमिका: केसरी, अमृत बाजार पत्रिका, The Hindu — इन समाचार-पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में अमूल्य योगदान दिया।
5. 1857 का महाविद्रोह: यद्यपि असफल, परंतु यह राष्ट्रीय चेतना की प्रथम व्यापक अभिव्यक्ति थी।
6. INC की स्थापना (1885): 28 दिसंबर 1885 को बंबई में; ए.ओ. ह्यूम द्वारा; व्योमेशचंद्र बनर्जी प्रथम अध्यक्ष।
7. उदारवादी चरण (1885-1905): दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, गोखले — संवैधानिक साधनों से सुधार; Drain Theory।
8. उदारवाद की सीमाएँ: सीमित जन-आधार, ब्रिटिश न्याय में विश्वास, याचिका-राजनीति।
9. बंगाल-विभाजन (1905): यह घटना उदारवाद से उग्रवाद की ओर संक्रमण का कारण बनी।
10. समकालीन प्रासंगिकता: स्वदेशी, लोकतंत्र, सामाजिक सुधार — प्रारम्भिक राष्ट्रवाद की विरासत आज भी जीवंत है।

1.13 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
राष्ट्रीय चेतना	एक भू-भाग के लोगों में साझी पहचान, इतिहास और बाहरी शासन से मुक्ति की सामूहिक भावना

राष्ट्रवाद	वह राजनीतिक विचारधारा जो मानती है कि प्रत्येक राष्ट्र को स्वशासन का अधिकार है
धन-निष्कासन (Drain Theory)	दादाभाई नौरोजी का सिद्धांत: ब्रिटेन प्रतिवर्ष भारत से अकूत धन ले जाता था
उदारवादी (Moderates)	INC के प्रारम्भिक नेता जो संवैधानिक साधनों और ब्रिटिश न्याय में विश्वास रखते थे
उग्रवादी (Extremists)	1905 के बाद तिलक, लाल-बाल-पाल के नेतृत्व में जन-आंदोलन के समर्थक
'Safety Valve' सिद्धांत	यह मत कि INC की स्थापना 1857 जैसे विद्रोह को रोकने के लिए की गई थी
स्वदेशी आंदोलन	1905 में बंगाल-विभाजन के विरोध में ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार
बंगाल-विभाजन (1905)	लॉर्ड कर्ज़न द्वारा बंगाल का विभाजन; 'Divide and Rule' की नीति
महाविद्रोह 1857	10 मई 1857 को मेरठ से शुरू; ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रथम व्यापक विद्रोह
इल्बर्ट बिल विवाद (1883)	भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपियों पर मुकदमे का अधिकार; यूरोपीय विरोध के कारण वापस
'Doctrine of Lapse'	डलहौजी की नीति: बिना पुरुष उत्तराधिकारी के राज्यों को ब्रिटिश अधिग्रहण
INC	Indian National Congress; 1885 में स्थापित भारत का प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक संगठन
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय द्वारा 1828 में स्थापित; एकेश्वरवाद; सामाजिक सुधार
आर्य समाज	स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित; 'वेदों की ओर लौटो'
रामकृष्ण मिशन	स्वामी विवेकानंद द्वारा 1897 में स्थापित; व्यावहारिक वेदांत; जनसेवा

NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; भारतीय इतिहास और ज्ञान को पाठ्यक्रम में केंद्रीय स्थान

1.14 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए)

11. भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय के कारणों की विस्तृत विवेचना कीजिए। पाश्चात्य शिक्षा, प्रेस और ब्रिटिश नीतियों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
12. 1857 के महाविद्रोह के कारणों, प्रमुख घटनाओं और राष्ट्रीय चेतना पर उसके प्रभाव का विस्तृत वर्णन कीजिए।
13. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, उसके उद्देश्यों और उदारवादी चरण (1885-1905) की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।
14. 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का भारतीय राष्ट्रवाद पर क्या प्रभाव पड़ा? उदाहरण सहित समझाइए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए)

15. 'Drain Theory' (धन-निष्कासन का सिद्धांत) क्या है? दादाभाई नौरोजी का योगदान बताइए।
16. 1857 की असफलता के प्रमुख कारण क्या थे?
17. उदारवादी राष्ट्रवाद की प्रमुख सीमाएँ बताइए।
18. स्वामी विवेकानंद का भारतीय राष्ट्रवाद में क्या योगदान था?
19. बंगाल-विभाजन (1905) ने भारतीय राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया?
20. गोपाल कृष्ण गोखले के राष्ट्रीय योगदान का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

21. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किस वर्ष हुई? (अ) 1857 (ब) 1875 (स) 1885 (द) 1905

22. INC के प्रथम अध्यक्ष कौन थे? (अ) दादाभाई नौरोजी (ब) गोखले (स) व्योमेशचंद्र बनर्जी (द) सुरेंद्रनाथ बनर्जी

23. 'Drain Theory' का प्रतिपादन किसने किया? (अ) गोखले (ब) दादाभाई नौरोजी (स) तिलक (द) राममोहन राय

24. 1857 के विद्रोह की 'पहली चिनगारी' किस स्थान पर जली? (अ) दिल्ली (ब) कानपुर (स) मेरठ (द) झाँसी

25. ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की? (अ) दयानंद सरस्वती (ब) विवेकानंद (स) राममोहन राय (द) गोखले

26. बंगाल-विभाजन किस वर्ष हुआ? (अ) 1885 (ब) 1900 (स) 1905 (द) 1907

27. सूरत अधिवेशन (1907) में INC किन दो धड़ों में विभाजित हुई? (अ) राष्ट्रवादी-साम्यवादी (ब) उदारवादी-उग्रवादी (स) हिंदू-मुस्लिम (द) बंगाली-मराठी

1.15 अपनी प्रगति जाँचें — उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1.4 के उत्तर:

(अ) रिक्त स्थान:

28. राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्म' समाज की स्थापना 1828 ई. में की।

29. स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में भाषण दिया।

30. 'Poverty and Un-British Rule in India' पुस्तक दादाभाई नौरोजी ने लिखी।

31. आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 ई. में की।

(ब) सही/गलत:

32. सही (✓) — राजा राममोहन राय को 'आधुनिक भारत का जनक' कहा जाता है।

33. गलत (✗) — इल्बर्ट बिल यूरोपीय दबाव में वापस ले लिया गया; भारतीयों को हानि हुई।

34. गलत (✗) — मैकाले की शिक्षा-नीति (1835) ने अंग्रेजी माध्यम शिक्षा को बढ़ावा दिया, हिंदी को नहीं।

35. सही (✓) — 'केसरी' समाचार-पत्र के संस्थापक बाल गंगाधर तिलक थे।

1.6 के उत्तर:

36. 1857 के सैनिक कारण: एनफील्ड राइफल की चर्बी-युक्त कारतूस की अफवाह; भारतीय सैनिकों के साथ भेदभाव; 'गनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट' (1856) द्वारा समुद्र-पार जाने की बाध्यता।

37. वीर सावरकर ने 1857 को '1857 का स्वातंत्र्य समर' कहा क्योंकि वे इसे प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम मानते थे।

38. रानी लक्ष्मीबाई: 'खूब लड़ी मर्दानी' — झाँसी की रानी ने ब्रिटिश सेना से डटकर मुकाबला किया और 1858 में ग्वालियर में बलिदान दिया।

39. असफलता के दो कारण: (1) केंद्रीय नेतृत्व का अभाव — कोई एक सर्वमान्य नेता नहीं था। (2) सीमित भौगोलिक विस्तार — दक्षिण भारत, पंजाब और बंगाल शांत रहे।

1.8 के उत्तर (सही मिलान):

नेता	सही मिलान
दादाभाई नौरोजी	'ग्रैंड ओल्ड मैन'; Drain Theory; ब्रिटिश सांसद (सही)
गोपाल कृष्ण गोखले	'उदारवाद का शिरोमणि'; गाँधी के गुरु (सही)
ए.ओ. ह्यूम	INC के संस्थापक; सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी (सही)
सुरेंद्रनाथ बनर्जी	'राष्ट्र-निर्माता'; Indian Association (1876) (सही)
व्योमेशचंद्र बनर्जी	INC के प्रथम अध्यक्ष (1885) (सही)

40. INC की स्थापना: 28 दिसंबर 1885 को बंबई में ए.ओ. ह्यूम द्वारा।

41. 'Safety Valve' सिद्धांत: यह मत कि INC 1857 जैसे विद्रोह को सुरक्षित निकास देने के लिए बनाई गई थी।

42. उदारवादियों की कार्य-प्रणाली: संवैधानिक साधन — प्रार्थना-पत्र, याचिकाएँ, भाषण और प्रेस के माध्यम से जनमत-निर्माण।

1.10 के उत्तर:

43. बंगाल-विभाजन 1905 ई. में लॉर्ड कर्ज़न के कार्यकाल में हुआ।

44. Servants of India Society की स्थापना गोपाल कृष्ण गोखले ने 1905 ई. में की।

45. 1885 में INC का प्रथम अधिवेशन 'बंबई' नगर में हुआ था।

46. सूरत अधिवेशन (1907) में INC का 'उदारवादी' और 'उग्रवादी' में विभाजन हुआ।

47. उदारवाद की तीन सीमाएँ: (1) सीमित जन-आधार — केवल शिक्षित मध्यवर्ग, (2) ब्रिटिश न्याय में अत्यधिक विश्वास, (3) याचिका-राजनीति — जन-आंदोलन का अभाव।

48. बंगाल-विभाजन का प्रभाव: स्वदेशी आंदोलन, ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार, उग्रवाद का उदय और 1907 में INC का विभाजन।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (1.14 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(स) 1885
2	(स) व्योमेशचंद्र बनर्जी
3	(ब) दादाभाई नौरोजी
4	(स) मेरठ
5	(स) राममोहन राय
6	(स) 1905
7	(ब) उदारवादी-उग्रवादी

1.16 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)मूल ग्रंथ एवं प्राथमिक स्रोत:

- दादाभाई नौरोजी — Poverty and Un-British Rule in India (1901)

- वीर सावरकर — 1857 का स्वातंत्र्य समर (हिंदी अनुवाद)
- गोपाल कृष्ण गोखले — Indian Finance and Banking (भाषण संग्रह)
- स्वामी विवेकानंद — सम्पूर्ण वाङ्मय (रामकृष्ण मठ प्रकाशन)
- राजा राममोहन राय — The Precepts of Jesus; Brahmanical Magazine

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- बिपिनचंद्र — आधुनिक भारत का इतिहास (Orient Blackswan, हिंदी अनुवाद)
- सुमित सरकार — आधुनिक भारत (1885-1947), राजकमल प्रकाशन
- राम बिलास शर्मा — भारतीय नवजागरण और यूरोप, राजकमल प्रकाशन
- रामशरण शर्मा — भारत का प्राचीन इतिहास (NCERT)
- सत्यकेतु विद्यालंकार — भारत में राष्ट्रीयता का विकास

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Bipan Chandra — Modern India, NCERT / Penguin
- Sumit Sarkar — Modern India 1885-1947, Macmillan
- R.C. Majumdar — History of the Freedom Movement in India (3 vols.)
- A.R. Desai — Social Background of Indian Nationalism, Popular Prakashan
- S.R. Mehrotra — Emergence of the Indian National Congress, Vikas Publishing

ऑनलाइन संसाधन:

- https://ncert.nic.in — NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तकें (कक्षा 11-12)
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in — भारतीय इतिहास पर शोध-प्रबंध
- https://indianculture.gov.in — भारतीय संस्कृति मंत्रालय का पोर्टल
- https://www.indiahistorycongress.org — भारत इतिहास कांग्रेस
- https://www.education.gov.in/nep — NEP 2020 आधिकारिक पोर्टल

॥ उठो, जागो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए ॥

— स्वामी विवेकानंद

वंदे मातरम् — जन गण मन

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24MIC112T	**AUTHOR : DR. SANDEEP BISHNOI**
LESSON NO : 2	**VATTER :** DR. DHARAMBIR

अध्याय – 2

गाँधी युग एवं जन-आंदोलन

Gandhi Era and Mass Movements in India

अनुभाग **विषय-वस्तु**

2.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

2.1 प्रस्तावना

2.2 महात्मा गाँधी: व्यक्तित्व और दर्शन

2.2.1 दक्षिण अफ्रीका से भारत तक — 6 प्रमुख संघर्षों की तालिका

2.2.2 गाँधीवाद — सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज, सर्वोदय, ट्रस्टीशिप

2.2.3 वैचारिक स्रोत — गीता, जैन, ईसाई, टॉल्स्टॉय, थोरो, रस्किन

2.3 Check Your Progress — 1

2.4 प्रारम्भिक सत्याग्रह

2.4.1 चंपारण सत्याग्रह (1917) — तीनकठिया प्रणाली

2.4.2 खेड़ा सत्याग्रह (1918) — किसान-कर विवाद

2.4.3 अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)

2.5 रॉलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग, खिलाफत

अनुभाग **विषय-वस्तु**

2.5.1 रॉलेट एक्ट (1919)

2.5.2 जलियाँवाला बाग नरसंहार — तथ्य-तालिका

2.5.3 खिलाफत आंदोलन (1919-24)

2.6 असहयोग आंदोलन (1920-22)

2.6.1 कार्यक्रम — 6 चरणों की रंगीन तालिका

2.6.2 प्रसार — विद्यार्थी, वकील, महिलाएँ, किसान

2.6.3 चौरी-चौरा और आंदोलन-वापसी

2.7 Check Your Progress — 2

2.8 सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

2.8.1 साइमन कमीशन विरोध, लाहौर अधिवेशन, पूर्ण स्वराज

2.8.2 दांडी मार्च — 7 तथ्यों की तालिका + गाँधी का उद्धरण

2.8.3 आंदोलन का प्रसार — धरासना, पेशावर, चटगाँव

2.8.4 गोलमेज सम्मेलन (3 चरण) + गाँधी-इरविन समझौता + पूना पैक्ट

2.9 Check Your Progress — 3

2.10 भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

2.10.1 पृष्ठभूमि — क्रिप्स मिशन, द्वितीय विश्वयुद्ध

2.10.2 'करो या मरो' — भूमिगत नेतृत्व, समानांतर सरकारें

2.10.3 ऐतिहासिक महत्त्व

2.11 Check Your Progress — 4

अनुभाग **विषय-वस्तु**

2.12 गाँधीवाद की आलोचनाएँ

2.12.1 डॉ. अम्बेडकर — जाति-प्रश्न, पूना पैक्ट विवाद

2.12.2 भगत सिंह — अहिंसा की सीमाएँ, साम्राज्यवाद-विरोध

2.12.3 सुभाष चंद्र बोस — आजाद हिंद फौज, 'जय हिंद'

2.12.4 गाँधीवाद का समग्र मूल्यांकन — तुलनात्मक तालिका

2.13 सारांश (10 बिंदु)

2.14 शब्दावली (17 शब्द)

2.15 Self-Assessment Test (दीर्घ + लघु + 7 वस्तुनिष्ठ)

2.16 Answers to Check Your Progress

2.17 References / Suggested Readings

2.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- महात्मा गाँधी के राजनीतिक दर्शन — सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज और सर्वोदय — की विस्तृत व्याख्या कर सकेंगे।
- दक्षिण अफ्रीका में गाँधी के अनुभव और भारतीय स्वतंत्रता-आंदोलन पर उनके प्रभाव को समझ सकेंगे।
- चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद सत्याग्रह की विशेषताओं और महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे।
- असहयोग आंदोलन (1920-22) के कारणों, कार्यक्रम, प्रसार और परिणामों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) — नमक-सत्याग्रह से गोलमेज सम्मेलन तक — की विवेचना कर सकेंगे।
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के परिप्रेक्ष्य, स्वरूप और ऐतिहासिक महत्त्व को जान सकेंगे।

- गाँधीवाद की मुख्य आलोचनाओं — अम्बेडकर, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस के दृष्टिकोणों — का परीक्षण कर सकेंगे।
- गाँधी युग की उपलब्धियों और भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में जन-आंदोलनों की भूमिका का समग्र मूल्यांकन कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में 1915 से 1947 का काल 'गाँधी युग' (Gandhi Era) के नाम से जाना जाता है। यह वह कालखंड है जब मोहनदास करमचंद गाँधी ने एक नई राजनीतिक शैली — सत्याग्रह — से भारतीय स्वाधीनता-आंदोलन को पूरी तरह बदल दिया। जहाँ उदारवादी नेता प्रार्थना-पत्र और याचिकाओं पर निर्भर थे और उग्रवादी क्रांतिकारी हिंसा का मार्ग अपना रहे थे, वहाँ गाँधी ने एक तीसरा मार्ग दिखाया — अहिंसक जन-प्रतिरोध।

गाँधी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम को कुछ शिक्षित नेताओं के हाथों से निकालकर जनता के हाथों में सौंप दिया। किसान, मजदूर, महिलाएँ, दुकानदार — सभी इस आंदोलन के भागीदार बने। भारत में पहली बार एक वास्तविक जन-आंदोलन खड़ा हुआ।

इस अध्याय में हम गाँधी के दर्शन, उनके प्रमुख आंदोलनों — असहयोग) 1920-22), सविनय अवज्ञा (1930-34) और भारत छोड़ो) 1942) — तथा इन आंदोलनों के भारतीय राजनीति पर प्रभाव का विस्तृत अध्ययन करेंगे। साथ ही हम गाँधीवाद की आलोचनाओं और उनकी सीमाओं का भी परीक्षण करेंगे।

2.2 महात्मा गाँधी: व्यक्तित्व और दर्शन

2.2.1 जीवन-परिचय: दक्षिण अफ्रीका से भारत तक

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर) गुजरात (में हुआ। 1888 में वे कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए और 1893 में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद-नीति के विरुद्ध 21 वर्षों) 1893-1914) के संघर्ष ने उन्हें 'गाँधी' से 'महात्मा' बनाया:

दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख संघर्ष	विवरण
ट्रांसवाल सत्याग्रह (1906)	एशियाई पंजीकरण कानून के विरुद्ध प्रथम सत्याग्रह
नेटाल इंडियन कांग्रेस (1894)	भारतीय अधिकारों की रक्षा के लिए संगठन

भारतीय मजदूर हड़ताल (1913)	खनन-मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष
Hind Swaraj (1909)	रेलगाड़ी में लिखी गाँधी की पहली राजनीतिक कृति
फिनिक्स आश्रम (1904)	सरल जीवन और सामुदायिक जीवन का प्रयोग
टॉल्स्टॉय फार्म (1910)	सत्याग्रहियों के प्रशिक्षण का केंद्र

1915 में गाँधी भारत लौटे। गोपाल कृष्ण गोखले) जिन्हें वे 'राजनीतिक गुरु' मानते थे (के परामर्श पर उन्होंने एक वर्ष तक भारत भ्रमण किया और यहाँ की वास्तविकता को समझा।

2.2.2 गाँधीवाद: मूल अवधारणाएँ

गाँधी का राजनीतिक दर्शन कोई पुस्तकीय सिद्धांत नहीं था — यह उनके जीवन-अनुभव, भारतीय परंपरा और पाश्चात्य विचारों का समन्वय था। उनके दर्शन के मूल तत्त्व:

(अ) सत्याग्रह (Satyagraha)

'सत्याग्रह' — सत्य + आग्रह — 'सत्य पर दृढ़ता' या 'सत्य-शक्ति'। यह गाँधी की सबसे मौलिक खोज थी। सत्याग्रह न केवल एक आंदोलन की तकनीक है, बल्कि एक जीवन-दर्शन है:

- सत्याग्रही अत्याचारी के विरुद्ध लड़ता है, उसकी आत्मा को जगाने की कोशिश करता है।
- कष्ट स्वयं झेलना — 'Suffering is the badge of the human tribe.'
- घृणा नहीं, प्रेम — 'शत्रु के विरुद्ध नहीं, शत्रुता के विरुद्ध।'
- हिंसा का परित्याग — न मन में, न वचन में, न कर्म में।

> सत्याग्रह की शक्ति आत्मा की शक्ति है, शरीर की नहीं।
> यह प्रेम का नियम है — जो घृणा को पिघला देता है।
> — महात्मा गाँधी — Hind Swaraj

(ब) अहिंसा (Non-Violence)

गाँधी के लिए अहिंसा केवल हिंसा का अभाव नहीं — यह सक्रिय प्रेम है। 'जो अहिंसक है, वह किसी से भयभीत नहीं होता और न किसी को भयभीत करता है।'

गाँधी की अहिंसा का आधार भारतीय परंपरा (जैन और बौद्ध अहिंसा, गीता का निष्काम कर्म) तथा टॉल्स्टॉय की प्रेम-नीति थी। उनके अनुसार अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का त्याग नहीं, बल्कि विचार, वाणी और कर्म --- तीनों में किसी को पीड़ा न पहुँचाना है। वे अहिंसा को वीरों का शस्त्र मानते थे, कायरों का नहीं; उनके अनुसार कायरता से हिंसा श्रेष्ठ है, पर अहिंसा सर्वश्रेष्ठ। अहिंसा विरोधी के हृदय-परिवर्तन पर भरोसा करती है और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में भी शत्रु के प्रति द्वेष नहीं रखती।

(स) स्वराज (Self-Rule)

गाँधी के लिए 'स्वराज' केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं थी — यह आत्म-शासन, नैतिक अनुशासन और आध्यात्मिक मुक्ति था। उनका कहना था कि 'असली स्वराज कुछ लोगों के प्राप्त होने से नहीं, बल्कि जब सत्ता का दुरुपयोग होने पर उसका प्रतिरोध होने लगे।'

गाँधी की 1909 की पुस्तक 'हिंद स्वराज' में स्वराज की विस्तृत परिकल्पना मिलती है, जहाँ वे आधुनिक औद्योगिक सभ्यता की आलोचना करते हुए ग्राम-आधारित आत्मनिर्भर समाज की कल्पना करते हैं। उनके लिए स्वराज की शुरुआत व्यक्ति के आत्म-संयम से होती है और फिर वह ग्राम-स्वराज तक पहुँचती है, जिसमें प्रत्येक गाँव अपने आर्थिक और राजनीतिक मामलों में स्वावलंबी हो।

(द) सर्वोदय (Uplift of All)

रस्किन की 'Unto This Last' से प्रेरित। 'सर्वोदय' = सबका उदय। किसी एक वर्ग का नहीं, समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय। यह गाँधी के आर्थिक दर्शन का सार है।

सर्वोदय के अंतर्गत गाँधी ने 'अंतिम व्यक्ति' के हित को विकास की कसौटी माना। उनके 'जंतर' (Talisman) में यह सिद्धांत है कि कोई भी निर्णय लेते समय सबसे गरीब और कमजोर व्यक्ति का चेहरा याद करें और देखें कि उसे उससे लाभ होगा या नहीं। सर्वोदय की भावना आगे चलकर विनोबा भावे के भूदान और सर्वोदय आंदोलन में विकसित हुई।

(इ) ट्रस्टीशिप (Trusteeship)

धनी व्यक्ति समाज का ट्रस्टी) न्यासी (है, मालिक नहीं। अपनी आवश्यकता से अधिक संपत्ति समाज की है।

ट्रस्टीशिप का विचार वर्ग-संघर्ष के स्थान पर पूँजीपतियों के हृदय-परिवर्तन द्वारा आर्थिक समानता लाने का प्रयास था। गाँधी ने कहा कि धनी वर्ग अपनी आवश्यकता से अधिक संपत्ति समाज के कल्याण के लिए न्यासी के रूप में रखे। आलोचकों के अनुसार यह व्यवस्था आदर्शवादी थी और पूँजीवादी ढाँचे को चुनौती नहीं देती थी, जबकि समर्थक इसे हिंसा-रहित आर्थिक न्याय का मार्ग मानते थे।

2.2.3 गाँधी के वैचारिक स्रोत

गाँधी के विचारों पर अनेक विचारकों और परंपराओं का प्रभाव था:

स्रोत	विचारक / ग्रंथ	प्रभाव
भारतीय परंपरा	भगवद्गीता, उपनिषद्	अनासक्त कर्म, आत्म-बल, त्याग
जैन दर्शन	अहिंसा और अपरिग्रह	जीवहिंसा निषेध; न्यूनतम उपभोग
ईसाई प्रभाव	सर्मन ऑन द माउंट (यीशु(	प्रेम, क्षमा, सहनशीलता
टॉल्स्टॉय	The Kingdom of God is Within You	राज्य और हिंसा का विरोध
थोरो	Civil Disobedience	सविनय अवज्ञा का विचार
रस्किन	Unto This Last	सर्वोदय; श्रम का सम्मान

गाँधी पर अनेक विदेशी विचारकों का प्रभाव भी पड़ा --- रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट', टॉल्स्टॉय की 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' और थोरो का सविनय अवज्ञा का विचार। परंतु गाँधी ने इन सब को भारतीय संदर्भ में ढाला और अपने सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे मूल्यों के साथ एक मौलिक दर्शन विकसित किया, जो उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में स्पष्ट दिखाई देता है। बाद में उन्होंने 'ईश्वर ही सत्य है' के स्थान पर 'सत्य ही ईश्वर है' कहना अधिक उचित माना।

2.3 अपनी प्रगति जाँचें — 1 (Check Your Progress — 1)

(अ (रिक्त स्थान भरिए:

☐ महात्मा गाँधी का जन्म _____ में _____ ई .में हुआ।

☐ 'सत्याग्रह' का अर्थ _____ और _____ के संयोग से 'सत्य पर दृढ़ता' है।

☐ गाँधी ने 'सर्वोदय' की प्रेरणा रस्किन की पुस्तक _____ से ली।

☐ गाँधी के राजनीतिक गुरु _____ थे।

(ब (सही (✓) या गलत (✗) बताइए:

☐ गाँधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। ( )

☐ 'Hind Swaraj' गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में रेलगाड़ी में लिखी थी। ( )

□ गाँधी के लिए 'स्वराज' का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता था। ( )

□ 'ट्रस्टीशिप' सिद्धांत में धनी व्यक्ति को समाज का मालिक माना गया। ( )

2.4 भारत में प्रारम्भिक सत्याग्रह: चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद

2.4.1 चंपारण सत्याग्रह (1917): 'नील की खेती से मुक्ति'

चंपारण (बिहार (गाँधी का भारत में प्रथम सत्याग्रह था। यहाँ के किसान यूरोपीय नील-बागान मालिकों द्वारा 'तीनकठिया प्रणाली' के तहत अपनी जमीन के 3/20 भाग पर नील की खेती करने के लिए बाध्य थे। राजकुमार शुक्ल के बुलावे पर गाँधी 1917 में चंपारण पहुँचे:

चंपारण सत्याग्रह के प्रमुख पक्ष	विवरण
समस्या	तीनकठिया प्रणाली; नील-बागान मालिकों का शोषण; किसानों की दुर्दशा
गाँधी का तरीका	तथ्य-संग्रह (fact-finding); ब्रिटिश नियमों के भीतर रहकर संघर्ष
सरकार की प्रतिक्रिया	गाँधी को जिले से बाहर जाने का आदेश; गाँधी ने मानने से इनकार
परिणाम	चंपारण कृषि अधिनियम (1917); तीनकठिया प्रणाली समाप्त
महत्त्व	भारत में गाँधी का प्रथम सफल सत्याग्रह; किसानों के साथ पहचान
सहयोगी	राजेंद्र प्रसाद, जे.बी .कृपलानी, मजहरुल हक़

> चंपारण में मैंने पहली बार महसूस किया कि
> भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है।
> — महात्मा गाँधी

2.4.2 खेड़ा सत्याग्रह (1918): किसानों की कर-माफी

1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में फसल बर्बाद होने पर भी सरकार ने भू-राजस्व माफ करने से इनकार कर दिया। गाँधी ने किसानों के समर्थन में सत्याग्रह किया:

- मुद्दा: खराब फसल के बावजूद पूरे भू-राजस्व की माँग।

- गाँधी का तर्क: राजस्व नियमों के अनुसार, 25% से कम उपज होने पर माफी का प्रावधान।
- सरदार वल्लभभाई पटेल का उदय: खेड़ा सत्याग्रह में पटेल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- परिणाम: सरकार ने समझौता किया; सम्पन्न किसानों से कर लेने और निर्धनों को छोड़ने का निर्णय।

खेड़ा में किसानों ने सरकार को लगान न देने की प्रतिज्ञा की। सरकार ने जब्ती और कुर्की के आदेश दिए, परंतु गाँधी और पटेल के नेतृत्व में किसान डटे रहे। यह पहला अवसर था जब गाँधी ने गुजरात के ग्रामीण क्षेत्रों में सीधे किसान-आंदोलन का नेतृत्व किया, और यहीं से पटेल, महादेव देसाई और इंदुलाल याज्ञिक जैसे सहयोगी उनके साथ जुड़े।

2.4.3 अहमदाबाद मिल मजदूर हड़ताल (1918)

1918 में ही अहमदाबाद के मिल-मजदूरों ने 'प्लेग बोनस' की माँग को लेकर हड़ताल की। गाँधी ने मजदूरों के समर्थन में 'आमरण अनशन' (Fast unto Death) का प्रयोग पहली बार किया:

- मजदूरों की माँग: प्लेग-काल में दिए जाने वाले विशेष भत्ते को जारी रखना।
- गाँधी का अनशन: मिल-मालिक अनसुया साराभाई के भाई थे; गाँधी ने मजदूरों के लिए अनशन किया।
- परिणाम: 35% वेतन-वृद्धि मिली। भारत में श्रमिक-आंदोलन में सत्याग्रह का पहला प्रयोग।

अहमदाबाद में मजदूरों और मिल-मालिकों के बीच विवाद में गाँधी ने मध्यस्थता की और मिल-मालिक अंबालाल साराभाई से मित्रता होने के बावजूद मजदूरों का पक्ष लिया। जब हड़ताल कमजोर पड़ने लगी तो मजदूरों को अपने संकल्प पर दृढ़ रखने के लिए गाँधी ने अनशन किया (यह एक निश्चित उद्देश्य वाला उपवास था)। अंततः मालिकों ने मध्यस्थता स्वीकार की और मजदूरों को 35% वेतन-वृद्धि मिली। आगे चलकर अहमदाबाद में 'मजूर महाजन संघ' (1920) की स्थापना हुई।

2.5 रॉलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग और खिलाफत

2.5.1 रॉलेट एक्ट (1919) और राष्ट्रीय विरोध

1919 में ब्रिटिश सरकार ने 'रॉलेट एक्ट' पारित किया। इस काले कानून के अनुसार बिना मुकदमे के किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जा सकता था। पूरे देश में इसका तीव्र विरोध हुआ। गाँधी ने इसे 'Satanic Law' कहा और 6 अप्रैल 1919 को राष्ट्रीय हड़ताल) हरताल (का आह्वान किया।

रॉलेट एक्ट विरोध	विवरण
काले कानून की विशेषताएँ	बिना मुकदमे गिरफ्तारी; बिना जूरी के सुनवाई; क्रांतिकारी-दमन

गाँधी की प्रतिक्रिया	'Satanic Law'; 6 अप्रैल को राष्ट्रीय हरताल; सत्याग्रह-सभा
दिल्ली में विरोध	गाँधी को गिरफ्तार करने का प्रयास; पलवल में रोका गया
पंजाब में विरोध	तीव्र आंदोलन; अंग्रेजों की सख्त प्रतिक्रिया

रॉलेट एक्ट सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिशों पर बना, जिसने बिना मुकदमे के गिरफ्तारी, कारावास और विशेष अदालतों की व्यवस्था की। इसके विरोध में गाँधी ने 'सत्याग्रह सभा' की स्थापना की। इस कानून के विरुद्ध मोहम्मद अली जिन्ना ने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल से इस्तीफा दे दिया।

2.5.2 जलियाँवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल 1919)

13 अप्रैल 1919 — बैसाखी का दिन। अमृतसर के जलियाँवाला बाग में हजारों लोग रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सभा में एकत्र थे। जनरल डायर ने बिना किसी चेतावनी के निहत्थी भीड़ पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया:

जलियाँवाला बाग — मुख्य तथ्य	विवरण
तिथि	13 अप्रैल 1919 (बैसाखी पर्व(
स्थान	जलियाँवाला बाग, अमृतसर (पंजाब(
जनरल डायर का आदेश	10 मिनट तक निरंतर गोलीबारी; 1650 राउंड गोलियाँ
ब्रिटिश आँकड़े	379 मृत; 1200 घायल
भारतीय आँकड़े	1000 से अधिक मृत; हजारों घायल
परिणाम	मार्शल लॉ; पंजाब में दमन; रवींद्रनाथ ने 'नाइटहुड' वापस किया
गाँधी की प्रतिक्रिया	'यह बर्बरता है'; असहयोग-आंदोलन की नींव

> जलियाँवाला बाग की घटना के बाद मुझे यह स्पष्ट हो गया कि
> ब्रिटिश सरकार से सहयोग करना पाप है।
> — महात्मा गाँधी

जलियाँवाला बाग की घटना से पहले पंजाब में डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी का विरोध हो रहा था। जनरल डायर ने बिना चेतावनी भीड़ पर गोलियाँ चलवाईं; जिसमें सरकारी आँकड़ों के अनुसार लगभग 379 लोग मारे गए (भारतीय अनुमान इससे कहीं अधिक हैं)। रवींद्रनाथ टैगोर ने विरोधस्वरूप अपनी 'नाइटहुड' की उपाधि लौटा दी। सरकार ने घटना की जाँच के लिए हंटर समिति (1919) बनाई। 1940 में ऊधम सिंह ने लंदन में पंजाब के पूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'डायर की हत्या की।

2.5.3 खिलाफत आंदोलन (1919-1924) और हिंदू-मुस्लिम एकता

प्रथम विश्वयुद्ध) 1914-18) में तुर्की की पराजय के बाद ब्रिटेन ने 'ऑटोमन खलीफा' (मुसलमानों के धार्मिक प्रमुख (के पद को समाप्त करने का प्रयास किया। भारतीय मुसलमान इसे अपने धर्म पर आघात मानते थे:

खिलाफत आंदोलन	विवरण
नेतृत्व	मौलाना मुहम्मद अली और शौकत अली) 'अली बंधु')
माँग	तुर्की के खलीफा की पुनर्स्थापना; ऑटोमन साम्राज्य की सुरक्षा
गाँधी का समर्थन	हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए खिलाफत का समर्थन — राजनीतिक निर्णय
असहयोग से जोड़ा	खिलाफत और असहयोग आंदोलन एक साथ चलाए गए
परिणाम	1924 में तुर्की ने स्वयं खिलाफत समाप्त की; आंदोलन स्वतः समाप्त
आलोचना	जिन्ना ने धार्मिक मुद्दे पर राजनीति को अनुचित बताया

खिलाफत आंदोलन ने पहली बार हिंदू-मुस्लिम संयुक्त मोर्चा बनाने का अवसर दिया। गाँधी ने इसे असहयोग आंदोलन से जोड़ा, जिसे कुछ आलोचकों ने धर्म-आधारित मुद्दे को राजनीति में लाने के रूप में देखा, जबकि समर्थकों के अनुसार यह व्यापक एकता का सार्थक प्रयास था। 1924 में तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा द्वारा खलीफा-पद समाप्त किए जाने पर आंदोलन का आधार समाप्त हो गया।

2.6 असहयोग आंदोलन (1920-1922)

2.6.1 असहयोग आंदोलन का आरंभ और कार्यक्रम

सितंबर 1920 में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में और दिसंबर 1920 में नागपुर अधिवेशन में INC ने 'असहयोग आंदोलन' का प्रस्ताव पारित किया। यह भारतीय राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ था — पहली बार एक राष्ट्रीय जन-आंदोलन का आह्वान किया गया:

असहयोग आंदोलन का कार्यक्रम:

चरण	कार्यक्रम	उद्देश्य
प्रथम चरण) सरकारी संस्थाओं का त्याग(	उपाधियाँ वापस करना	ब्रिटिश सम्मान का अस्वीकार
द्वितीय चरण) शिक्षा बहिष्कार(	सरकारी स्कूल-कॉलेज छोड़ना	वैकल्पिक राष्ट्रीय शिक्षा
तृतीय चरण) कानूनी बहिष्कार(	अदालतों का बहिष्कार	वैकल्पिक पंचायती न्याय
चतुर्थ चरण) विदेशी वस्तु बहिष्कार(	विदेशी कपड़े जलाना	स्वदेशी को प्रोत्साहन
पंचम चरण) चुनाव बहिष्कार(	परिषदों के चुनाव का बहिष्कार	ब्रिटिश राजनीति की अस्वीकृति
षष्ठ चरण) स्वदेशी(	खादी का उपयोग; चरखा	आत्मनिर्भरता; ग्रामीण उद्योग

2.6.2 असहयोग आंदोलन का प्रसार

असहयोग आंदोलन ने भारत के हर कोने को प्रभावित किया। यह पहली बार था जब स्वतंत्रता-संग्राम एक वास्तविक जन-आंदोलन बना:

- विद्यार्थियों का बहिष्कार: हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल-कॉलेज छोड़े। काशी विद्यापीठ, जामिया मिलिया (1920) जैसे राष्ट्रीय संस्थान खुले।
- वकीलों का बहिष्कार: चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, विट्ठलभाई पटेल — बड़े वकीलों ने अदालतें छोड़ीं।
- उपाधियाँ वापसी: रवींद्रनाथ टैगोर ने पहले ही 'नाइटहुड' वापस कर दी थी।
- खिलाफत का सहयोग: मुस्लिम समुदाय की व्यापक भागीदारी — हिंदू-मुस्लिम एकता का सर्वोत्तम काल।

- किसानों की भागीदारी: उत्तर प्रदेश में अवध किसान आंदोलन; बाबा रामचंद्र का नेतृत्व।
- महिलाओं की भागीदारी: पहली बार बड़ी संख्या में महिलाएँ — सरोजिनी नायडू प्रमुख।

आंदोलन के रचनात्मक कार्यक्रम में चरखा और खादी का प्रचार, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, अस्पृश्यता-निवारण और पंचायतों द्वारा न्याय जैसे कार्य सम्मिलित थे। 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर देशव्यापी बहिष्कार हुआ। मालाबार में मोपला विद्रोह (1921) जैसी घटनाओं ने आंदोलन के सांप्रदायिक रंग लेने की चिंता भी उत्पन्न की।

2.6.3 चौरी-चौरा कांड और आंदोलन की वापसी (1922)

5 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के चौरी-चौरा में उत्तेजित भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी जिसमें 22 पुलिस-कर्मचारी मारे गए। यह घटना असहयोग आंदोलन की समाप्ति का कारण बनी:

चौरी-चौरा कांड	विवरण
घटना	5 फरवरी 1922; पुलिस थाने पर भीड़ का हमला; 22 पुलिसकर्मियों की मृत्यु
गाँधी का निर्णय	आंदोलन वापस लेना — 'जनता अहिंसा के लिए तैयार नहीं'
आलोचना	सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू — आंदोलन वापसी से असहमत
गाँधी का तर्क	'जो आंदोलन एक घटना से भटक जाए, वह आंदोलन कमजोर है'
परिणाम	गाँधी की गिरफ्तारी (1922); 6 वर्ष की सजा; 1924 में रिहाई

> चौरी-चौरा की घटना ने मुझे हिला कर रख दिया।
> जब जनता हिंसा पर उतर आए, तो आंदोलन का उद्देश्य पराजित हो जाता है।
> मैं इस आंदोलन को वापस लेता हूँ।
> — महात्मा गाँधी, फरवरी 1922

2.7 अपनी प्रगति जाँचें — 2 (Check Your Progress — 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए) लगभग 50 शब्दों में:(

□ चंपारण सत्याग्रह) 1917) में 'तीनकठिया प्रणाली' क्या थी?

□ जलियाँवाला बाग नरसंहार कब और क्यों हुआ?

□ खिलाफत आंदोलन क्या था और गाँधी ने इसका समर्थन क्यों किया?

□ गाँधी ने असहयोग आंदोलन क्यों वापस लिया?

2.8 सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934)

2.8.1 आंदोलन की पृष्ठभूमि: साइमन कमीशन और पूर्ण स्वराज

1927 में ब्रिटिश सरकार ने 'साइमन कमीशन' गठित किया — इसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं था। इसका पूरे भारत में भारी विरोध हुआ। 1929 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में INC ने 'पूर्ण स्वराज' (Complete Independence) की माँग की और 26 जनवरी 1930 को 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया गया:

पृष्ठभूमि की प्रमुख घटनाएँ	वर्ष
साइमन कमीशन का गठन (सर्वदलीय विरोध(	1927
लाला लाजपत राय पर लाठीचार्ज; बाद में मृत्यु	1928
नेहरू रिपोर्ट — डोमिनियन स्टेटस की माँग	1928
लाहौर अधिवेशन— 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव) जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष(	दिसम्बर 1929
26 जनवरी 1930 — प्रथम 'स्वतंत्रता दिवस' (Independence Day)	1930

2.8.2 नमक सत्याग्रह (दांडी मार्च) — 12 मार्च 1930

गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के लिए 'नमक-कर' को मुद्दा बनाया। ब्रिटिश सरकार का नमक पर एकाधिकार था और इस पर भारी कर था जो गरीब से गरीब व्यक्ति को भी देना पड़ता था। 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से 78 साथियों के साथ गाँधी ने दांडी) समुद्र-तट (की ओर पदयात्रा शुरू की:

दांडी मार्च— मुख्य तथ्य	विवरण
प्रारंभ-स्थान	साबरमती आश्रम, अहमदाबाद

समापन-स्थान	दांडी) समुद्री तट(, गुजरात
दूरी और अवधि	241 मील; 24 दिन (12 मार्च — 6 अप्रैल 1930)
प्रारंभिक दल	78 साथी) चुने हुए सत्याग्रही(
मार्ग का प्रभाव	हजारों लोग जुड़ते गए; गाँव-गाँव में उत्साह
6 अप्रैल 1930	गाँधी ने समुद्री जल से नमक बनाया — कानून तोड़ा
वैश्विक प्रभाव	विश्व प्रेस में व्यापक कवरेज; 'Time' पत्रिका ने गाँधी को 'Man of the Year'

> जब मैं नमक बनाने के लिए समुद्र की ओर चला,
> तो मैं जानता था कि यह केवल नमक नहीं—
> यह ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पर प्रहार है।
> — महात्मा गाँधी, दांडी 1930

2.8.3 सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रसार

नमक सत्याग्रह के बाद पूरे भारत में सविनय अवज्ञा आंदोलन फैल गया। इसमें पहली बार महिलाओं की व्यापक भागीदारी हुई:

- नमक-कानून का उल्लंघन: पूरे देश में समुद्र-तट और नदी-तट पर नमक बनाया गया।
- जंगल-कानून उल्लंघन: मध्य प्रदेश में किसानों ने जंगलों पर ब्रिटिश नियंत्रण का विरोध किया।
- लगान-न-दो आंदोलन: गुजरात में सरदार पटेल के नेतृत्व में।
- धरासना नमक-काण्ड: महिला सत्याग्रहियों (सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में) पर लाठीचार्ज — विश्व-प्रसिद्ध।
- पेशावर कांड: गढ़वाल राइफल्स के सैनिकों ने भीड़ पर गोलीबारी से इनकार किया।
- चटगाँव आयुध शस्त्रागार छापा: सूर्यसेन के नेतृत्व में क्रांतिकारी गतिविधि।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरकार ने कठोर दमन किया; हजारों लोग गिरफ्तार हुए और कांग्रेस को गैरकानूनी घोषित किया गया। इस आंदोलन में पहली बार बड़ी संख्या में महिलाओं, व्यापारी वर्ग और किसानों ने सक्रिय भाग लिया। दक्षिण में

सी. राजगोपालाचारी ने तिरुचिरापल्ली से वेदारण्यम तक नमक-यात्रा की, तथा पूर्वोत्तर में रानी गाइदिन्ल्यू ने ब्रिटिश-विरोधी संघर्ष किया।

2.8.4 गोलमेज सम्मेलन और गाँधी-इरविन समझौता (1931)

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय संविधान पर विचार के लिए तीन गोलमेज सम्मेलन) 1930, 1931, 1932) बुलाए:

गोलमेज सम्मेलन	वर्ष	विवरण
प्रथम	नवम्बर 1930 — जनवरी 1931	INC अनुपस्थित; केवल मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा आदि
गाँधी-इरविन समझौता	मार्च 1931	आंदोलन स्थगित; राजनीतिक बंदियों की रिहाई; समुद्र-तट पर नमक बनाने की छूट
द्वितीय	सितंबर-दिसम्बर 1931	गाँधी उपस्थित; अम्बेडकर से सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व पर विवाद
तृतीय	नवम्बर-दिसम्बर 1932	INC अनुपस्थित; 'पूना पैक्ट' (1932) की पृष्ठभूमि

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन) 1931) में गाँधी और अम्बेडकर के बीच 'दलितों के पृथक् निर्वाचन' के प्रश्न पर तीव्र मतभेद हुए। 1932 में ब्रिटिश सरकार ने 'सांप्रदायिक पंचाट' (Communal Award) द्वारा दलितों को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिया। गाँधी ने इसके विरोध में आमरण अनशन किया। अंततः 'पूना पैक्ट' (24 सितंबर 1932) से समझौता हुआ।

2.9 अपनी प्रगति जाँचें — 3 (Check Your Progress — 3)

सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ) घटना(	स्तम्भ-ब) तिथि/विवरण(
दांडी मार्च	5 फरवरी 1922; पुलिस थाने में आग

लाहौर अधिवेशन	12 मार्च 1930; नमक सत्याग्रह
चौरी-चौरा	दिसम्बर 1929; 'पूर्ण स्वराज' की माँग
गाँधी-इरविन समझौता	13 अप्रैल 1919; जलियाँवाला बाग
जलियाँवाला बाग	मार्च 1931; आंदोलन स्थगन

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

□ दांडी मार्च किस तिथि को और कहाँ से प्रारंभ हुआ था?

□ 'पूर्ण स्वराज' की माँग किस अधिवेशन में की गई?

□ गाँधी-इरविन समझौते की दो प्रमुख शर्तें क्या थीं?

2.10 भारत छोड़ो आंदोलन (1942): 'करो या मरो'

2.10.1 आंदोलन की पृष्ठभूमि

1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने के बाद ब्रिटेन ने भारत को उसकी अनुमति लिए बिना युद्ध में शामिल कर लिया। INC ने इसका विरोध किया। 1942 में क्रिप्स मिशन आया परंतु असफल रहा। जापान पूर्वी एशिया में आगे बढ़ रहा था। गाँधी का मानना था कि अब समय आ गया है — 'भारत छोड़ो':

पृष्ठभूमि की घटनाएँ	विवरण
द्वितीय विश्वयुद्ध (1939)	भारत की बिना अनुमति युद्ध में भागीदारी; INC का विरोध
व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940-41)	विनोबा भावे, नेहरू — प्रतीकात्मक सत्याग्रह
क्रिप्स मिशन (1942)	स्वशासन का वादा; डोमिनियन स्टेटस; स्वीकार्य नहीं
जापान का आगमन	रंगून, सिंगापुर पर जापानी कब्जा; भारत खतरे में

INC का निर्णय	8 अगस्त 1942 — 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव; गवालिया टैंक मैदान, बंबई

2.10.2 'करो या मरो' — आंदोलन का स्वरूप

8 अगस्त 1942 को INC ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया। 9 अगस्त को तड़के गाँधी सहित सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बावजूद आंदोलन तेज हुआ:

> मैं आपको एक छोटा-सा मंत्र देता हूँ —
> इसे अपने हृदय में अंकित कर लो।
> 'करो या मरो' (Do or Die)।
> हम या तो स्वतंत्र भारत में साँस लेंगे, या मरते हुए भी उसके लिए प्रयास करेंगे।
> — महात्मा गाँधी, 8 अगस्त 1942

भारत छोड़ो आंदोलन की विशेषता	विवरण
नेताओं की गिरफ्तारी (9 अगस्त(	गाँधी, नेहरू, पटेल, अजाद — सभी शीर्ष नेता गिरफ्तार
भूमिगत आंदोलन	राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली
जन-उभार	रेलवे, टेलीग्राफ, सरकारी भवनों पर हमले
समानांतर सरकारें	बलिया) UP) में चित्तू पांडेय; सतारा) महा (.में नाना पाटिल
ब्रिटिश दमन	1 लाख से अधिक गिरफ्तारियाँ; 60,000 छात्र
INA का सहयोग	सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज का विदेश से समर्थन

भारत छोड़ो आंदोलन में स्वतः स्फूर्त जन-आंदोलन का अभूतपूर्व उदाहरण मिला। बिना नेतृत्व के भी जनता ने संघर्ष जारी रखा —यह गाँधी के 'जन-शक्ति' के सिद्धांत की सर्वोत्तम पुष्टि थी।

2.10.3 भारत छोड़ो आंदोलन का ऐतिहासिक महत्त्व

हालाँकि 1942 का आंदोलन तत्काल सफल नहीं रहा, परंतु इसका ऐतिहासिक महत्त्व अत्यंत व्यापक था:

- ब्रिटिश राज की नींव हिली: ब्रिटेन को यह स्पष्ट हो गया कि भारत में शासन करना अब संभव नहीं।

- जन-भागीदारी: किसान, मजदूर, महिलाएँ, विद्यार्थी — सभी वर्गों की भागीदारी।
- INA का मनोबल: आजाद हिंद फौज के सैनिकों पर मुकदमे (1945) ने पूरे देश को एकजुट किया।
- भारत-विभाजन की पीड़ा की शुरुआत: मुस्लिम लीग ने आंदोलन में भाग नहीं लिया — हिंदू-मुस्लिम विभाजन गहरा हुआ।

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव को 8 अगस्त 1942 को बंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में कांग्रेस की बैठक में पारित किया गया। अगले ही दिन (9 अगस्त) गाँधी और अधिकांश बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए, जिसके बाद आंदोलन का नेतृत्व अरुणा आसफ अली, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया और उषा मेहता जैसे नेताओं के हाथ में आ गया। बलिया, तामलुक और सतारा में समानांतर सरकारें बनीं, और उषा मेहता ने गुप्त 'कांग्रेस रेडियो' चलाया।

2.11 अपनी प्रगति जाँचें — 4 (Check Your Progress — 4)

(अ (रिक्त स्थान भरिए:

□ 'करो या मरो' का नारा गाँधी ने _____ को दिया।

□ भारत छोड़ो आंदोलन _____ अगस्त _____ को प्रारंभ हुआ।

□ भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत नेतृत्व _____ और _____ ने किया।

□ सतारा में समानांतर सरकार का नेतृत्व _____ ने किया।

(ब (दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए:

□ क्रिप्स मिशन क्यों असफल हुआ?

□ भारत छोड़ो आंदोलन की दो प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

2.12 गाँधीवाद की आलोचनाएँ और वैकल्पिक दृष्टिकोण

2.12.1 डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की आलोचना

डॉ. भीमराव अम्बेडकर गाँधी के कटु आलोचक थे। उनकी आलोचना के मुख्य बिंदु:

- जाति-व्यवस्था पर समझौता: गाँधी 'वर्णाश्रम' के समर्थक थे; अम्बेडकर इसे दलित-उत्पीड़न का आधार मानते थे।
- 'हरिजन' शब्द पर आपत्ति: गाँधी ने अछूतों को 'हरिजन' (ईश्वर के जन) कहा; अम्बेडकर ने इसे अपमानजनक बताया।

- पूना पैक्ट का विवाद: अम्बेडकर दलितों के लिए पृथक् निर्वाचन (Separate Electorate) चाहते थे; गाँधी के अनशन के दबाव में पूना पैक्ट करना पड़ा।
- हिंदू धर्म से निर्मोह: अम्बेडकर ने 1956 में बौद्ध धर्म अपनाया — गाँधीवाद को हिंदू-धर्म का रक्षक बताकर।

> गाँधी हमें ऊपर से नीचे तक ब्रिटिश शासन से मुक्त करना चाहते हैं,
> परंतु ब्राह्मणवाद से नहीं।
> — डॉ .बी.आर .अम्बेडकर

2.12.2 भगत सिंह और क्रांतिकारियों का दृष्टिकोण

भगत सिंह और उनके साथी गाँधी की अहिंसा की नीति से असहमत थे। उनका मानना था:

- अहिंसा की सीमाएँ: 'जो व्यवस्था शोषण पर टिकी हो, उसे केवल प्रेम से नहीं बदला जा सकता।'
- साम्राज्यवाद-विरोध: भगत सिंह पूर्ण क्रांति के समर्थक थे — न केवल ब्रिटिश शासन का अंत, बल्कि पूँजीवाद और सामंतवाद का भी।
- कांग्रेस की सीमाएँ: INC केवल 'भारतीय बुर्जुआ वर्ग' के हित में है।
- भगत सिंह की फाँसी (1931): गाँधी-इरविन समझौते के बाद भी गाँधी ने भगत सिंह की फाँसी रोकने का पर्याप्त प्रयास नहीं किया — इस पर जनता में नाराजगी थी।

> बम और पिस्तौल क्रांति नहीं लाते।
> क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।
> — भगत सिंह

2.12.3 सुभाष चंद्र बोस और 'सशस्त्र क्रांति' का मार्ग

सुभाष चंद्र बोस) 'नेताजी', 1897-1945) गाँधी की अहिंसक नीति से असहमत थे:

- 1939 में INC अध्यक्ष: गाँधी के विरोध के बावजूद निर्वाचित; बाद में इस्तीफा।
- फॉरवर्ड ब्लॉक (1939): अपना अलग राजनीतिक दल।
- आजाद हिंद फौज (1943): जर्मनी और जापान की सहायता से सशस्त्र मुक्ति-संग्राम।
- 'दिल्ली चलो' और 'जय हिंद': INA ने इम्फाल-कोहिमा तक पहुँचकर ब्रिटिश शासन को चुनौती दी।

> तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
> जय हिंद!
> — नेताजी सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस 1941 में भारत से निकलकर जर्मनी पहुँचे और बाद में 1943 में दक्षिण-पूर्व एशिया में 'आजाद हिंद सरकार' (अस्थायी सरकार) की घोषणा की। गाँधी और बोस के बीच मतभेद के बावजूद दोनों में परस्पर सम्मान था --- बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से गाँधी को 'राष्ट्रपिता' कहकर संबोधित किया।

2.12.4 गाँधीवाद का समग्र मूल्यांकन

गाँधी और उनके आंदोलनों का समग्र मूल्यांकन करना आवश्यक है:

गाँधीवाद	सकारात्मक पक्ष
जन-आधार	स्वतंत्रता-संग्राम को वास्तविक जन-आंदोलन बनाया
अहिंसा	नैतिक श्रेष्ठता; अंतर्राष्ट्रीय सहानुभूति
महिला-सहभागिता	पहली बार महिलाएँ राजनीति में सक्रिय
आर्थिक दर्शन	ग्रामीण स्वावलंबन; चरखा
हिंदू-मुस्लिम एकता	1920 में एकता का प्रयास

समग्र रूप से, गाँधीवादी आंदोलनों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को शहरी मध्यवर्ग से निकालकर किसानों, मजदूरों और महिलाओं तक पहुँचाया। आलोचकों के अनुसार गाँधीवादी नीति कई बार आंदोलन को बीच में रोक देने (जैसे 1922 और 1934) और सामाजिक प्रश्नों (जाति, वर्ग) पर समझौतावादी रुख अपनाने के कारण सीमित रही। इतिहासकार आज इसे कमियों और उपलब्धियों दोनों के संतुलित मूल्यांकन के रूप में देखते हैं।

2.13 सारांश (Summary)

इस अध्याय में 'गाँधी युग एवं जन-आंदोलन' का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. गाँधी का दर्शन: सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज और सर्वोदय — ये चार स्तम्भ गाँधीवाद की आत्मा हैं।
2. दक्षिण अफ्रीका: 21 वर्षों के अनुभव ने गाँधी को 'सत्याग्रह' की प्रयोगशाला दी।

3. प्रारम्भिक सत्याग्रह: चंपारण (1917), खेड़ा (1918) और अहमदाबाद (1918) — तीनों स्थानीय सफलताएँ।
4. जलियाँवाला बाग (1919): इस नरसंहार ने गाँधी को ब्रिटिश सरकार के प्रति पूरी तरह असहयोग की ओर मोड़ दिया।
5. असहयोग आंदोलन (1920-22): पहला व्यापक जन-आंदोलन; खिलाफत के साथ हिंदू-मुस्लिम एकता; चौरी-चौरा के बाद वापसी।
6. सविनय अवज्ञा (1930-34): दांडी मार्च — नमक-कानून तोड़ने का प्रतीकात्मक कार्य; महिलाओं की भारी भागीदारी।
7. गोलमेज सम्मेलन और पूना पैक्ट: गाँधी-अम्बेडकर विवाद; दलित प्रतिनिधित्व का प्रश्न।
8. भारत छोड़ो (1942): 'करो या मरो'; नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद जन-आंदोलन; भूमिगत प्रतिरोध।
9. आलोचनाएँ: अम्बेडकर (जाति-प्रश्न), भगत सिंह (अहिंसा की सीमा), बोस (सशस्त्र क्रांति) — ये सभी वैध दृष्टिकोण।
10. गाँधी की विरासत: 'जन-शक्ति' की खोज, नैतिक राजनीति और विश्व-शांति के लिए अहिंसा — आज भी प्रासंगिक।

2.14 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
सत्याग्रह	सत्य + आग्रह = सत्य पर दृढ़ता; अहिंसक प्रतिरोध की गाँधीवादी तकनीक
अहिंसा	मन, वचन और कर्म से किसी प्राणी को कष्ट न देना; गाँधी के लिए सक्रिय प्रेम
स्वराज	आत्म-शासन; न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता बल्कि नैतिक और आत्मिक मुक्ति
सर्वोदय	सभी का उदय; रस्किन के 'Unto This Last' से प्रेरित गाँधी का आर्थिक दर्शन
ट्रस्टीशिप	धनी व्यक्ति समाज का ट्रस्टी है, स्वामी नहीं — गाँधी का सम्पत्ति-सिद्धांत
असहयोग आंदोलन	1920-22; सरकारी संस्थाओं, उपाधियों, अदालतों का बहिष्कार
सविनय अवज्ञा	Civil Disobedience; सरकारी कानूनों को अहिंसक रूप से तोड़ना

दांडी मार्च	12 मार्च 1930; साबरमती से दांडी; नमक-कर का उल्लंघन
खिलाफत आंदोलन	1919-24; तुर्की के खलीफा की रक्षा के लिए भारतीय मुस्लिमों का आंदोलन
चौरी-चौरा	5 फरवरी 1922; पुलिस थाने पर हमला; असहयोग आंदोलन वापसी का कारण
भारत छोड़ो	8 अगस्त 1942; 'Quit India'; 'करो या मरो'
'करो या मरो'	8 अगस्त 1942 को गाँधी का आह्वान; स्वतंत्रता या मृत्यु
पूना पैक्ट (1932)	गाँधी-अम्बेडकर समझौता; दलितों के लिए आरक्षित सीटें) पृथक् निर्वाचन के बजाय(
आजाद हिंद फौज (INA)	सुभाष चंद्र बोस द्वारा 1943 में गठित; जापान की सहायता से सशस्त्र मुक्ति-संग्राम
गाँधी-इरविन समझौता	मार्च 1931; सविनय अवज्ञा स्थगन; बंदियों की रिहाई
क्रिप्स मिशन	1942; युद्ध-बाद डोमिनियन स्टेटस का वादा; INC ने अस्वीकार किया
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति; भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम और गाँधीवाद को पाठ्यक्रम में

2.15 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए(

11. महात्मा गाँधी के राजनीतिक दर्शन — सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज और सर्वोदय — की विस्तृत व्याख्या कीजिए। गाँधीवाद के वैचारिक स्रोतों का भी उल्लेख कीजिए।
12. असहयोग आंदोलन (1920-22) के कारणों, कार्यक्रम और परिणामों का विस्तृत वर्णन कीजिए। चौरी-चौरा कांड के बाद आंदोलन की वापसी को उचित ठहराइए या इसकी आलोचना कीजिए।

13. दांडी मार्च (1930) के ऐतिहासिक महत्त्व की विवेचना कीजिए। सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रमुख चरणों और उसके राष्ट्रीय प्रभाव का वर्णन कीजिए।

14. 'भारत छोड़ो आंदोलन' (1942) की पृष्ठभूमि, स्वरूप और ऐतिहासिक महत्त्व की विवेचना कीजिए। गाँधीवाद की प्रमुख आलोचनाओं का भी परीक्षण कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए(

15. जलियाँवाला बाग नरसंहार क्या था? इसका राष्ट्रीय चेतना पर क्या प्रभाव पड़ा?

16. खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन किस प्रकार परस्पर संबंधित थे?

17. गाँधी-इरविन समझौते (1931) के प्रमुख प्रावधान बताइए।

18. डॉ. अम्बेडकर ने गाँधी की किन नीतियों की आलोचना की?

19. भगत सिंह और गाँधी के दृष्टिकोणों में मुख्य अंतर क्या था?

20. भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में 'भूमिगत आंदोलन' की क्या भूमिका थी?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

21. चंपारण सत्याग्रह (1917) का मुख्य मुद्दा क्या था? (अ) नमक-कर (ब) तीनकठिया प्रणाली (स) भूमि-कर (द) खिलाफत

22. जलियाँवाला बाग नरसंहार किस तिथि को हुआ? (अ) 6 अप्रैल 1919 (ब) 13 अप्रैल 1919 (स) 10 मई 1919 (द) 1 अगस्त 1920

23. असहयोग आंदोलन (1920-22) किस घटना के कारण वापस लिया गया? (अ) जलियाँवाला बाग (ब) खिलाफत का अंत (स) चौरी-चौरा कांड (द) क्रिप्स मिशन

24. दांडी मार्च कितनी दूरी तय करके किया गया? (अ) 100 मील (ब) 141 मील (स) 241 मील (द) 300 मील

25. 'करो या मरो' का नारा किस आंदोलन से संबंधित है? (अ) असहयोग (ब) सविनय अवज्ञा (स) भारत छोड़ो (द) खिलाफत

26. पूना पैक्ट (1932) किनके बीच हुआ? (अ) गाँधी-इरविन (ब) गाँधी-जिन्ना (स) गाँधी-अम्बेडकर (द) गाँधी-बोस

27. आजाद हिंद फौज के संस्थापक कौन थे? (अ) भगत सिंह (ब) सुभाष चंद्र बोस (स) चंद्रशेखर आजाद (द) राम प्रसाद बिस्मिल

2.16 अपनी प्रगति जाँचें — उत्तर (Answers to Check Your Progress)

2.3 के उत्तर:

(अ(रिक्त स्थान:

28. महात्मा गाँधी का जन्म 'पोरबंदर (गुजरात)' में '1869 ई.' में हुआ।

29. 'सत्याग्रह' का अर्थ 'सत्य' और 'आग्रह' के संयोग से 'सत्य पर दृढ़ता' है।

30. गाँधी ने 'सर्वोदय' की प्रेरणा रस्किन की पुस्तक 'Unto This Last' से ली।

31. गाँधी के राजनीतिक गुरु 'गोपाल कृष्ण गोखले' थे।

(ब(सही/गलत:

32. सही (✓) — गाँधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे।

33. सही (✓) — 'Hind Swaraj' गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में रेलगाड़ी में (1909) लिखी थी।

34. गलत (✗) — गाँधी के लिए 'स्वराज' का अर्थ आत्म-शासन, नैतिक अनुशासन और आत्मिक मुक्ति था — केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं।

35. गलत (✗) — 'ट्रस्टीशिप' में धनी व्यक्ति को समाज का ट्रस्टी (न्यासी) माना गया, मालिक नहीं।

2.7 के उत्तर:

36. तीनकठिया प्रणाली: चंपारण के किसानों को अपनी जमीन के 3/20 भाग (तीन-कट्ठा) पर नील की खेती करने के लिए बाध्य किया जाता था, चाहे बाजार-मूल्य कुछ भी हो।

37. जलियाँवाला बाग: 13 अप्रैल 1919 (बैसाखी पर्व) को अमृतसर में रॉलेट एक्ट के विरोध में सभा पर जनरल डायर ने गोलीबारी का आदेश दिया।

38. खिलाफत आंदोलन: तुर्की के 'खलीफा' (मुसलमानों के धार्मिक प्रमुख) की पुनर्स्थापना की माँग। गाँधी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए इसका समर्थन किया।

39. असहयोग वापसी: चौरी-चौरा (5 फरवरी 1922) में भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगाई। गाँधी का मानना था कि जनता अहिंसा के लिए अभी तैयार नहीं।

2.9 के उत्तर (सही मिलान):

घटना	सही मिलान
दांडी मार्च	12 मार्च 1930; नमक सत्याग्रह) सही(
लाहौर अधिवेशन	दिसम्बर 1929; 'पूर्ण स्वराज' की माँग) सही(
चौरी-चौरा	5 फरवरी 1922; पुलिस थाने में आग) सही(
गाँधी-इरविन समझौता	मार्च 1931; आंदोलन स्थगन) सही(
जलियाँवाला बाग	13 अप्रैल 1919 (सही(

40. दांडी मार्च 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से प्रारंभ हुआ।

41. 'पूर्ण स्वराज' की माँग दिसंबर 1929 के लाहौर अधिवेशन में की गई (अध्यक्ष: जवाहरलाल नेहरू)।

42. गाँधी-इरविन समझौते की दो शर्तें: (1) सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करना, (2) राजनीतिक बंदियों की रिहाई।

2.11 के उत्तर:

43. 'करो या मरो' का नारा गाँधी ने 8 अगस्त 1942 को दिया।

44. भारत छोड़ो आंदोलन 8-9 अगस्त 1942 को प्रारंभ हुआ।

45. भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत नेतृत्व राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण ने किया।

46. सतारा में समानांतर सरकार का नेतृत्व नाना पाटिल ने किया।

47. क्रिप्स मिशन असफलता: क्रिप्स ने युद्ध के बाद डोमिनियन स्टेटस और संविधान सभा का वादा किया। गाँधी ने इसे 'Post-dated cheque on a crashing bank' कहा; INC ने इसे अस्वीकार किया क्योंकि तत्काल स्वतंत्रता की माँग पूरी नहीं हुई।

48. भारत छोड़ो की दो विशेषताएँ: (1) नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद जन-आंदोलन जारी रहा, (2) बलिया और सतारा में समानांतर सरकारें बनीं।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (2.15 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(ब (तीनकठिया प्रणाली
2	(ब (13 अप्रैल 1919
3	(स (चौरी-चौरा कांड
4	(स (241 मील
5	(स (भारत छोड़ो
6	(स (गाँधी-अम्बेडकर
7	(ब (सुभाष चंद्र बोस

2.17 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ एवं प्राथमिक स्रोत:

- महात्मा गाँधी — Hind Swaraj (1909; हिंदी: 'हिंद स्वराज', नवजीवन प्रकाशन)
- महात्मा गाँधी — My Experiments with Truth (आत्मकथा; हिंदी: 'सत्य के प्रयोग')
- महात्मा गाँधी — Constructive Programme (1941)
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर — What Congress and Gandhi Have Done to the Untouchables (1945)

- सुभाष चंद्र बोस — An Indian Pilgrim (आत्मकथा)
- भगत सिंह — Why I Am An Atheist; Selected Works

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- बिपिन चंद्र — 'स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष' (Orient Blackswan, हिंदी)
- रामविलास शर्मा — 'महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन', राजकमल प्रकाशन
- सुमित सरकार — 'आधुनिक भारत 1885-1947', राजकमल प्रकाशन
- देवेंद्र स्वरूप — 'गाँधी और राष्ट्रवाद'
- राहुल सांकृत्यायन — 'मेरी जीवनयात्रा' (स्वतंत्रता-संग्राम के संदर्भ में)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Bipan Chandra — India's Struggle for Independence, Penguin
- Sumit Sarkar — Modern India 1885-1947, Macmillan
- Judith Brown — Gandhi: Prisoner of Hope, Yale University Press
- D.G. Tendulkar — Mahatma (8 vols.), Publication Division, Govt. of India
- R.C. Majumdar — History of the Freedom Movement in India

ऑनलाइन संसाधन:

- https://www.mkgandhi.org — महात्मा गाँधी की सम्पूर्ण रचनाएँ
- https://ncert.nic.in — NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तकें
- https://indianculture.gov.in — भारतीय संस्कृति पोर्टल
- https://www.gandhiashramsabarmati.org — साबरमती आश्रम
- https://www.education.gov.in/nep — NEP 2020 पोर्टल

॥ करो या मरो — गाँधी का अमर संदेश ॥

जहाँ प्रेम है वहाँ जीवन है।

— महात्मा गाँधी

वंदे मातरम् — जन गण मन — जय हिंद

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24MIC112T	**AUTHOR : DR. SANDEEP BISHNOI**
LESSON NO : 3	**VATTER :** DR. DHARAMBIR

अध्याय - 3

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद एवं स्वतंत्रता के वैकल्पिक मार्ग

Revolutionary Nationalism and Alternative Paths to Independence

अनुभाग **विषय-वस्तु**

3.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

3.1 प्रस्तावना

3.2 उग्रवाद का उदय: बाल-पाल-लाल

3.2.1 उदारवाद vs उग्रवाद — 8 बिंदुओं की तुलनात्मक तालिका

3.2.2 बाल गंगाधर तिलक — 7 योगदानों की तालिका + उद्धरण

3.2.3 लाला लाजपत राय — साइमन कमीशन, शहादत

3.2.4 बिपिन चंद्र पाल — वैचारिक योगदान

3.3 Check Your Progress — 1

3.4 बंगाल की क्रांतिकारी परंपरा

3.4.1 अनुशीलन समिति, युगांतर — तालिका

3.4.2 खुदीराम बोस (18 वर्ष) + अलीपुर बम काण्ड

3.4.3 अरविंद घोष — क्रांतिकारी से योगी

3.4.4 काकोरी षड्यंत्र (1925) — लाल रंग तालिका + बिस्मिल का शेर

अनुभाग **विषय-वस्तु**

3.5 भगत सिंह: क्रांति का अमर नायक

3.5.1 जीवन-क्रम तालिका

3.5.2 विचारधारा — साम्राज्यवाद-विरोध, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता

3.5.3 असेंबली बम काण्ड (8 अप्रैल 1929)

3.5.4 23 मार्च 1931 — भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव की शहादत

3.5.5 चंद्रशेखर आजाद — जीवन-तालिका

3.6 Check Your Progress — 2

3.7 सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज

3.7.1 नेताजी का जीवन-क्रम — रंगीन (Teal) तालिका

3.7.2 INA — 8 विशेषताओं की तालिका + 'तुम मुझे खून दो'

3.7.3 INA मुकदमे (1945-46) और उनका प्रभाव

3.8 Check Your Progress — 3

3.9 समाजवाद और वामपंथ

3.9.1 CPI, CSP, किसान सभा, AITUC — तालिका

3.9.2 M.N. Roy और भारतीय साम्यवाद

3.9.3 जयप्रकाश नारायण और CSP

3.9.4 महिला क्रांतिकारी — **हरी (Green) तालिका** (7 महिलाएँ)

3.10 अन्य क्रांतिकारी

3.10.1 चटगाँव विद्रोह (1930) — सूर्यसेन

अनुभाग **विषय-वस्तु**

3.10.2 वासुदेव बलवंत फड़के

3.10.3 वीर सावरकर — तालिका

3.11 Check Your Progress — 4

3.12 क्रांतिकारी राष्ट्रवाद vs गाँधीवाद — तुलनात्मक अध्ययन

3.13 सारांश (10 बिंदु)

3.14 शब्दावली (16 शब्द)

3.15 Self-Assessment Test (4 दीर्घ + 6 लघु + 7 वस्तुनिष्ठ)

3.16 Answers to Check Your Progress

3.17 References / Suggested Readings

3.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के उद्गम, स्वरूप और विकास-क्रम को समझ सकेंगे।
- बाल गंगाधर तिलक और उग्रवादी आंदोलन की विशेषताओं, लक्ष्यों और उपलब्धियों की विवेचना कर सकेंगे।
- बंगाल विभाजन (1905) के बाद उभरी क्रांतिकारी गतिविधियों — अनुशीलन समिति, युगांतर — का अध्ययन कर सकेंगे।
- लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल और उनके क्रांतिकारी योगदान की विवेचना कर सकेंगे।
- भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (HSRA) की विचारधारा और गतिविधियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज (INA) की भूमिका और उसके ऐतिहासिक प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।

- वामपंथी और समाजवादी विचारधाराओं के उदय और स्वतंत्रता-संग्राम में उनके योगदान को जान सकेंगे।
- क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और गाँधीवाद की तुलनात्मक विवेचना करते हुए स्वतंत्रता के विभिन्न मार्गों का समग्र मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम केवल एक मार्ग से नहीं चला। जहाँ गाँधी अहिंसक सत्याग्रह का मार्ग अपना रहे थे, वहाँ एक समानांतर धारा थी जो मानती थी कि जो अधिकार माँगने से नहीं मिलता, उसे छीनना पड़ता है। यह धारा 'क्रांतिकारी राष्ट्रवाद' थी — जो शहादत, साहस और सशस्त्र प्रतिरोध पर विश्वास करती थी।

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की कोई एक परिभाषा नहीं है। इसमें बाल गंगाधर तिलक का 'राजनीतिक उग्रवाद', बंगाल के गुप्त क्रांतिकारी दलों का 'सशस्त्र विद्रोह', भगत सिंह का 'समाजवादी क्रांति का आह्वान' और सुभाष चंद्र बोस का 'सशस्त्र मुक्ति-संग्राम' — सभी शामिल हैं। इन सभी में एक साझी भावना थी :ब्रिटिश साम्राज्यवाद का जड़ से उखाड़ना।

इस अध्याय में हम इन विभिन्न धाराओं का क्रमबद्ध अध्ययन करेंगे। हम देखेंगे कि किस प्रकार उग्रवाद ने 1905 के बाद उभरकर भारतीय राजनीति को नई दिशा दी, किस प्रकार भगत सिंह जैसे युवाओं ने अपने विचारों से एक पीढ़ी को प्रेरित किया, और किस प्रकार नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विदेशों में रहकर भारतीय स्वाधीनता के लिए सशस्त्र संघर्ष किया।

साथ ही हम यह भी समझेंगे कि वामपंथी और समाजवादी विचारधाराओं ने स्वतंत्रता-संग्राम को एक नया आयाम कैसे दिया और आज भी ये विचार-धाराएँ क्यों प्रासंगिक हैं।

3.2 उग्रवाद का उदय: बाल-पाल-लाल

3.2.1 उग्रवाद क्या है? उदारवाद से भिन्नता

1905 के बाद भारतीय राजनीति में एक नई शक्ति उभरी — 'उग्रवाद' (Extremism)। ये नेता उदारवादियों की याचिका-नीति और ब्रिटिश न्याय में विश्वास से असहमत थे। उनका मानना था कि स्वराज 'माँगने' से नहीं, 'छीनने' से मिलेगा:

तुलना का आधार	उदारवादी (Moderates)	उग्रवादी (Extremists)
ब्रिटिश शासन पर दृष्टिकोण	न्यायप्रिय; सहयोग संभव	शोषणकारी; सहयोग अनुचित
लक्ष्य	सुधार; डोमिनियन स्टेटस	पूर्ण स्वराज; स्वतंत्रता
कार्य-प्रणाली	याचिका; प्रार्थना-पत्र	आंदोलन; बहिष्कार; जन-शक्ति

जन-आधार	शिक्षित मध्यवर्ग	व्यापक जन-भागीदारी
ब्रिटिश न्याय में विश्वास	हाँ — ब्रिटेन से न्याय मिलेगा	नहीं — स्वयं लड़ना होगा
समयसीमा	दीर्घकालीन सुधार	तत्काल स्वाधीनता
प्रमुख नेता	नौरोजी, गोखले, बनर्जी	तिलक, लाल, पाल

3.2.2 बाल गंगाधर तिलक: 'लोकमान्य' और 'स्वराज का जनक'

बाल गंगाधर तिलक) 1856-1920) भारतीय उग्रवाद के सर्वाधिक प्रभावशाली नेता थे। उनका प्रसिद्ध नारा था :'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।'

तिलक का योगदान	विवरण
गणपति उत्सव (1893)	सामाजिक-राजनीतिक एकता का साधन; जन-जागरण
शिवाजी उत्सव (1895)	हिंदू वीरता का जागरण; ब्रिटिश-विरोध
केसरी) 1881) और मराठा	दो समाचार-पत्र— हिंदी और अंग्रेजी में राष्ट्रवाद का प्रचार
गरम दल का नेतृत्व	सूरत अधिवेशन (1907) में उदारवादियों से अलगाव
होम रूल लीग (1916)	गाँधी से पहले; 'स्वशासन की माँग'
माँडले जेल (1908-14)	'गीता रहस्य' — जेल में लिखी; कर्मयोग की व्याख्या
लखनऊ समझौता (1916)	कांग्रेस-मुस्लिम लीग एकता; INC का पुनर्मिलन

> स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।
> राजनीति भिक्षा का व्यापार नहीं है।
> अपना स्वराज स्वयं प्राप्त करो।
> — बाल गंगाधर तिलक — लोकमान्य

3.2.3 लाला लाजपत राय: 'पंजाब केसरी'

लाला लाजपत राय) 1865-1928) उग्रवादी त्रयी) 'लाल-बाल-पाल') के एक स्तम्भ थे। वे आर्य समाज से प्रेरित और पंजाब के सबसे प्रभावशाली राष्ट्रवादी नेता थे:

- साइमन कमीशन विरोध (1928): 'साइमन गो बैक' — लाठीचार्ज में गंभीर चोटें।
- 'इस लाठी की चोट लाला जी की मृत्यु का कारण बनी और यह लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में अंतिम कील साबित होगी' — भगत सिंह।
- 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में लाठीचार्ज; 17 नवम्बर 1928 को निधन।
- Young India (पत्रिका); सर्वेंट्स ऑफ पीपल सोसाइटी (1921)।
- प्रमुख ग्रंथ: 'Unhappy India', 'Young India', 'Arya Samaj'।

> इस देश के युवाओं को जागना होगा।
> हमारी स्वतंत्रता के लिए रक्त की आवश्यकता है,
> और वह रक्त हमारी धमनियों में बह रहा है।
> — लाला लाजपत राय — पंजाब केसरी

3.2.4 बिपिन चंद्र पाल: 'क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के विचारक'

बिपिन चंद्र पाल) 1858-1932) 'लाल-बाल-पाल' त्रयी के तीसरे स्तम्भ थे। वे बंगाल से थे और उनका योगदान मुख्यतः वैचारिक था:

- 'New India' पत्रिका: क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का प्रचार।
- 'आत्मशक्ति' का सिद्धांत: स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को वैचारिक आधार।
- 'राष्ट्रवाद की आत्मा': 'राष्ट्रवाद धर्म है' — यह उनका प्रसिद्ध विचार था।
- बंगाल विभाजन का प्रबल विरोध; स्वदेशी आंदोलन के प्रणेता।

बिपिन चंद्र पाल ने 'स्वराज' को केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि आत्म-निर्भर और स्वाभिमानी राष्ट्र की रचना के रूप में देखा। उन्होंने 1906 में अंग्रेजी दैनिक 'वंदे मातरम्' का प्रकाशन आरंभ किया, जिसे बाद में अरविंद घोष ने सँभाला। लाल-बाल-पाल ने मिलकर बंगाल विभाजन के विरोध को पंजाब, महाराष्ट्र और बंगाल की जनता तक पहुँचाया, जिससे स्वदेशी आंदोलन राष्ट्रव्यापी बना।

3.3 अपनी प्रगति जाँचें — 1 (Check Your Progress — 1)

(अ (रिक्त स्थान भरिए:

□ 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' — यह नारा _____ ने दिया।

□ तिलक ने गणपति उत्सव _____ ई .में और शिवाजी उत्सव _____ ई .में प्रारंभ किया।

□ लाला लाजपत राय की मृत्यु _____ कमीशन विरोध के दौरान लाठीचार्ज से हुई।

□ 'लाल-बाल-पाल' में 'लाल' _____, 'बाल' _____ और 'पाल' _____ हैं।

(ब (सही (✓) या गलत (✗) बताइए:

□ तिलक उदारवादी राष्ट्रवादी थे। ( )

□ 'केसरी' समाचार-पत्र तिलक ने प्रारंभ किया। ( )

□ लाला लाजपत राय ने 1921 में 'सर्वेंट्स ऑफ पीपल सोसाइटी' बनाई। ( )

□ सूरत अधिवेशन) 1907) में कांग्रेस का उदारवादी-उग्रवादी विभाजन हुआ। ( )

3.4 बंगाल की क्रांतिकारी परंपरा

3.4.1 अनुशीलन समिति और युगांतर: बंगाल में सशस्त्र क्रांति

1905 के बंगाल-विभाजन ने बंगाल में एक तीव्र क्रांतिकारी लहर पैदा की। गुप्त क्रांतिकारी संगठनों का गठन हुआ जो सशस्त्र विद्रोह की तैयारी में जुट गए:

संगठन	स्थापना/नेता
अनुशीलन समिति	1902; प्रमथनाथ मित्र, बारीन्द्र घोष
युगांतर	1906; बारीन्द्र घोष, भूपेंद्रनाथ दत्त
ढाका अनुशीलन समिति	1907; पुलिन दास

अभिनव भारत	1904; विनायक दामोदर सावरकर

अनुशीलन समिति ने शारीरिक प्रशिक्षण, लाठी-कुश्ती और गुप्त शस्त्र-संग्रह के माध्यम से युवाओं को संगठित किया। युगांतर समाचार-पत्र ने क्रांतिकारी विचारों का प्रचार किया। इन संगठनों की गतिविधियाँ बंगाल से बाहर पंजाब, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश तक भी फैलीं। ब्रिटिश सरकार ने 1908 में 'विस्फोटक पदार्थ अधिनियम' जैसे कानून बनाकर इन्हें रोकने का प्रयास किया।

3.4.2 अलीपुर बम काण्ड (1908) और खुदीराम बोस

खुदीराम बोस) 1889-1908) — भारत के सबसे युवा शहीद) 18 वर्ष(। 30 अप्रैल 1908 को उन्होंने मुजफ्फरपुर में जज किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंका। गाड़ी में किंग्सफोर्ड नहीं था — दो महिलाएँ मारी गईं। खुदीराम पकड़े गए और 11 अगस्त 1908 को फाँसी दी गई:

> मेरे साथी, मैं हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमता हूँ।
> मेरे देशवासियों, तुम जागो, उठो, और अपना अधिकार लो।
> वंदे मातरम्!
> — खुदीराम बोस, फाँसी से पूर्व — 11 अगस्त 1908

अलीपुर बम काण्ड में अरविंद घोष, बारीन्द्र घोष और अन्य 36 क्रांतिकारियों पर मुकदमा चला। अरविंद घोष को बरी किया गया। इस काण्ड ने पूरे बंगाल को हिला दिया।

3.4.3 अरविंद घोष: क्रांतिकारी से योगी तक

श्री अरविंद घोष) 1872-1950) बंगाल के क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के एक अनूठे प्रतिनिधि थे। अलीपुर काण्ड के बाद 1910 में वे पॉण्डिचेरी चले गए और आध्यात्मिक साधना में लीन हो गए। परंतु उनके विचार क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की आत्मा थे:

- 'Doctrine of Passive Resistance' (1907): निष्क्रिय प्रतिरोध — उदारवाद से आगे।
- 'Bande Mataram' पत्रिका: 'भारत देवी है, उसकी पूजा ही राष्ट्रवाद है।'
- 'भवानी मंदिर' पुस्तिका: हथियार उठाने का आह्वान।
- आध्यात्मिक राष्ट्रवाद: 'राष्ट्रवाद सनातन धर्म है।'

> राष्ट्रवाद एक धर्म है जो ईश्वर ने भारत को दिया है।
> भारत की स्वतंत्रता केवल भारत के लिए नहीं—

यह विश्व-इतिहास की नियति है।

— श्री अरविंद — Karmayogin, 1909

3.4.4 सुरेंद्रनाथ सान्याल और काकोरी षड्यंत्र (1925)

9 अगस्त 1925 को राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, सुरेंद्रनाथ सान्याल और रोशन सिंह ने काकोरी) उत्तर प्रदेश (में ट्रेन रोककर सरकारी खजाना लूटा। यह घटना 'काकोरी षड्यंत्र' के नाम से प्रसिद्ध है:

काकोरी षड्यंत्र — मुख्य तथ्य	विवरण
तिथि	9 अगस्त 1925
स्थान	काकोरी) लखनऊ के पास, उत्तर प्रदेश(
घटना	ट्रेन No. 8 Down रोककर सरकारी खजाने की लूट
संगठन	HRA — हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी
मुकदमा	4 को फाँसी; 16 को कारावास
फाँसी पाने वाले	राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिड़ी
महत्त्व	अंग्रेज सरकार को खुली चुनौती; युवाओं में प्रेरणा

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाज़ुए-कातिल में है।

— राम प्रसाद बिस्मिल — काकोरी षड्यंत्र 1925

3.5 भगत सिंह: क्रांति का अमर नायक

3.5.1 भगत सिंह का जीवन और विचार

भगत सिंह) 28 सितंबर 1907 — 23 मार्च 1931) — भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के सबसे चमकीले सितारे। मात्र 23 वर्ष की आयु में शहादत देने वाले इस क्रांतिकारी ने अपने विचारों से एक पूरी पीढ़ी को प्रेरित किया:

भगत सिंह — जीवन-क्रम	विवरण
जन्म	28 सितंबर 1907; बंगा, लायलपुर) अब पाकिस्तान(
परिवार	क्रांतिकारी परिवार; चाचा अजीत सिंह — भारत माता सोसायटी
नौजवान भारत सभा (1926)	युवाओं को संगठित करने का प्रयास; लाहौर में
HSRA (1928)	हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी; चंद्रशेखर आजाद के साथ
साण्डर्स हत्या (1928)	लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला; J.P. साण्डर्स का वध
असेंबली बम) 8 अप्रैल 1929)	बटुकेश्वर दत्त के साथ; 'बहरों को सुनाने के लिए विस्फोट'
जेल में भूख हड़ताल	राजनीतिक बंदियों के अधिकारों के लिए 116 दिन का उपवास
शहादत	23 मार्च 1931; लाहौर; राजगुरु और सुखदेव के साथ

3.5.2 भगत सिंह की विचारधारा

भगत सिंह केवल एक क्रांतिकारी नहीं थे — वे एक गहरे विचारक भी थे। जेल में बैठकर उन्होंने पढ़ा, लिखा और सोचा। उनकी विचारधारा:

भगत सिंह ने नौजवान भारत सभा (1926) और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA, 1928) के माध्यम से युवाओं में वैज्ञानिक और समाजवादी चेतना जगाने का प्रयास किया। लाला लाजपत राय की साइमन कमीशन-विरोधी प्रदर्शन के दौरान लाठीचार्ज से मृत्यु (1928) के प्रतिशोध में उन्होंने सांडर्स की हत्या में भाग लिया। उनके अध्ययन में मार्क्स, लेनिन, बाकुनिन और अनेक अन्य विचारक सम्मिलित थे।

(अ) साम्राज्यवाद-विरोध

भगत सिंह न केवल ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोधी थे बल्कि समस्त साम्राज्यवाद के। उनका मानना था कि केवल ब्रिटिश शासन के अंत से भारत मुक्त नहीं होगा — पूँजीवादी शोषण का भी अंत आवश्यक है।

उनका विचार था कि वास्तविक स्वतंत्रता तभी होगी जब मनुष्य द्वारा मनुष्य का और एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण समाप्त हो। यदि गोरे शासकों की जगह केवल भारतीय शासक आ जाएँ और शोषण बना रहे, तो ऐसी स्वतंत्रता का कोई वास्तविक अर्थ नहीं।

(ब) समाजवाद

भगत सिंह मार्क्सवाद से प्रभावित थे। उन्होंने HSRA का लक्ष्य 'समाजवादी गणराज्य' रखा। वे मानते थे कि स्वतंत्रता के बाद भी यदि गरीब-अमीर की खाई बनी रही तो स्वतंत्रता अधूरी है।

समाजवाद के संबंध में भगत सिंह ने किसानों और मजदूरों के संगठन पर बल दिया। उनके अनुसार राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ आर्थिक न्याय, भूमि-सुधार और श्रमिकों के अधिकार भी सुनिश्चित किए जाने चाहिए।

(स) धर्म-निरपेक्षता

भगत सिंह ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' (Why I Am An Atheist, 1930) में ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न उठाया। वे धर्म को शोषण का औजार मानते थे।

भगत सिंह ने सांप्रदायिकता को राष्ट्रीय एकता का बड़ा शत्रु माना और 1928 में 'सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज' शीर्षक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने धर्म को राजनीति से अलग रखने तथा वर्ग-चेतना बढ़ाने पर जोर दिया।

(द) हिंदू-मुस्लिम एकता

काकोरी काण्ड में अशफाक उल्ला खाँ उनके साथी थे — यह प्रतीकात्मक था। HSRA में हिंदू-मुस्लिम-सिख सभी थे।

> बम और पिस्तौल क्रांति नहीं लाते।
> क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।
> जिंदगी तो अपने दम पर ही जी जाती है।
> दूसरों के कंधों पर तो जनाजे उठाए जाते हैं।
> — भगत सिंह

कुल मिलाकर भगत सिंह की विचारधारा में राष्ट्रवाद, समाजवाद और तर्कवाद का समन्वय था। वे हिंसा को अपना अंतिम लक्ष्य नहीं मानते थे; उनके अनुसार क्रांति का अर्थ अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन था। 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा उनके विचार का प्रतीक बना, जिसे उन्होंने आतंक के बजाय अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और परिवर्तन के अर्थ में समझाया।

3.5.3 असेंबली बम काण्ड (8 अप्रैल 1929)

8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय असेंबली) दिल्ली (में बम फेंके। उद्देश्य हत्या नहीं था — 'Public Safety Bill' और 'Trade Disputes Bill' के विरोध में 'बहरों को सुनाने के लिए' यह कदम उठाया गया। दोनों ने स्वयं को गिरफ्तार करवाया:

- बम फेंकने के बाद दोनों ने 'इन्कलाब जिंदाबाद' और 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' के नारे लगाए।
- पर्चे फेंके: 'It takes a loud voice to make the deaf hear.'
- मुकदमे में भगत सिंह ने बचाव पक्ष के वकील की सहायता लेने से इनकार किया।
- जेल में मुकदमा: भूख हड़ताल (116 दिन) — राजनीतिक बंदी का दर्जा माँगा।

3.5.4 भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव: 23 मार्च 1931

23 मार्च 1931 को लाहौर सेंट्रल जेल में भगत सिंह) 23 वर्ष(, राजगुरु) 22 वर्ष (और सुखदेव (23 वर्ष (को एक साथ फाँसी दी गई। यह दिन भारतीय इतिहास का एक अविस्मरणीय दिन बन गया:

> मरते-मरते भी मेरे दिल में यही ख्वाहिश होगी,
> आँखों में हो तस्वीर-ए-वतन, लब पर हो तेरा नाम।
> इन्कलाब जिंदाबाद — !वंदे मातरम्!
> — भगत सिंह की अंतिम चिट्ठी, 22 मार्च 1931

भगत सिंह की शहादत ने पूरे देश को झकझोर दिया। गाँधी-इरविन समझौते) मार्च 1931) के तुरंत बाद हुई यह फाँसी विवादास्पद रही — जनता ने सोचा था कि गाँधी इसे रोकेंगे।

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को लाहौर षड्यंत्र केस में फाँसी की सजा हुई। मुकदमे के दौरान भगत सिंह ने जेल में राजनीतिक कैदियों के साथ बेहतर व्यवहार की माँग के लिए लंबी भूख हड़ताल की (लगभग 116 दिन), जिसमें साथी क्रांतिकारी यतींद्रनाथ दास की 63 दिन के उपवास के बाद मृत्यु हो गई। फाँसी की सजा के विरुद्ध गाँधी ने वायसराय इरविन से अनुरोध किया, परंतु सफलता नहीं मिली।

3.5.5 चंद्रशेखर आजाद: 'आजाद' — जो कभी पकड़ा नहीं गया

चंद्रशेखर आजाद) 1906-1931) — वह क्रांतिकारी जिसने प्रण लिया था कि 'ब्रिटिश पुलिस मुझे जीवित नहीं पकड़ेगी।' और उन्होंने इसे 27 फरवरी 1931 को अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में सिद्ध किया — जब अंग्रेज पुलिस ने घेरा, तो आजाद ने अंतिम गोली स्वयं को मार ली:

चंद्रशेखर आजाद	विवरण
जन्म	23 जुलाई 1906; भावरा (मध्य प्रदेश(
नाम की कहानी	मजिस्ट्रेट के सामने नाम पूछा :'आजाद', पिता का नाम :'स्वतंत्रता', घर :'जेल'
काकोरी काण्ड	HSRA सदस्य; काकोरी में भाग लिया) 1925)
HSRA के मुख्य संयोजक	भगत सिंह के साथ; साण्डर्स हत्या में भागीदार
शहादत	27 फरवरी 1931; अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद; स्वयं को गोली मारी
नारा	'दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे'

3.6 अपनी प्रगति जाँचें — 2 (Check Your Progress — 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए) लगभग 50 शब्दों में:(

- □ खुदीराम बोस की उम्र फाँसी के समय कितनी थी और उनका क्या अपराध था?
- □ काकोरी षड्यंत्र) 1925) क्या था? इसमें किन्हें फाँसी दी गई?
- □ भगत सिंह ने असेंबली में बम क्यों फेंका था?
- □ चंद्रशेखर आजाद की शहादत किस प्रकार हुई?

3.7 सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज

3.7.1 नेताजी सुभाष चंद्र बोस: जीवन और संघर्ष

सुभाष चंद्र बोस) 23 जनवरी 1897 — 18 अगस्त 1945?) भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के सबसे करिश्माई और विवादास्पद नेताओं में से एक थे। वे ICS परीक्षा में चौथे स्थान पर उत्तीर्ण हुए परंतु देश-सेवा के लिए नौकरी छोड़ दी:

बोस का जीवन-क्रम	वर्ष	विवरण
ICS परीक्षा	1920	चौथा स्थान; नौकरी छोड़कर राष्ट्रवाद में आए
INC में प्रवेश	1921	C.R. दास के सहयोगी; बंगाल में संगठन
INC अध्यक्ष	1938, 1939	हरिपुरा) 1938) और त्रिपुरी) 1939) — गाँधी की इच्छा के विरुद्ध
फॉरवर्ड ब्लॉक	1939	INC से अलग; उग्र राष्ट्रवाद का मंच
पलायन	जनवरी 1941	काबुल होते हुए जर्मनी; 'महान पलायन'
जर्मनी	1941-43	हिटलर से मुलाकात; Free India Radio
सिंगापुर — INA	1943	'आजाद हिंद फौज' का नेतृत्व
'दिल्ली चलो'	1944	इम्फाल-कोहिमा अभियान
निधन) ?)	18 अगस्त 1945	ताइहोकू में विमान-दुर्घटना (विवादास्पद(

3.7.2 आजाद हिंद फौज (Indian National Army — INA)

'आजाद हिंद फौज' का गठन पहले 1942 में कैप्टन मोहन सिंह ने किंगापुर में किया था। 1943 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इसका नेतृत्व संभाला और इसे एक शक्तिशाली सेना बनाया:

INA की विशेषता	विवरण
स्थापना	1942 (मोहन सिंह(; 1943 में बोस द्वारा पुनर्गठन
सदस्यता	65,000+ सैनिक; ब्रिटिश-भारतीय युद्ध-बंदी + दक्षिण-पूर्व एशिया के भारतीय
'झाँसी की रानी' रेजिमेंट	महिला सैनिकों की रेजिमेंट — कैप्टन लक्ष्मी सहगल

अभियान	इम्फाल-कोहिमा (1944); 'दिल्ली चलो'
नारे	'जय हिंद', 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा'
INA का 'बैंक'	आजाद हिंद बैंक; सिंगापुर का भारतीय धन
पतन	अगस्त 1945 में जापान की पराजय; INA का विघटन
INA मुकदमे (1945-46)	लाल किले में मुकदमा; पूरे देश में आक्रोश

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
जब तक हम जीवित हैं, हम लड़ते रहेंगे।
स्वतंत्रता दी नहीं जाती — छीनी जाती है।
जय हिंद!
— नेताजी सुभाष चंद्र बोस — आजाद हिंद फौज

3.7.3 INA मुकदमे और उनका प्रभाव (1945-46)

युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार ने INA के अधिकारियों — कर्नल प्रेम कुमार सहगल, कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लों और मेजर जनरल शाह नवाज खान — पर लाल किले में मुकदमा चलाया। यह मुकदमा उल्टा पड़ा:

- पूरे देश में INA अधिकारियों के समर्थन में लहर।
- बचाव पक्ष के वकील: जवाहरलाल नेहरू, भूलाभाई देसाई, तेजबहादुर सपरू।
- INA के समर्थन में हिंदू-मुस्लिम-सिख — तीनों धर्मों के अधिकारी एक साथ।
- रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह (फरवरी 1946): INA मुकदमों से प्रेरित होकर नौसैनिकों ने विद्रोह किया।
- अंग्रेजों की समझ: अब भारतीय सेना पर भरोसा नहीं — सत्ता हस्तांतरण अनिवार्य।

3.8 अपनी प्रगति जाँचें — 3 (Check Your Progress — 3)

सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ	स्तम्भ-ब
भगत सिंह	'आजाद हिंद फौज' के संस्थापक
सुभाष चंद्र बोस	'असेंबली बम काण्ड' (1929)
चंद्रशेखर आजाद	'अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद' में शहादत
राम प्रसाद बिस्मिल	'सरफरोशी की तमन्ना' — काकोरी षड्यंत्र
खुदीराम बोस	भारत का सबसे युवा शहीद) 18 वर्ष, 1908)

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

□ INA के 'झाँसी की रानी' रेजिमेंट का नेतृत्व किसने किया?

□ 'दिल्ली चलो' का नारा किसने दिया था?

□ INA मुकदमों ने ब्रिटिश शासन को किस प्रकार कमजोर किया?

3.9 समाजवाद और वामपंथ: स्वतंत्रता का एक और मार्ग

3.9.1 भारत में वामपंथी राजनीति का उद्गम

1917 की रूसी क्रांति ने भारतीय राष्ट्रवादियों पर गहरा प्रभाव डाला। यदि रूस में क्रांति हो सकती है तो भारत में क्यों नहीं? — यह विचार एक नई राजनीतिक धारा का बीज बना। 1920 में मानबेंद्रनाथ राय) M.N. Roy) ने 'Communist Party of India' (CPI) की स्थापना की:

वामपंथी आंदोलन	स्थापना/नेता
CPI (1920)	M.N. Roy (ताशकंद में(
किसान सभा) 1936)	स्वामी सहजानंद सरस्वती
Congress Socialist Party (1934)	जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया

AITUC (1920)	लाला लाजपत राय) अध्यक्ष(
All India Kisan Sabha	1936 में INC के भीतर

3.9.2 एम.एन. राय और भारतीय साम्यवाद

मानबेंद्रनाथ राय) 1887-1954) भारतीय साम्यवाद के जनक थे। उन्होंने 1920 में ताशकंद में CPI की स्थापना की। लेनिन और कॉमिन्टर्न से उनका घनिष्ठ संबंध था। बाद में वे साम्यवाद से दूर होकर 'Radical Humanism' की ओर मुड़ गए।

एम.एन. राय (मूल नाम नरेंद्रनाथ भट्टाचार्य) कॉमिन्टर्न की द्वितीय कांग्रेस (1920) में भाग लेने वाले प्रमुख भारतीय थे, जहाँ उन्होंने उपनिवेशों के प्रश्न पर लेनिन से मतभेद के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए। भारत में साम्यवादी आंदोलन के प्रसार के लिए 1925 में कानपुर में कम्युनिस्ट सम्मेलन हुआ। ब्रिटिश सरकार ने 'कानपुर बोल्शेविक षड्यंत्र केस' (1924) और 'मेरठ षड्यंत्र केस' (1929) के माध्यम से साम्यवादियों का दमन किया।

3.9.3 जयप्रकाश नारायण और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी

जयप्रकाश नारायण) 'JP', 1902-1979) ने 1934 में कांग्रेस के भीतर 'Congress Socialist Party' (CSP) की स्थापना की। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जेल से भागकर उन्होंने भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व किया:

- CSP का उद्देश्य: INC के भीतर रहकर समाजवादी कार्यक्रम को बढ़ावा देना।
- 'समाजवाद' और 'राष्ट्रवाद' का समन्वय: 'हम साम्राज्यवाद और पूँजीवाद दोनों के विरोधी हैं।'
- 1942: जेल-तोड़ (Jail Break) — हजारीबाग जेल से भागकर भूमिगत आंदोलन।
- 1974 का 'संपूर्ण क्रांति': आपातकाल के विरोध में JP आंदोलन।

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के प्रमुख नेताओं में जयप्रकाश नारायण के साथ आचार्य नरेंद्र देव, राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन और अशोक मेहता शामिल थे। सी.एस.पी. ने कांग्रेस के भीतर किसान-मजदूरों के प्रश्नों को उठाया और बाद में स्वतंत्र भारत की समाजवादी राजनीति की आधारशिला रखी।

3.9.4 भारतीय महिलाएँ और स्वतंत्रता के वैकल्पिक मार्ग

स्वतंत्रता-संग्राम में महिलाओं की भागीदारी प्रायः उपेक्षित रही है। परंतु महिलाओं ने न केवल गाँधीवादी आंदोलनों में बल्कि क्रांतिकारी मार्ग में भी अपनी भूमिका निभाई:

महिला क्रांतिकारी	गतिविधि/योगदान
प्रीतिलता वाड्डेदार (1911-1932)	चटगाँव शस्त्रागार छापे में भागीदारी; सूर्यसेन की साथी; पहली महिला शहीद
कल्पना दत्त (1913-1995)	चटगाँव विद्रोह; सूर्यसेन के साथ; आजीवन कारावास
दुर्गावती देवी) भाभी(	भगत सिंह को बचाने में सहायता; बम बनाने में कुशल
सरोजिनी नायडू (1879-1949)	धरासना नमक-काण्ड नेतृत्व; प्रथम महिला INC अध्यक्ष) 1925)
लक्ष्मी सहगल (1914-2012)	INA की 'झाँसी की रानी' रेजिमेंट; कैप्टन
अरुणा आसफ अली (1909-1996)	1942 में मुंबई में तिरंगा फहराया; 'Grand Old Lady of Freedom'
सुचेता कृपलानी (1908-1974)	1942 आंदोलन; भूमिगत गतिविधियाँ; बाद में मुख्यमंत्री

3.10 अन्य क्रांतिकारी और क्षेत्रीय आंदोलन

3.10.1 चटगाँव विद्रोह (1930): सूर्यसेन का 'नाचते विद्रोह'

18 अप्रैल 1930 को मास्टर सूर्यसेन) 'मास्टर दा') के नेतृत्व में एक क्रांतिकारी दल ने चटगाँव) अब बांग्लादेश (में शस्त्रागार पर छापा मारा। इस विद्रोह की कुछ खास विशेषताएँ थीं:

- 62 युवाओं ने चटगाँव के दो शस्त्रागारों पर एक साथ छापा मारा।
- 'भारतीय गणराज्य' की घोषणा की — तिरंगा फहराया।
- 4 वर्ष की छापेमार लड़ाई के बाद 1933 में सूर्यसेन गिरफ्तार।
- 12 जनवरी 1934 को फाँसी।
- साथी: प्रीतिलता वाड्डेदार (1932 में आत्म-बलिदान), कल्पना दत्त।

चटगाँव विद्रोह में शामिल अनेक युवकों में अनंत सिंह, गणेश घोष, लोकनाथ बल और अंबिका चक्रवर्ती भी थे। यह घटना इसलिए महत्त्वपूर्ण थी कि इसमें किशोरों और महिलाओं ने भी सहभाग किया। प्रीतिलता वाड्डेदार ने 1932 में पहाड़तली यूरोपियन क्लब पर हमले का नेतृत्व किया और पकड़े जाने की स्थिति में आत्म-बलिदान कर दिया।

3.10.2 वासुदेव बलवंत फड़के: महाराष्ट्र का प्रथम क्रांतिकारी

वासुदेव बलवंत फड़के) 1845-1883) को 'महाराष्ट्र के प्रथम सशस्त्र क्रांतिकारी' माना जाता है। उन्होंने 1879 में 'रामोशी' जाति के लोगों को संगठित करके ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। 1879 में गिरफ्तार; 1883 में एडन में निधन।

फड़के ने 1879 में महाराष्ट्र में रामोशी, कोली और धनगर आदि वर्गों की सहायता से एक छोटी सशस्त्र टुकड़ी बनाई और सरकारी खजानों पर छापे मारे। गिरफ्तारी के बाद उन्हें आजीवन कारावास के रूप में अदन भेजा गया, जहाँ 1883 में उनकी मृत्यु हो गई। उनके संघर्ष की पृष्ठभूमि में दक्कन के अकाल और किसानों की दुर्दशा भी थी, और उन्हें महाराष्ट्र के भावी क्रांतिकारियों का प्रेरणा-स्रोत माना जाता है।

3.10.3 विनायक दामोदर सावरकर: 'वीर सावरकर'

विनायक दामोदर सावरकर) 1883-1966) भारतीय राष्ट्रवाद के एक विवादास्पद परंतु महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे:

सावरकर का योगदान	विवरण
अभिनव भारत (1904)	क्रांतिकारी संगठन; हथियार संग्रह
'1857 का स्वातंत्र्य समर'	1857 को पहला स्वतंत्रता-संग्राम बताया; ब्रिटेन में छपी) 1909)
लंदन से प्रत्यावर्तन	'मार्सेल्स कांड' (1910); ब्रिटिश जहाज से छलाँग; प्रसिद्ध प्रयास
काला पानी (1911-24)	अंडमान की जेल; 50 वर्ष की दोहरी सजा
हिंदुत्व की अवधारणा	'Hindutva' (1923) — हिंदू राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव
विवाद	माफीनामा; गाँधी-हत्या से कथित संबंध) अदालत ने बरी किया(

सावरकर 1909 में नासिक के कलेक्टर जैकसन की हत्या के मामले में आरोपी बने और 1911 में उन्हें 'काला पानी' (अंडमान की सेल्युलर जेल) भेजा गया। उनके जीवन के बाद के चरण --- अंग्रेजों से दया-याचिकाएँ, हिंदुत्व की विचारधारा और गाँधी

की हत्या के मामले में उन पर अभियोजन (जिसमें 1949 में वे बरी हुए) --- को लेकर इतिहासकारों में मतभेद हैं, इसलिए उनके मूल्यांकन में तथ्य और विचारधारात्मक दृष्टिकोण दोनों का ध्यान रखना चाहिए।

3.11 अपनी प्रगति जाँचें — 4 (Check Your Progress — 4)

(अ (रिक्त स्थान भरिए:

□ चटगाँव विद्रोह) 1930) का नेतृत्व _____ ने किया।

□ 'Congress Socialist Party' की स्थापना _____ और _____ ने 1934 में की।

□ CPI की स्थापना _____ ने _____ में ताशकंद में की।

□ INA की 'झाँसी की रानी' रेजिमेंट का नेतृत्व _____ ने किया।

(ब (दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए:

□ INA मुकदमों) 1945-46) ने भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम को किस प्रकार प्रभावित किया?

□ महिला क्रांतिकारियों में प्रीतिलता वाड्डेदार का क्या योगदान था?

3.12 क्रांतिकारी राष्ट्रवाद बनाम गाँधीवाद: तुलनात्मक अध्ययन

3.12.1 दो मार्गों की तुलना

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में दो प्रमुख धाराएँ — गाँधीवाद और क्रांतिकारी राष्ट्रवाद — समानांतर रूप से चलीं। दोनों का लक्ष्य एक था परंतु मार्ग भिन्न थे:

तुलना	गाँधीवाद	क्रांतिकारी राष्ट्रवाद	परिणाम
साधन	अहिंसा; सत्याग्रह	सशस्त्र विद्रोह; बम; बहिष्कार	दोनों ने मिलकर अंग्रेजों को कमजोर किया
जन-आधार	व्यापक जन-भागीदारी	मुख्यतः युवा; शिक्षित वर्ग	दोनों ने मिलकर व्यापक प्रभाव बनाया
नैतिक आधार	अहिंसा; प्रेम	'क्रांति'; बलिदान	दोनों नैतिक थे— भिन्न मापदंडों

			से
अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव	ब्रिटेन और विश्व में सहानुभूति	विश्व-जागृति; पुलिस-कार्रवाई की निंदा	दोनों ने अंतर्राष्ट्रीय राय बनाई
अंतिम परिणाम	1947 में स्वतंत्रता	INA मुकदमों ने अंतिम धक्का दिया	दोनों मिलकर सफल रहे

3.12.2 क्या 'वैकल्पिक मार्ग' वैकल्पिक थे या पूरक?

एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या गाँधीवाद और क्रांतिकारी राष्ट्रवाद 'विकल्प' थे या 'पूरक'? इतिहासकारों में इस पर मतभेद है:

- बिपिन चंद्र का मत: दोनों धाराएँ मिलकर 'मल्टी-क्लास मूवमेंट' बनाती थीं; एक ने दूसरे को कमजोर नहीं किया।
- सुमित सरकार का मत: क्रांतिकारी राष्ट्रवाद ने जनता में आत्म-विश्वास जगाया जिससे गाँधी के आंदोलन को बल मिला।
- गाँधी का दृष्टिकोण: भगत सिंह के साहस की प्रशंसा — 'वे महान देशभक्त हैं' — परंतु हिंसा से असहमति।
- भगत सिंह का दृष्टिकोण: गाँधी की 'यूटोपियन अहिंसा' से असहमति; समाजवादी क्रांति आवश्यक।

3.12.3 क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक मूल्यांकन

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का समग्र मूल्यांकन करना आवश्यक है:

पक्ष	मूल्यांकन
सकारात्मक :जन-प्रेरणा	भगत सिंह, खुदीराम जैसे शहीदों ने एक पीढ़ी को प्रेरित किया
सकारात्मक :अंग्रेजी दमन से लड़ाई	ब्रिटिश सरकार को यह समझाया कि भारतीय 'डरते नहीं'
सकारात्मक :INA का प्रभाव	INA मुकदमों ने 1947 में सत्ता-हस्तांतरण को अनिवार्य बनाया
सीमा :सशस्त्र विद्रोह की सीमाएँ	ब्रिटिश सैन्य-श्रेष्ठता के सामने सशस्त्र क्रांति सफल नहीं हो सकी

सीमा :संगठन का अभाव	व्यापक जन-आंदोलन खड़ा करने में असमर्थ
सीमा :विचारधारात्मक विभिन्नता	सभी क्रांतिकारी एकमत नहीं थे; सांप्रदायिकता का खतरा

3.13 सारांश (Summary)

इस अध्याय में 'क्रांतिकारी राष्ट्रवाद एवं स्वतंत्रता के वैकल्पिक मार्ग' का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. उग्रवाद का उदय (1905): बाल-पाल-लाल के नेतृत्व में उदारवाद की सीमाओं से असंतुष्ट युवा पीढ़ी ने एक नई राजनीतिक धारा शुरू की।
2. तिलक का योगदान: गणपति-शिवाजी उत्सव, केसरी पत्रिका, होम रूल लीग — तिलक ने राजनीति को जनता के दरवाजे तक पहुँचाया।
3. बंगाल की क्रांतिकारी परंपरा: अनुशीलन समिति, युगांतर, खुदीराम बोस, अरविंद घोष — बंगाल भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का केंद्र था।
4. काकोरी षड्यंत्र (1925): HSRA की पहली बड़ी कार्रवाई; राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ — शहादत का नया अध्याय।
5. भगत सिंह: असेंबली बम (1929), HSRA, समाजवादी विचार, 23 मार्च 1931 की शहादत — वे केवल क्रांतिकारी नहीं, विचारक भी थे।
6. चंद्रशेखर आजाद: 'आजाद' — जो कभी पकड़ा नहीं गया; 27 फरवरी 1931 को अल्फ्रेड पार्क में स्वयं को गोली मारी।
7. सुभाष चंद्र बोस: INA (1943), 'झाँसी की रानी' रेजिमेंट, 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो' — विदेशी धरती पर सशस्त्र मुक्ति-संग्राम।
8. INA मुकदमे (1945-46): लाल किले के मुकदमों ने पूरे देश को एकजुट किया और ब्रिटिश सत्ता को हिला दिया।
9. वामपंथी आंदोलन: CPI (1920), CSP (1934), किसान सभा — इन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम को आर्थिक न्याय से जोड़ा।
10. समग्र मूल्यांकन: क्रांतिकारी और गाँधीवादी धाराएँ एक-दूसरे की विरोधी नहीं, पूरक थीं — दोनों ने मिलकर 1947 की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

3.14 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
उग्रवाद (Extremism)	1905 के बाद कांग्रेस में वह धारा जो उदारवादी तरीकों से असंतुष्ट थी और जन-आंदोलन में विश्वास रखती थी
'लाल-बाल-पाल'	लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल — उग्रवाद की प्रमुख त्रयी
क्रांतिकारी राष्ट्रवाद	वह विचारधारा जो मानती थी कि स्वतंत्रता सशस्त्र प्रतिरोध और क्रांति से ही मिलेगी
अनुशीलन समिति	1902 में बंगाल में स्थापित प्रथम क्रांतिकारी संगठन; बम-निर्माण और शस्त्र-प्रशिक्षण
HSRA	Hindustan Socialist Republican Army — भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद द्वारा 1928 में गठित
काकोरी षड्यंत्र (1925)	HSRA सदस्यों द्वारा सरकारी ट्रेन से खजाना लूटने की क्रांतिकारी कार्रवाई
असेंबली बम काण्ड (1929)	8 अप्रैल 1929; भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय असेंबली में बम फेंके
INA (Indian National Army)	आजाद हिंद फौज— 1942 में मोहन सिंह; 1943 में बोस के नेतृत्व में पुनर्गठित
'झाँसी की रानी' रेजिमेंट	INA की महिला इकाई; कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में
चटगाँव विद्रोह (1930)	सूर्यसेन के नेतृत्व में; चटगाँव शस्त्रागार पर छापा; 'भारतीय गणराज्य' की घोषणा
CPI	Communist Party of India — 1920 में M.N. Roy द्वारा ताशकंद में स्थापित

Congress Socialist Party	1934 में JP नारायण और लोहिया द्वारा INC के भीतर समाजवादी गुट
'इन्कलाब जिंदाबाद'	'क्रांति अमर रहे' — भगत सिंह का नारा; क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का प्रतीक
INA मुकदमे (1945-46)	लाल किले में INA अधिकारियों पर मुकदमा; पूरे देश में आक्रोश; सत्ता-हस्तांतरण का अप्रत्यक्ष कारण
'तुम मुझे खून दो'	सुभाष चंद्र बोस का प्रसिद्ध आह्वान; आजाद हिंद फौज की भर्ती
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान

3.15 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए(

11. बाल गंगाधर तिलक के राष्ट्रीय योगदान की विस्तृत विवेचना कीजिए। उदारवादियों और उग्रवादियों में क्या मूलभूत अंतर था?
12. भगत सिंह की विचारधारा का विस्तृत विवेचन कीजिए। उनकी शहादत का भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम पर क्या प्रभाव पड़ा?
13. सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज (INA) की भूमिका का विस्तृत वर्णन कीजिए। INA मुकदमों का ऐतिहासिक महत्त्व बताइए।
14. क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और गाँधीवाद की तुलना कीजिए। क्या ये दोनों धाराएँ 'वैकल्पिक' थीं या 'पूरक'?

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए(

15. काकोरी षड्यंत्र (1925) क्या था? इसके नायकों का परिचय दीजिए।
16. चटगाँव विद्रोह (1930) की विशेषताएँ बताइए।
17. 'अनुशीलन समिति' का भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में क्या योगदान था?

18. भारतीय महिला क्रांतिकारियों में किन्हीं तीन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

19. वामपंथी आंदोलन का स्वतंत्रता-संग्राम में क्या योगदान था?

20. 'इन्कलाब जिंदाबाद' नारे का क्या अर्थ और महत्त्व है?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

सही विकल्प चुनिए:

21. 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' — यह किसने कहा? (अ) गाँधी (ब) तिलक (स) भगत सिंह (द) नेताजी

22. काकोरी षड्यंत्र किस वर्ष हुआ? (अ) 1919 (ब) 1921 (स) 1925 (द) 1929

23. भगत सिंह को फाँसी कब दी गई? (अ) 23 मार्च 1929 (ब) 23 मार्च 1930 (स) 23 मार्च 1931 (द) 23 मार्च 1932

24. 'आजाद हिंद फौज' का पुनर्गठन किसने किया? (अ) रास बिहारी बोस (ब) सुभाष चंद्र बोस (स) मोहन सिंह (द) लक्ष्मी सहगल

25. चटगाँव विद्रोह (1930) का नेतृत्व किसने किया? (अ) भगत सिंह (ब) राम प्रसाद बिस्मिल (स) सूर्यसेन (द) बारीन्द्र घोष

26. CPI (Communist Party of India) की स्थापना कब हुई? (अ) 1917 (ब) 1920 (स) 1925 (द) 1929

27. INA के मुकदमे कहाँ चले? (अ) बंबई (ब) कलकत्ता (स) मद्रास (द) लाल किला (दिल्ली)

3.16 अपनी प्रगति जाँचें — उत्तर (Answers to Check Your Progress)

3.3 के उत्तर:

(अ(रिक्त स्थान:

28. 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' — यह नारा 'बाल गंगाधर तिलक' ने दिया।

29. तिलक ने गणपति उत्सव '1893' ई. में और शिवाजी उत्सव '1895' ई. में प्रारंभ किया।

30. लाला लाजपत राय की मृत्यु 'साइमन' कमीशन विरोध के दौरान लाठीचार्ज से हुई।

31. 'लाल' = लाला लाजपत राय, 'बाल' = बाल गंगाधर तिलक, 'पाल' = बिपिन चंद्र पाल।

(ब(सही/गलत:

32. गलत (✗) — तिलक उग्रवादी (Extremist) राष्ट्रवादी थे, उदारवादी नहीं।

33. सही (✓) — 'केसरी' (मराठी) और 'मराठा' (अंग्रेजी) दोनों समाचार-पत्र तिलक ने प्रारंभ किए।

34. सही (✓) — लाला लाजपत राय ने 1921 में 'सर्वेंट्स ऑफ पीपल सोसाइटी' बनाई।

35. सही (✓) — सूरत अधिवेशन (1907) में INC का उदारवादी-उग्रवादी विभाजन हुआ।

3.6 के उत्तर:

36. खुदीराम बोस: फाँसी के समय उनकी उम्र 18 वर्ष थी। उन्होंने मुजफ्फरपुर में जज किंग्सफोर्ड की (समझी गई) गाड़ी पर बम फेंका था — वास्तव में दो महिलाएँ मारी गईं।

37. काकोरी षड्यंत्र (1925): 9 अगस्त 1925 को HSRA सदस्यों ने ट्रेन रोककर सरकारी खजाना लूटा। राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी को फाँसी दी गई।

38. असेंबली बम: भगत सिंह का उद्देश्य हत्या नहीं था — 'Public Safety Bill' के विरोध में 'बहरों को सुनाने के लिए' विस्फोट किया था ('It takes a loud voice to make the deaf hear')।

39. आजाद की शहादत: 27 फरवरी 1931 को अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में अंग्रेज पुलिस ने घेरा। पकड़े जाने से बचाने के लिए आजाद ने अंतिम गोली स्वयं को मारी।

3.8 के उत्तर (सही मिलान):

नाम	सही मिलान
भगत सिंह	'असेंबली बम काण्ड' (1929) — सही
सुभाष चंद्र बोस	'आजाद हिंद फौज' के संस्थापक) पुनर्गठन — (सही
चंद्रशेखर आजाद	'अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद' में शहादत — सही
राम प्रसाद बिस्मिल	'सरफरोशी की तमन्ना' — काकोरी षड्यंत्र — सही

खुदीराम बोस	भारत का सबसे युवा शहीद) 18 वर्ष, 1908) — सही

40. INA की 'झाँसी की रानी' रेजिमेंट का नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने किया।

41. 'दिल्ली चलो' का नारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने दिया था।

42. INA मुकदमों का प्रभाव: मुकदमे उल्टे पड़े — देश में INA के पक्ष में लहर उठी; हिंदू-मुस्लिम-सिख अधिकारियों की एकजुटता ने ब्रिटेन को यह संकेत दिया कि भारतीय सेना पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

3.11 के उत्तर:

43. चटगाँव विद्रोह (1930) का नेतृत्व 'सूर्यसेन' (मास्टर दा) ने किया।

44. Congress Socialist Party की स्थापना 'जयप्रकाश नारायण' और 'राम मनोहर लोहिया' ने 1934 में की।

45. CPI की स्थापना 'M.N. Roy (मानबेंद्रनाथ राय)' ने '1920' में ताशकंद में की।

46. INA की 'झाँसी की रानी' रेजिमेंट का नेतृत्व 'लक्ष्मी सहगल' ने किया।

47. INA मुकदमों का प्रभाव: पूरे देश में आक्रोश; नेहरू जैसे वरिष्ठ नेता बचाव में उतरे; रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह (1946); ब्रिटेन ने यह निष्कर्ष निकाला कि भारत पर शासन अब संभव नहीं।

48. प्रीतिलता वाड्डेदार: 1932 में सूर्यसेन के साथ पहाड़तली यूरोपियन क्लब पर हमला किया; गिरफ्तारी से बचने के लिए साइनाइड खाकर बलिदान दिया — भारत की प्रथम महिला क्रांतिकारी शहीद।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (3.15 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(ब (तिलक
2	(स (1925
3	(स (23 मार्च 1931
4	(ब (सुभाष चंद्र बोस

5	(स (सूर्यसेन
6	(ब (1920
7	(द (लाल किला) दिल्ली(

3.17 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री (References / Suggested Readings)

मूल ग्रंथ एवं प्राथमिक स्रोत:

- भगत सिंह — 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' (Why I Am An Atheist) और अन्य लेख
- भगत सिंह — जेल नोटबुक (Jail Notebook); सम्पूर्ण रचनाएँ
- वीर सावरकर — '1857 का स्वातंत्र्य समर' (हिंदी अनुवाद)
- सुभाष चंद्र बोस — An Indian Pilgrim (आत्मकथा); The Indian Struggle
- बाल गंगाधर तिलक — गीता रहस्य
- श्री अरविंद — Karmayogin; Bande Mataram

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- बिपिन चंद्र — 'स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष', Orient Blackswan
- सुमित सरकार — 'आधुनिक भारत 1885-1947', राजकमल प्रकाशन
- रामविलास शर्मा — 'भगत सिंह और उनके साथी', राजकमल प्रकाशन
- शिव वर्मा — 'संस्मृतियाँ' (HSRA और भगत सिंह पर)
- नरेंद्रनाथ सरकार — 'सुभाष चंद्र बोस: जीवन और कार्य' (हिंदी)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Bipan Chandra — India's Struggle for Independence, Penguin
- Sumit Sarkar — Modern India 1885-1947, Macmillan
- V.D. Savarkar — The Indian War of Independence 1857

- Leonard Gordon — Brothers Against the Raj (Sarat and Subhas Bose)
- Tilak Raj Sareen — Indian National Army: a Documentary Study, Agam Prakashan
- Kama Maclean — A Revolutionary History of Interwar India, Hurst Publishers

ऑनलाइन संसाधन:

- https://www.bhagatsing.org — भगत सिंह के लेखों का संग्रह
- https://www.netajipapers.gov.in — नेताजी से संबंधित दस्तावेज
- https://ncert.nic.in — NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तकें
- https://www.indianculture.gov.in — भारतीय संस्कृति पोर्टल
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in — भारतीय इतिहास पर शोध-प्रबंध
- https://www.education.gov.in/nep — NEP 2020 पोर्टल

॥ सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ॥

इन्कलाब जिंदाबाद — !वंदे मातरम्! — जय हिंद!

— राम प्रसाद बिस्मिल | भगत सिंह | सुभाष चंद्र बोस

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : C24MIC112T	**AUTHOR : DR. SANDEEP BISHNOI**
LESSON NO : 4	**VATTER :** DR. DHARAMBIR

अध्याय – 4

सांप्रदायिक राजनीति एवं भारत विभाजन की ओर बढ़ते कदम

Communal Politics and the Steps Towards Partition of India

अनुभाग **विषय-वस्तु**

4.0 अधिगम उद्देश्य (8 बिंदु)

4.1 प्रस्तावना

4.2 सांप्रदायिकता: अवधारणा और उद्गम

4.2.1 4 इतिहासकारों के दृष्टिकोण (तालिका) + 3 स्तर

4.2.2 उद्गम के कारण — ब्रिटिश नीति, जनगणना, आर्थिक, प्रेस

4.3 Check Your Progress — 1

4.4 अलीगढ़ आंदोलन और मुस्लिम लीग

4.4.1 सर सैयद अहमद खान — 6 योगदानों की तालिका + उद्धरण

4.4.2 मुस्लिम लीग (1906) — **Teal** रंग तालिका (8 तथ्य)

4.4.3 लखनऊ समझौता (1916)

4.4.4 जिन्ना का विकास — **Brown** रंग तालिका (6 चरण) + उद्धरण

4.5 Check Your Progress — 2

4.6 हिंदू महासभा, RSS और हिंदुत्व

4.6.1 हिंदू महासभा (1915) — 7 तथ्यों की तालिका

अनुभाग **विषय-वस्तु**

4.6.2 सावरकर और हिंदुत्व (1923)

4.6.3 RSS (1925) — तालिका

4.6.4 हिंदू vs मुस्लिम सांप्रदायिकता — तुलनात्मक तालिका

4.7 सांप्रदायिक पंचाट से पाकिस्तान प्रस्ताव

4.7.1 सांप्रदायिक पंचाट (1932)

4.7.2 1937 के चुनाव और दरार

4.7.3 लाहौर प्रस्ताव (1940) — **Maroon** रंग तालिका + जिन्ना का उद्धरण

4.8 Check Your Progress — 3

4.9 विभाजन की ओर 1946-47

4.9.1 Cabinet Mission Plan (1946) — Groups A/B/C तालिका

4.9.2 डायरेक्ट एक्शन डे — **Red** रंग तालिका

4.9.3 1946 के चुनाव और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण

4.9.4 माउंटबेटन योजना — **Green** रंग तालिका + गाँधी उद्धरण

4.10 Check Your Progress — 4

4.11 भारत-विभाजन के परिणाम

4.11.1 शरणार्थी-संकट (1.5 करोड़ विस्थापित)

4.11.2 सांप्रदायिक हिंसा

4.11.3 गाँधी की हत्या (30 जनवरी 1948) + नेहरू उद्धरण

4.12 विभाजन का इतिहासलेखन (6 दृष्टिकोण + उर्वशी बुटालिया)

अनुभाग **विषय-वस्तु**

4.13 सारांश (10 बिंदु)

4.14 शब्दावली (17 शब्द)

4.15 Self-Assessment Test (4 दीर्घ + 6 लघु + 7 वस्तुनिष्ठ)

4.16 Answers to Check Your Progress

4.17 References / Suggested Readings

4.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे:

- भारत में सांप्रदायिकता की अवधारणा, उसके उद्गम और ऐतिहासिक विकास-क्रम को समझ सकेंगे।
- अलीगढ़ आंदोलन, मुस्लिम लीग की स्थापना (1906) और 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के विकास की विवेचना कर सकेंगे।
- हिंदू महासभा, RSS और 'हिंदुत्व' की राजनीति के उदय और स्वतंत्रता-संग्राम पर उसके प्रभाव को समझ सकेंगे।
- सांप्रदायिक पंचाट (1932), लखनऊ समझौता (1916) जैसी घटनाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- मुहम्मद अली जिन्ना के राजनीतिक विकास और 'पाकिस्तान प्रस्ताव' (1940) की पृष्ठभूमि को जान सकेंगे।
- Cabinet Mission Plan (1946) और 'डायरेक्ट एक्शन डे' के परिणामों की विवेचना कर सकेंगे।
- माउंटबेटन योजना (1947) और भारत-विभाजन के परिणामों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- भारत-विभाजन के इतिहासलेखन और विभिन्न व्याख्याओं का समालोचनात्मक परीक्षण कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

15 अगस्त 1947 — भारत की स्वतंत्रता का दिन। परंतु यह स्वतंत्रता अपने साथ एक अभूतपूर्व त्रासदी भी लेकर आई — भारत का विभाजन, जिसमें लाखों लोग मारे गए, करोड़ों विस्थापित हुए और एक सभ्यता दो टुकड़ों में बाँट गई। यह विभाजन इतिहास के सबसे दर्दनाक अध्यायों में से एक है।

भारत-विभाजन केवल एक दिन में नहीं हुआ। यह एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम था जिसकी जड़ें 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'सांप्रदायिकता' (Communalism) के उदय में थीं। 'सांप्रदायिकता' वह विचारधारा है जो धार्मिक पहचान को राजनीतिक पहचान से जोड़ती है और यह मानती है कि अलग-अलग धर्मों के लोगों के हित परस्पर विरोधी हैं।

इस अध्याय में हम देखेंगे कि किस प्रकार सांप्रदायिक राजनीति धीरे-धीरे विकसित हुई, मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा जैसे संगठनों ने किस प्रकार भारतीय राजनीति को 'हिंदू' और 'मुस्लिम' खेमों में बाँटा, जिन्ना के 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' ने किस प्रकार पाकिस्तान की माँग को जन्म दिया, और अंततः 1947 में विभाजन कैसे हुआ।

यह अध्ययन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि सांप्रदायिकता और उसके परिणाम आज भी भारत और पाकिस्तान दोनों देशों की राजनीति को प्रभावित करते हैं।

4.2 सांप्रदायिकता: अवधारणा और उद्गम

4.2.1 सांप्रदायिकता क्या है?

'सांप्रदायिकता' (Communalism) एक जटिल राजनीतिक-सामाजिक अवधारणा है। इसे समझने के लिए विभिन्न इतिहासकारों के दृष्टिकोणों को देखना आवश्यक है:

इतिहासकार	सांप्रदायिकता की परिभाषा	मूल तर्क
बिपिन चंद्र	एक विचारधारा जो धर्म को राजनीतिक पहचान का आधार बनाती है	धार्मिक समुदायों के हित परस्पर विरोधी नहीं —यह मिथक है
ज्ञानेंद्र पाण्डेय	'Colonial Divide and Rule' की उपज	ब्रिटिश नीतियों ने सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया
अयेशा जलाल	मुस्लिम राजनीति का बुद्धिमान खेल	जिन्ना की माँगें सौदेबाजी थीं, पाकिस्तान अनिवार्य नहीं था
पार्थ चटर्जी	राष्ट्रवाद के अंतर्विरोधों की उपज	हिंदू-वर्चस्व के विरुद्ध मुस्लिम प्रतिक्रिया

सांप्रदायिकता के तीन स्तर:

- प्रथम स्तर: यह विश्वास कि एक ही धर्म के अनुयायियों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हित एक हैं।
- द्वितीय स्तर: यह विश्वास कि एक धर्म के हित दूसरे धर्म से भिन्न हैं।

- तृतीय स्तर: यह विश्वास कि एक धर्म के हित दूसरे धर्म के हितों के साथ असंगत और विरोधी हैं।

4.2.2 भारत में सांप्रदायिकता के उद्गम के कारण

भारत में सांप्रदायिकता की जड़ें 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में थीं। इसके उदय के पीछे अनेक कारण थे:

सांप्रदायिकता भारतीय समाज में स्वाभाविक रूप से मौजूद कोई स्थायी विभाजन नहीं थी; यह आधुनिक काल की औपनिवेशिक राजनीति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और पहचान की राजनीति का परिणाम थी। मध्यकाल में हिंदू-मुस्लिम मेल-जोल और सांस्कृतिक समन्वय (भक्ति, सूफी परंपरा, साझी भाषा-संस्कृति) के उदाहरण भी बहुत हैं। इसलिए इसके उद्गम को समझने के लिए नीचे दिए गए कारकों को संयुक्त रूप से देखना आवश्यक है।

(अ) ब्रिटिश 'फूट डालो और राज करो' नीति

ब्रिटिश सरकार ने जानबूझकर हिंदू-मुस्लिम भेद को बढ़ावा दिया। 1857 के बाद अंग्रेजों ने विभिन्न धर्म-आधारित निर्वाचन-क्षेत्र बनाए, अलग-अलग कानून बनाए और दोनों समुदायों को एक-दूसरे से डराया।

बंगाल-विभाजन (1905), 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार में मुसलमानों के लिए पृथक् निर्वाचन और 1932 के सांप्रदायिक पंचाट जैसे कदमों ने सांप्रदायिक राजनीति को संस्थागत रूप दिया। इतिहासकार यह भी मानते हैं कि केवल ब्रिटिश नीति को ही दोष देना अपर्याप्त है, क्योंकि स्थानीय स्तर पर भारतीय नेताओं और संगठनों ने भी सांप्रदायिक भावनाओं का प्रयोग किया।

(ब) जनगणना और 'धर्म-आधारित' सांख्यिकी

1871 से शुरू हुई ब्रिटिश जनगणना ने पहली बार लोगों को 'हिंदू', 'मुस्लिम', 'ईसाई' आदि के खानों में बाँटा। इससे धार्मिक पहचान की राजनीतिक चेतना बढ़ी।

जनगणना में धर्म, जाति और भाषा के आधार पर गणना से सामुदायिक संख्या का राजनीतिक महत्त्व बढ़ा, क्योंकि नौकरियों और प्रतिनिधित्व में हिस्सेदारी की माँग का आधार जनसंख्या बन गया। इससे विभिन्न समुदायों में 'बहुसंख्यक' और 'अल्पसंख्यक' की चेतना सुदृढ़ हुई।

(स) आर्थिक प्रतिस्पर्धा

सरकारी नौकरियों और शिक्षा में सीमित अवसरों के कारण हिंदू और मुस्लिम मध्यवर्ग में प्रतिस्पर्धा बढ़ी। इस प्रतिस्पर्धा को धार्मिक रंग दे दिया गया।

उत्तर भारत में शिक्षा और सरकारी नौकरियों में सीमित अवसरों के कारण विभिन्न समुदायों के मध्यवर्ग में 'हिस्सेदारी' का प्रश्न उभरा, जिसे कभी-कभी सांप्रदायिक रंग दे दिया गया। इसके अतिरिक्त ज़मींदार-किसान और साहूकार-किसान संघर्षों को भी कुछ क्षेत्रों में धार्मिक रंग देने के प्रयास हुए।

(द) प्रेस और साहित्य का योगदान

उर्दू-हिंदी विवाद, गाय-रक्षा आंदोलन) 1880s), मस्जिद के सामने संगीत बजाने के विवाद — इन सभी ने सांप्रदायिक तनाव को बढ़ाया।

इन सभी कारकों के साथ पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों, धार्मिक पहचान-आधारित संगठनों (जैसे शुद्धि, तबलीग और तंजीम आंदोलन) और साहित्य में अतीत के संघर्षों की एकपक्षीय व्याख्या ने भी सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ाया। अतः सांप्रदायिकता को एक जटिल, बहुकारणीय प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए।

4.3 अपनी प्रगति जाँचें — 1 (Check Your Progress — 1)

(अ (रिक्त स्थान भरिए:

□ सांप्रदायिकता वह विचारधारा है जो _____ पहचान को _____ पहचान से जोड़ती है।

□ 'फूट डालो और राज करो' नीति _____ शासन की नीति थी।

□ ब्रिटिश जनगणना _____ ई .से शुरू हुई जिसने लोगों को धर्म के आधार पर वर्गीकृत किया।

□ बिपिन चंद्र के अनुसार सांप्रदायिकता _____ के हितों को विरोधी मानने की विचारधारा है।

(ब (सही (✓) या गलत (✗) बताइए:

□ सांप्रदायिकता एक प्राकृतिक और अपरिहार्य घटना है। ( )

□ ब्रिटिश नीतियों ने भारत में हिंदू-मुस्लिम विभाजन को बढ़ावा दिया। ( )

□ 'धर्म-आधारित' जनगणना ने धार्मिक राजनीतिक पहचान को मजबूत किया। ( )

□ सांप्रदायिकता केवल मुस्लिम समाज में पाई जाती थी। ( )

4.4 अलीगढ़ आंदोलन और मुस्लिम लीग की स्थापना

4.4.1 सर सैयद अहमद खान और अलीगढ़ आंदोलन

सर सैयद अहमद खान) 1817-1898) भारतीय मुसलमानों के आधुनिकीकरण के सबसे प्रभावशाली प्रवर्तक थे। उन्होंने 1875 में अलीगढ़ में 'मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज' (MAO College) की स्थापना की:

सर सैयद अहमद खान का योगदान	विवरण
MAO College (1875)	मुसलमानों को आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा; ICS परीक्षा की तैयारी
INC विरोध	INC को 'हिंदू संगठन' बताया; मुसलमानों को दूर रखा
'हिंदुस्तान एक राष्ट्र नहीं'	पहली बार 'द्वि-राष्ट्र' की बात — परंतु सहयोग की वकालत
ब्रिटिश-वफादारी	मुसलमानों को ब्रिटिश सरकार के साथ रहने का परामर्श
Scientific Society (1864)	पाश्चात्य ज्ञान का उर्दू में अनुवाद
मुस्लिम पहचान	मुसलमानों की अलग राजनीतिक पहचान की नींव रखी

> हिंदू और मुसलमान एक ही राज्य में नहीं रह सकते जहाँ एक बहुसंख्यक हो।
> यदि हिंदुस्तान में सरकार लोकतांत्रिक हुई तो मुसलमान अल्पसंख्यक होंगे।
> — सर सैयद अहमद खान — 1888 (परवर्ती विचार(

4.4.2 मुस्लिम लीग की स्थापना (1906)

30 दिसंबर 1906 को ढाका में 'ऑल इंडिया मुस्लिम लीग' (All India Muslim League) की स्थापना हुई। यह भारतीय राजनीति का एक ऐतिहासिक मोड़ था:

मुस्लिम लीग— स्थापना तथ्य	विवरण
स्थापना तिथि	30 दिसंबर 1906
स्थान	ढाका) अब बांग्लादेश(
संस्थापक	आगा खान तृतीय, नवाब सलीमुल्ला) ढाका के नवाब(
प्रारम्भिक अध्यक्ष	आगा खान तृतीय

उद्देश्य	मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा; ब्रिटिश-वफादारी
पृष्ठभूमि	1906 में वायसराय मिंटो से 'शिमला प्रतिनिधिमंडल'; पृथक् निर्वाचन की माँग
प्रारम्भिक स्वरूप	अभिजात वर्गीय; जमींदार और नवाबों का संगठन
लक्ष्य बदलाव	1913 में जिन्ना के प्रभाव से 'स्वशासन' की माँग जोड़ी गई

1909 में 'मार्ले-मिंटो सुधार' ने मुसलमानों को पृथक् निर्वाचन) Separate Electorate) दे दिया — यह सांप्रदायिक राजनीति की सबसे बड़ी ब्रिटिश देन थी। मुसलमान अब केवल मुस्लिम उम्मीदवारों को वोट देंगे — इससे हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक पहचान कानूनी रूप से अलग हो गई।

4.4.3 लखनऊ समझौता (1916): एकता का क्षणिक प्रयास

1916 में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच 'लखनऊ समझौता' हुआ। यह तिलक और जिन्ना की मध्यस्थता से संभव हुआ:

- कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए पृथक् निर्वाचन को मान्यता दी।
- मुस्लिम लीग ने INC के 'स्वशासन' के लक्ष्य को समर्थन दिया।
- यह एकता क्षणिक थी — खिलाफत आंदोलन (1919-24) के बाद फिर से दरार आई।
- जिन्ना को 'हिंदू-मुस्लिम एकता का दूत' (Ambassador of Hindu-Muslim Unity) कहा गया।

लखनऊ समझौते के साथ 1907 के सूरत विभाजन के बाद कांग्रेस के 'नरमदल' और 'गरमदल' भी पुनः एक हुए। समझौते में प्रांतीय विधान परिषदों में मुसलमानों के लिए अलग प्रतिनिधित्व और कुछ प्रांतों में उनकी सीटों का अनुपात तय हुआ। आलोचकों के अनुसार इससे पृथक् निर्वाचन की व्यवस्था को कांग्रेस की स्वीकृति मिल गई, जिसका दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा।

4.4.4 मुहम्मद अली जिन्ना: एक राजनीतिक विकास-यात्रा

मुहम्मद अली जिन्ना) 1876-1948) भारतीय राजनीति का सबसे विवादास्पद व्यक्तित्व हैं। उनका राजनीतिक विकास एक जटिल यात्रा है:

चरण	काल	विचार और भूमिका
राष्ट्रवादी	1906-1920	INC सदस्य; 'हिंदू-मुस्लिम एकता के दूत'; तिलक के मित्र
INC से दूरी	1920	गाँधी की जन-राजनीति से असहमति; खिलाफत विरोध
मुस्लिम लीग में वापसी	1934	पाकिस्तान की माँग से पहले; अभी भी 'संघीय समाधान' की इच्छा
'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत'	1940	पाकिस्तान प्रस्ताव; 'हिंदू और मुस्लिम दो अलग राष्ट्र हैं'
विभाजन-वार्ता	1946-47	Cabinet Mission से मतभेद; डायरेक्ट एक्शन; माउंटबेटन
पाकिस्तान के जनक	1947	पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर-जनरल; 11 अगस्त 1947 का भाषण

> हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग धार्मिक दर्शन हैं,
> सामाजिक रीति-रिवाज हैं और साहित्य हैं।
> वे न तो आपस में विवाह करते हैं और न खाना खाते हैं।
> वास्तव में वे दो अलग सभ्यताओं से संबंधित हैं।
> — मुहम्मद अली जिन्ना — पाकिस्तान प्रस्ताव भाषण, 1940

4.5 अपनी प्रगति जाँचें — 2 (Check Your Progress — 2)

संक्षिप्त उत्तर दीजिए) लगभग 50 शब्दों में:(

- ☐ सर सैयद अहमद खान ने भारतीय राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया?
- ☐ मुस्लिम लीग की स्थापना कब, कहाँ और किन परिस्थितियों में हुई?
- ☐ 'मार्ले-मिंटो सुधार' (1909) ने सांप्रदायिक राजनीति को कैसे बढ़ावा दिया?
- ☐ जिन्ना को प्रारंभ में 'हिंदू-मुस्लिम एकता का दूत' क्यों कहा जाता था?

4.6 हिंदू महासभा, RSS और 'हिंदुत्व' की राजनीति

4.6.1 हिंदू महासभा: उदय और विचारधारा

हिंदू सांप्रदायिकता का संगठित रूप 'हिंदू महासभा' के रूप में सामने आया। 1915 में हरिद्वार में हिंदू महासभा का गठन हुआ। इसकी विचारधारा थी कि भारत 'हिंदू राष्ट्र' है और हिंदुओं के विशेष अधिकार हैं:

हिंदू महासभा — मुख्य तथ्य	विवरण
स्थापना	1915; हरिद्वार; पंडित मदन मोहन मालवीय प्रमुख
प्रमुख नेता	विनायक दामोदर सावरकर (1937 से अध्यक्ष(
विचारधारा	'हिंदुत्व'; हिंदू राष्ट्रवाद; 'भारत हिंदुओं का देश'
मुस्लिम-विरोध	पृथक् निर्वाचन का विरोध; मुस्लिम तुष्टीकरण की आलोचना
शुद्धि आंदोलन	धर्म-परिवर्तित हिंदुओं को वापस लाने का प्रयास
INC से संबंध	INC की 'सेकुलर' नीतियों की आलोचना; 'हिंदू हित उपेक्षित'
स्वतंत्रता-संग्राम	INC के समानांतर; भारत छोड़ो से दूरी

4.6.2 वी.डी. सावरकर और 'हिंदुत्व'

विनायक दामोदर सावरकर) 1883-1966) ने 1923 में 'Hindutva: Who is a Hindu?' लिखी — यह हिंदू राष्ट्रवाद का वैचारिक आधार बनी:

- 'हिंदुत्व' की परिभाषा: जो भारत को 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' दोनों मानता हो — वह हिंदू है।
- मुसलमानों और ईसाइयों की स्थिति: उनकी 'पुण्यभूमि' अरब/रोम में है, इसलिए वे पूरी तरह भारतीय नहीं।
- 'हिंदू-राष्ट्र': भारत स्वाभाविक रूप से हिंदू राष्ट्र है।

हिंदुत्व की अवधारणा सावरकर ने जेल में लिखी (1922-23) और 1923 में प्रकाशित हुई। उन्होंने इसमें 'हिंदू' को केवल धर्म नहीं, बल्कि भौगोलिक, जातीय और सांस्कृतिक पहचान के रूप में परिभाषित किया। इस विचार की आलोचना इस आधार पर

की गई कि यह बहु-धार्मिक भारत की समावेशी राष्ट्रवाद की धारणा से भिन्न थी, जबकि समर्थक इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति मानते हैं।

4.6.3 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS): स्थापना और विकास

1925 में डॉ .केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' (RSS) की स्थापना की:

RSS	विवरण	विशेषता
स्थापना	1925; नागपुर	डॉ .के.बी .हेडगेवार
उद्देश्य	हिंदू समाज का संगठन और शक्तिवर्धन	'शाखा' प्रणाली
विचारधारा	'हिंदुत्व'; सामाजिक अनुशासन	M.S. गोलवलकर का प्रभाव
स्वतंत्रता-संग्राम	INC के आंदोलनों से दूरी	'चरित्र-निर्माण' पर ध्यान
गाँधी-हत्या	1948 में RSS पर प्रतिबंध (बाद में हटाया(	नाथूराम गोडसे RSS का पूर्व सदस्य
जनसंघ	1951 में श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने राजनीतिक विंग बनाया	BJP का पूर्वज

RSS की शाखाएँ शारीरिक प्रशिक्षण, अनुशासन और वैचारिक प्रशिक्षण पर आधारित थीं। संघ ने स्वयं को सांस्कृतिक संगठन बताया तथा संगठन के रूप में कांग्रेस के नेतृत्व वाले आंदोलनों से दूरी रखी। 1940 में हेडगेवार के निधन के बाद एम.एस. गोलवलकर संघ के सरसंघचालक बने।

4.6.4 हिंदू और मुस्लिम सांप्रदायिकता: समानताएँ

यह ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि सांप्रदायिकता केवल एक धर्म की समस्या नहीं थी। हिंदू और मुस्लिम दोनों सांप्रदायिकताएँ एक-दूसरे को पोषित करती थीं:

पक्ष	हिंदू सांप्रदायिकता	मुस्लिम सांप्रदायिकता
संगठन	हिंदू महासभा, RSS	मुस्लिम लीग
विचारधारा	'हिंदू राष्ट्र'; हिंदुत्व	'द्वि-राष्ट्र'; पाकिस्तान

नेता	सावरकर, हेडगेवार	जिन्ना, लियाकत अली
INC से संबंध	INC की 'धर्मनिरपेक्षता' विरोध	INC को 'हिंदू संगठन' बताया
परिणाम	भारत में हिंदुत्व की राजनीति	पाकिस्तान
समानता	दोनों ने विभाजन को अपरिहार्य बनाया	दोनों ने जन-एकता को कमजोर किया

विद्वानों के अनुसार दोनों सांप्रदायिकताएँ एक-दूसरे की प्रतिक्रिया में विकसित हुईं और बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक के भय को राजनीतिक संसाधन के रूप में प्रयोग किया गया। बिपन चंद्र जैसे इतिहासकार सांप्रदायिकता को आधुनिक राजनीतिक विचारधारा मानते हैं, जो इस मान्यता पर आधारित है कि एक धर्म के अनुयायियों के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हित समान और दूसरे धर्म के अनुयायियों से भिन्न होते हैं।

4.7 सांप्रदायिक पंचाट से पाकिस्तान प्रस्ताव तक

4.7.1 सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award, 1932)

अगस्त 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्से मैकडोनाल्ड ने 'सांप्रदायिक पंचाट' की घोषणा की। इसमें मुसलमानों और दलितों को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिया गया। गाँधी ने इसके विरोध में अनशन किया और 'पूना पैक्ट' से दलितों का मामला सुलझा, परंतु मुस्लिम पृथक् निर्वाचन बना रहा:

सांप्रदायिक पंचाट	विवरण
घोषणा	अगस्त 1932; रैम्से मैकडोनाल्ड
प्रावधान	मुसलमान, सिख, ईसाई, दलित — सभी को पृथक् निर्वाचन
गाँधी का विरोध	दलितों के पृथक् निर्वाचन पर अनशन; 'पूना पैक्ट' (1932)
मुस्लिम पृथक् निर्वाचन	बना रहा — हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक विभाजन गहरा हुआ
प्रभाव	प्रांतीय विधान सभाओं में धर्म-आधारित आरक्षण कानूनी हो गया

आलोचना	बिपिन चंद्र :'इससे सांप्रदायिकता को सांस्थानिक आधार मिला'

4.7.2 1937 के चुनाव और कांग्रेस-लीग में दरार

1937 में प्रांतीय विधान सभाओं के चुनाव में INC ने भारी जीत दर्ज की — 11 में से 8 प्रांतों में सरकार बनाई। मुस्लिम लीग का प्रदर्शन खराब रहा। परंतु इन चुनावों के बाद कांग्रेस और लीग के बीच दरार और बढ़ गई:

- कांग्रेस ने संयुक्त प्रान्त (UP) में लीग के साथ सरकार बनाने से इनकार किया।
- जिन्ना ने कहा: 'कांग्रेस के मुस्लिम नेता लीग के नहीं, कांग्रेस के प्रतिनिधि हैं।'
- लीग ने 'मुसलमानों पर अत्याचार' की रिपोर्ट (Pirpur Report) जारी की।
- जिन्ना ने कांग्रेस को 'हिंदू कांग्रेस' कहना शुरू किया।

4.7.3 पाकिस्तान प्रस्ताव (23 मार्च 1940) — 'लाहौर प्रस्ताव'

23 मार्च 1940 को लाहौर में मुस्लिम लीग के वार्षिक अधिवेशन में ऐतिहासिक 'पाकिस्तान प्रस्ताव' पारित किया गया:

लाहौर प्रस्ताव (1940)	विवरण
तिथि	23 मार्च 1940
स्थान	लाहौर) अब पाकिस्तान(
प्रस्तुतकर्ता	ए.के .फजलुल हक) बंगाल के मुख्यमंत्री(
मुख्य माँग	मुस्लिम बहुल उत्तर-पश्चिम और पूर्वी क्षेत्रों में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना
'पाकिस्तान' शब्द	प्रस्ताव में नहीं था — बाद में मीडिया ने यह नाम दिया
जिन्ना का तर्क	'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' — हिंदू और मुसलमान दो अलग राष्ट्र
प्रतिक्रिया	INC ने अस्वीकार किया; गाँधी ने 'विवेकहीन माँग' कहा
महत्त्व	विभाजन को वैचारिक आधार; मुस्लिम लीग का आधिकारिक लक्ष्य

> हिंदू और मुसलमान दो अलग राष्ट्र हैं
> जो इतिहास, परंपरा, संस्कृति और भाषा में भिन्न हैं।
> उन्हें एक राज्य में बाँधना दोनों के लिए घातक होगा।
> — जिन्ना — लाहौर प्रस्ताव, 23 मार्च 1940

4.8 अपनी प्रगति जाँचें — 3 (Check Your Progress — 3)

सही मिलान कीजिए:

स्तम्भ-अ) घटना/व्यक्ति(	स्तम्भ-ब) तिथि/विवरण(
मुस्लिम लीग की स्थापना	1925; नागपुर; हेडगेवार
लखनऊ समझौता	30 दिसंबर 1906; ढाका
RSS की स्थापना	1932; रैम्से मैकडोनाल्ड
सांप्रदायिक पंचाट	1916; तिलक-जिन्ना मध्यस्थता
लाहौर प्रस्ताव	23 मार्च 1940; 'पाकिस्तान' की माँग

एक वाक्य में उत्तर दीजिए:

□ 'पाकिस्तान' शब्द किसने और कब गढ़ा था?

□ 1937 के चुनाव में INC ने कितने प्रांतों में सरकार बनाई?

□ हिंदू महासभा की स्थापना कब और कहाँ हुई थी?

4.9 विभाजन की ओर: 1946-1947

4.9.1 Cabinet Mission Plan (1946) और उसकी विफलता

फरवरी 1946 में ब्रिटिश सरकार ने भारत की स्वतंत्रता के लिए 'Cabinet Mission' भेजा। इसमें पेथिक-लॉरेंस, स्टैफोर्ड क्रिप्स और ए.वी .अलेक्जेंडर थे। Cabinet Mission Plan में एक संघीय भारत का प्रस्ताव था:

Cabinet Mission Plan की मुख्य विशेषता	विवरण
संघीय ढाँचा	तीन स्तरीय — केंद्र, प्रांतीय समूह, प्रांत
Group A	हिंदू बहुल प्रांत — बंबई, मद्रास, UP, CP, बिहार, उड़ीसा
Group B	मुस्लिम बहुल उत्तर-पश्चिम — पंजाब, NWFP, सिंध, बलूचिस्तान
Group C	मुस्लिम बहुल पूर्व — बंगाल, असम
केंद्र के विषय	रक्षा, विदेश, संचार
INC की स्वीकृति	सशर्त स्वीकृति— परंतु Grouping की व्याख्या पर आपत्ति
लीग की प्रतिक्रिया	पहले स्वीकृति; बाद में INC के रुख से नाराज होकर अस्वीकृति
परिणाम	असफलता; सीधी कार्रवाई (Direct Action) का निर्णय

4.9.2 डायरेक्ट एक्शन डे (16 अगस्त 1946): 'कलकत्ता का नरक'

Cabinet Mission की विफलता के बाद जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को 'डायरेक्ट एक्शन डे' (Direct Action Day) घोषित किया। यह भारत-विभाजन के मार्ग का सबसे काला अध्याय था:

डायरेक्ट एक्शन डे	विवरण
तिथि	16 अगस्त 1946
जिन्ना का नारा	'या हम पाकिस्तान लेंगे या हिंदुस्तान को तोड़ेंगे'
कलकत्ता नरसंहार	16-19 अगस्त — 4 दिनों में 4000+ मृत; अनगिनत घायल

दंगों का प्रसार	नोआखाली) अक्टूबर 1946); बिहार) नवम्बर 1946); पंजाब) 1947)
गाँधी की प्रतिक्रिया	नोआखाली यात्रा; उपवास; 'मानवता को शर्म आनी चाहिए'
राजनीतिक प्रभाव	विभाजन अनिवार्य लगने लगा; ब्रिटेन ने निर्णय लिया

डायरेक्ट एक्शन डे के बाद नोआखाली (अक्टूबर 1946), बिहार और गढ़मुक्तेश्वर जैसे स्थानों पर भी हिंसा भड़की। गाँधी ने नोआखाली में पैदल यात्रा कर शांति स्थापित करने का प्रयास किया। इस हिंसा ने अंतरिम सरकार (सितंबर 1946) के सुचारु संचालन को कठिन बना दिया और लीग-कांग्रेस के बीच अविश्वास गहरा किया।

4.9.3 1946 के चुनाव और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण

1945-46 में प्रांतीय चुनाव हुए। इनके परिणाम ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की राजनीति पूरी तरह सांप्रदायिक रेखाओं पर ध्रुवीकृत हो चुकी थी:

- मुस्लिम सीटें: मुस्लिम लीग को 30 प्रांतों में मुस्लिम सीटों पर 75% से अधिक वोट मिले।
- लीग की माँग: 'हम मुसलमानों के एकमात्र प्रतिनिधि हैं।'
- INC का संकट: कांग्रेस के मुस्लिम नेताओं की हार — यह जिन्ना के दावे को बल देती थी।
- परिणाम: यह स्पष्ट हो गया कि 'United India' एक सपना ही रहेगा।

फरवरी 1947 में प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की कि ब्रिटेन जून 1948 तक भारत से सत्ता का हस्तांतरण कर देगा, और नए वायसराय के रूप में लॉर्ड माउंटबेटन को नियुक्त किया गया। बढ़ती हिंसा और राजनीतिक गतिरोध को देखते हुए माउंटबेटन ने हस्तांतरण की तिथि पहले करने का निर्णय लिया।

4.9.4 माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) और भारत-विभाजन

फरवरी 1947 में ब्रिटेन ने घोषणा की कि वह जून 1948 तक भारत छोड़ देगा। लॉर्ड माउंटबेटन को अंतिम वायसराय बनाकर भेजा गया। माउंटबेटन ने 3 जून 1947 को अपनी योजना की घोषणा की:

माउंटबेटन योजना — मुख्य प्रावधान	विवरण
भारत का विभाजन	दो स्वतंत्र डोमिनियन — भारत और पाकिस्तान
सीमा-निर्धारण	Sir Cyril Radcliffe — 'Radcliffe Line'

पंजाब का विभाजन	पंजाब की 'Boundary Commission' — जुलाई-अगस्त 1947
बंगाल का विभाजन	पूर्वी बंगाल ⟶ पाकिस्तान; पश्चिमी बंगाल ⟶ भारत
देशी रियासतें	स्वेच्छा से भारत/पाकिस्तान में शामिल होने का विकल्प
तिथि	15 अगस्त 1947 — भारत और पाकिस्तान स्वतंत्र
INC की स्वीकृति	नेहरू, पटेल ने माना; गाँधी ने विरोध किया

यह एक विजय है और यह एक त्रासदी भी।
हम स्वतंत्र हैं — परंतु हम अधूरे हैं।
जो हम चाहते थे, हमें वह नहीं मिला।
— महात्मा गाँधी — 15 अगस्त 1947 की रात) गाँधी ने जश्न नहीं मनाया(

4.10 अपनी प्रगति जाँचें — 4 (Check Your Progress — 4)

(अ (रिक्त स्थान भरिए:

☐ Cabinet Mission में _____, _____ और _____ शामिल थे।

☐ 'डायरेक्ट एक्शन डे' _____ अगस्त _____ को मनाया गया।

☐ भारत-पाकिस्तान की सीमा-रेखा को _____ रेखा कहते हैं जिसे _____ ने खींचा।

☐ माउंटबेटन योजना _____ जून _____ को घोषित हुई।

(ब (दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए:

☐ Cabinet Mission Plan क्यों असफल हुआ?

☐ 'डायरेक्ट एक्शन डे' के क्या परिणाम हुए?

4.11 भारत-विभाजन के परिणाम

4.11.1 शरणार्थी-संकट: मानव-इतिहास का सबसे बड़ा विस्थापन

भारत-विभाजन के परिणामस्वरूप मानव-इतिहास का सबसे बड़ा सामूहिक विस्थापन हुआ। अनुमानतः 1.2 से 1.5 करोड़ लोग विस्थापित हुए:

क्षेत्र	भारत को छोड़ पाकिस्तान गए	पाकिस्तान छोड़ भारत आए
पंजाब	मुसलमान) 55 लाख से अधिक(	हिंदू-सिख) 50 लाख से अधिक(
बंगाल	मुसलमान) पूर्वी बंगाल के(	हिंदू) पश्चिमी बंगाल में(
कुल अनुमान	70-80 लाख	70-80 लाख

विभाजन के लिए सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग गठित हुआ, जिसने बहुत कम समय में पंजाब और बंगाल की सीमाएँ निर्धारित कीं। 17 अगस्त 1947 को रैडक्लिफ रेखा की घोषणा हुई, जिसके बाद गाँव, परिवार और संपत्ति दो देशों में बँट गए। लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए भारत सरकार ने राहत-शिविर, मुआवजा और पुनर्वास-योजनाएँ आरंभ कीं।

4.11.2 सांप्रदायिक हिंसा

विभाजन के साथ पंजाब, बंगाल, दिल्ली और अन्य स्थानों पर भयानक सांप्रदायिक हिंसा हुई:

- पंजाब में हिंसा सर्वाधिक थी — ट्रेनें लाशों से भरी; गाँवों का नामोनिशान मिटाया गया।
- अनुमानतः 5 लाख से 20 लाख लोग मारे गए (विवादित आँकड़ा)।
- गाँधी की भूमिका: नोआखाली, कलकत्ता, दिल्ली में शांति-मिशन; उपवास।
- पाकिस्तान में हिंदू-सिख अल्पसंख्यक; भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यक — दोनों की पीड़ा अपार थी।

पंजाब और बंगाल में महिलाओं और बच्चों पर हिंसा विशेष रूप से हुई, तथा दोनों देशों में विभाजन के बाद अपहृत महिलाओं की 'बरामदगी' के प्रयास हुए। इसके अतिरिक्त सैन्य-संपत्ति, ऋण और नदी-जल जैसे विषयों पर बँटवारे के विवाद भी लंबे समय तक चले।

4.11.3 गाँधी की हत्या (30 जनवरी 1948)

30 जनवरी 1948 — नई दिल्ली के बिड़ला भवन में प्रार्थना-सभा में जाते समय नाथूराम गोडसे ने गाँधी को तीन गोलियाँ मारीं। गाँधी के अंतिम शब्द थे — 'हे राम!'

- गोडसे का मत: गाँधी ने मुसलमानों का तुष्टीकरण किया; पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये दिलाए।

- सरकार की प्रतिक्रिया: RSS पर प्रतिबंध (बाद में हटाया); हिंदू महासभा की निंदा।
- नेहरू का शोक: 'प्रकाश हमारे जीवन से चला गया।'

> प्रकाश हमारे जीवन से चला गया है,
> और चारों ओर अंधेरा है।
> मुझे नहीं पता क्या कहूँ और कैसे कहूँ।
> — जवाहरलाल नेहरू — 30 जनवरी 1948

गाँधी की हत्या के बाद भारत में सांप्रदायिक सद्भाव के प्रति नई चेतना उत्पन्न हुई। सरकार ने 4 फरवरी 1948 को RSS पर प्रतिबंध लगाया, जो 1949 में हटाया गया। नाथूराम गोडसे और नारायण आपटे को 15 नवंबर 1949 को फाँसी दी गई। 30 जनवरी को भारत में 'शहीद दिवस' के रूप में स्मरण किया जाता है।

4.12 विभाजन का इतिहासलेखन: विभिन्न दृष्टिकोण

4.12.1 विभाजन को समझने के विभिन्न दृष्टिकोण

भारत-विभाजन के कारणों की व्याख्या करने में इतिहासकारों के बीच व्यापक मतभेद है:

दृष्टिकोण	मुख्य तर्क
ब्रिटिश-केंद्रित	'फूट डालो और राज करो' — ब्रिटेन जिम्मेदार; M. Edwardes
मुस्लिम लीग-केंद्रित	जिन्ना और मुस्लिम लीग की माँगें जिम्मेदार; R.C. Majumdar
INC-केंद्रित	कांग्रेस की गलतियाँ (1937 में लीग को साथ न लेना(; Waheed Ahmad
सामाजिक इतिहास	जन-स्तर पर सांप्रदायिक हिंसा का विश्लेषण; Gyanendra Pandey
संशोधनवादी	जिन्ना पाकिस्तान नहीं, सौदेबाजी चाहते थे; Ayesha Jalal
उत्तर-आधुनिक	विभाजन की 'याद' और 'पहचान' का विश्लेषण; Urvashi Butalia

इतिहासलेखन की ये विभिन्न धाराएँ दर्शाती हैं कि विभाजन किसी एक कारण का परिणाम नहीं था। आयशा जलाल ने अपनी पुस्तक 'द सोल स्पोक्समैन' (1985) में जिन्ना की भूमिका और पाकिस्तान की माँग को सत्ता में हिस्सेदारी की राजनीति के संदर्भ में विश्लेषित किया, जबकि अन्य विद्वान सामाजिक-आर्थिक और क्षेत्रीय कारकों पर बल देते हैं। इस प्रकार विभाजन का अध्ययन राजनीतिक निर्णयों के साथ-साथ जन-अनुभव और स्मृति के संदर्भ में भी किया जाना चाहिए।

4.12.2 उर्वशी बुटालिया और 'विभाजन की आवाजें'

उर्वशी बुटालिया की पुस्तक 'The Other Side of Silence' (1998) ने विभाजन के इतिहास में एक नई दृष्टि जोड़ी — आम लोगों की आवाज:

- महिलाओं की पीड़ा: विभाजन में हजारों महिलाओं का अपहरण, बलात्कार और हत्या।
- 'रिकवरी ऑपरेशन': दोनों देशों ने 'अपहृत' महिलाओं को वापस लाने के अभियान चलाए।
- स्मृति और आघात: विभाजन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव पीढ़ियों तक चला।
- बच्चों की त्रासदी: परिवारों से बिछड़े बच्चे जो कभी वापस नहीं मिले।

विभाजन की स्मृतियों को दर्ज करने के लिए मौखिक इतिहास (Oral History) की पद्धति का व्यापक प्रयोग हुआ। इससे आम लोगों --- शरणार्थियों, महिलाओं, दलितों और बच्चों --- की आवाज़ इतिहास में सम्मिलित हो सकी, जो परंपरागत राजनीतिक इतिहास में प्रायः अनुपस्थित रहती थी। सआदत हसन मंटो की कहानियों और भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' जैसी साहित्यिक कृतियों से भी विभाजन की त्रासदी को समझने में सहायता मिलती है।

4.13 सारांश (Summary)

इस अध्याय में 'सांप्रदायिक राजनीति एवं भारत विभाजन की ओर बढ़ते कदम' का व्यापक अध्ययन किया गया। मुख्य बिंदु:

1. सांप्रदायिकता की अवधारणा: धार्मिक पहचान को राजनीतिक पहचान से जोड़ना; ब्रिटिश नीतियाँ, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और जनगणना ने इसे बढ़ावा दिया।
2. सर सैयद और अलीगढ़: MAO College (1875) और मुसलमानों की अलग राजनीतिक पहचान की नींव।
3. मुस्लिम लीग (1906): ढाका में स्थापना; मार्ले-मिंटो सुधार (1909) द्वारा पृथक् निर्वाचन — सांप्रदायिकता को कानूनी आधार।
4. हिंदू महासभा और RSS: 1915 और 1925 में स्थापना; सावरकर का 'हिंदुत्व' सिद्धांत — दूसरी तरफ की सांप्रदायिकता।
5. जिन्ना का विकास: 'हिंदू-मुस्लिम एकता के दूत' से 'पाकिस्तान के जनक' तक — एक जटिल राजनीतिक यात्रा।

6. लाहौर प्रस्ताव (1940): 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के आधार पर पाकिस्तान की माँग।
7. Cabinet Mission (1946) की विफलता और डायरेक्ट एक्शन डे: विभाजन अनिवार्य हो गया।
8. माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) और 15 अगस्त 1947: स्वतंत्रता के साथ विभाजन — 1.5 करोड़ विस्थापित, लाखों मृत।
9. विभाजन के परिणाम: शरणार्थी-संकट, सांप्रदायिक हिंसा, गाँधी की हत्या (30 जनवरी 1948)।
10. इतिहासलेखन: विभाजन की विभिन्न व्याख्याएँ; उर्वशी बुटालिया का महिला-केंद्रित दृष्टिकोण।

4.14 मुख्य शब्दावली (Keywords)

शब्द	अर्थ एवं परिभाषा
सांप्रदायिकता	वह विचारधारा जो धार्मिक पहचान को राजनीतिक पहचान का आधार बनाती है
द्वि-राष्ट्र सिद्धांत	जिन्ना का सिद्धांत कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं
पृथक् निर्वाचन	एक व्यवस्था जिसमें मुसलमान केवल मुस्लिम उम्मीदवार को वोट देते थे
मार्ले-मिंटो सुधार (1909)	भारत परिषद् अधिनियम 1909 जिसने मुसलमानों को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिया
हिंदुत्व	सावरकर की अवधारणा (1923): जो भारत को 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' दोनों माने
लाहौर प्रस्ताव (1940)	23 मार्च 1940 को मुस्लिम लीग द्वारा पारित; मुस्लिम बहुल स्वतंत्र राज्यों की माँग
Cabinet Mission Plan (1946)	ब्रिटिश मंत्रिमंडल का तीन सदस्यीय दल; संघीय भारत का प्रस्ताव
डायरेक्ट एक्शन डे	16 अगस्त 1946; जिन्ना का आह्वान; कलकत्ता में भीषण नरसंहार

माउंटबेटन योजना	3 जून 1947 को घोषित; भारत का विभाजन; 15 अगस्त 1947 को लागू
Radcliffe Line	Sir Cyril Radcliffe द्वारा खींची गई भारत-पाकिस्तान की सीमा-रेखा
MAO College	Muhammadan Anglo-Oriental College (1875); अलीगढ़; सर सैयद द्वारा
Muslim League	ऑल इंडिया मुस्लिम लीग) 1906); ढाका में स्थापित; जिन्ना के नेतृत्व में पाकिस्तान की माँग
Hindu Mahasabha	1915 में स्थापित हिंदू राजनीतिक संगठन; सावरकर का नेतृत्व
RSS	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) 1925); नागपुर; हेडगेवार; 'शाखा' प्रणाली
Pirpur Report	1938 में मुस्लिम लीग की रिपोर्ट; कांग्रेस-शासन में मुसलमानों पर अत्याचार के दावे
The Other Side of Silence	उर्वशी बुटालिया की पुस्तक) 1998); विभाजन में महिलाओं की त्रासदी
NEP 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति; सांप्रदायिक इतिहास और विभाजन को पाठ्यक्रम में स्थान

4.15 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(अ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500-700 शब्दों में दीजिए(

11. भारत में सांप्रदायिकता के उदय के कारणों की विवेचना कीजिए। ब्रिटिश 'फूट डालो और राज करो' नीति की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
12. मुस्लिम लीग की स्थापना और 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत' के विकास का विस्तृत वर्णन कीजिए।

13. 'लाहौर प्रस्ताव' (1940) और Cabinet Mission Plan (1946) की असफलता का भारत-विभाजन के संदर्भ में मूल्यांकन कीजिए।
14. भारत-विभाजन के परिणामों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। विभाजन के विभिन्न इतिहासलेखन दृष्टिकोणों की भी विवेचना कीजिए।

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न

(प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए(

15. 'सांप्रदायिकता' की परिभाषा और उसके तीन स्तर बताइए।
16. 'पृथक् निर्वाचन' से क्या तात्पर्य है? इसे किसने और कब दिया?
17. हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग में क्या समानताएँ थीं?
18. 'डायरेक्ट एक्शन डे' (16 अगस्त 1946) क्या था? इसके क्या परिणाम हुए?
19. माउंटबेटन योजना के मुख्य प्रावधान बताइए।
20. अयेशा जलाल का 'संशोधनवादी दृष्टिकोण' क्या है?

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही विकल्प चुनिए:

21. मुस्लिम लीग की स्थापना किस वर्ष हुई? (अ) 1885 (ब) 1900 (स) 1906 (द) 1916
22. मार्ले-मिंटो सुधार (1909) ने किसे पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिया? (अ) हिंदुओं को (ब) मुसलमानों को (स) सिखों को (द) दलितों को
23. 'हिंदुत्व' पुस्तक किसने लिखी? (अ) हेडगेवार (ब) गोलवलकर (स) सावरकर (द) श्यामाप्रसाद मुखर्जी
24. लाहौर प्रस्ताव (1940) किस तिथि को पारित हुआ? (अ) 23 मार्च (ब) 14 अगस्त (स) 15 अगस्त (द) 26 जनवरी
25. 'डायरेक्ट एक्शन डे' (1946) में सर्वाधिक हिंसा कहाँ हुई? (अ) दिल्ली (ब) लाहौर (स) कलकत्ता (द) ढाका
26. भारत-पाकिस्तान की सीमा-रेखा किसने खींची? (अ) माउंटबेटन (ब) साइरिल रैडक्लिफ (स) क्रिप्स (द) वेवेल

27. गाँधी की हत्या कब हुई? (अ) 15 अगस्त 1947 (ब) 30 जनवरी 1948 (स) 26 जनवरी 1948 (द) 2 अक्टूबर 1947

4.16 अपनी प्रगति जाँचें — उत्तर (Answers to Check Your Progress)

4.3 के उत्तर:

(अ(रिक्त स्थान:

28. सांप्रदायिकता वह विचारधारा है जो 'धार्मिक' पहचान को 'राजनीतिक' पहचान से जोड़ती है।

29. 'फूट डालो और राज करो' नीति 'ब्रिटिश' शासन की नीति थी।

30. ब्रिटिश जनगणना '1871' ई. से शुरू हुई।

31. बिपिन चंद्र के अनुसार सांप्रदायिकता 'विभिन्न धर्मों के' हितों को विरोधी मानने की विचारधारा है।

(ब(सही/गलत:

32. गलत (✗) — सांप्रदायिकता ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपज है, प्राकृतिक नहीं।

33. सही (✓) — ब्रिटिश नीतियों ने भारत में हिंदू-मुस्लिम विभाजन को बढ़ावा दिया।

34. सही (✓) — धर्म-आधारित जनगणना ने धार्मिक राजनीतिक पहचान को मजबूत किया।

35. गलत (✗) — सांप्रदायिकता हिंदू, मुस्लिम, सिख — सभी समुदायों में पाई जाती थी।

4.5 के उत्तर:

36. सर सैयद का प्रभाव: MAO College (1875) से मुसलमानों को आधुनिक शिक्षा मिली, INC से दूरी रखने का परामर्श दिया, 'हिंदुस्तान एक राष्ट्र नहीं' — इससे मुसलमानों की अलग राजनीतिक पहचान की नींव पड़ी।

37. मुस्लिम लीग: 30 दिसंबर 1906 को ढाका में; आगा खान की 'शिमला प्रतिनिधिमंडल' (1906) के बाद; उद्देश्य — मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा।

38. मार्ले-मिंटो सुधार (1909): मुसलमानों को पृथक् निर्वाचन दिया — मुसलमान केवल मुस्लिम उम्मीदवार को वोट देंगे। इससे हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक पहचान कानूनी रूप से अलग हो गई।

39. जिन्ना: 1906-1920 तक INC सदस्य; लखनऊ समझौते (1916) में मध्यस्थता; हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रयास के कारण 'दूत' कहलाए।

4.8 के उत्तर (सही मिलान):

घटना/व्यक्ति	सही मिलान
मुस्लिम लीग की स्थापना	30 दिसंबर 1906; ढाका (सही(
लखनऊ समझौता	1916; तिलक-जिन्ना मध्यस्थता) सही(
RSS की स्थापना	1925; नागपुर; हेडगेवार (सही(
सांप्रदायिक पंचाट	1932; रैम्से मैकडोनाल्ड (सही(
लाहौर प्रस्ताव	23 मार्च 1940 (सही(

40. 'पाकिस्तान' शब्द: Choudhry Rahmat Ali ने 1933 में गढ़ा — P (Punjab), A (Afghan), K (Kashmir), S (Sindh), TAN (Baluchistan)।
41. 1937 के चुनाव में INC ने 11 में से 8 प्रांतों में सरकार बनाई।
42. हिंदू महासभा: 1915 में हरिद्वार में स्थापित।

4.10 के उत्तर:

43. Cabinet Mission में पेथिक-लॉरेंस, स्टैफोर्ड क्रिप्स और ए.वी. अलेक्जेंडर शामिल थे।
44. 'डायरेक्ट एक्शन डे' 16 अगस्त 1946 को मनाया गया।
45. भारत-पाकिस्तान की सीमा-रेखा को 'Radcliffe Line' कहते हैं जिसे 'Sir Cyril Radcliffe' ने खींचा।
46. माउंटबेटन योजना 3 जून 1947 को घोषित हुई।
47. Cabinet Mission असफलता: INC और लीग ने 'Grouping' की अलग-अलग व्याख्याएँ कीं — सहमति नहीं बनी।
48. 'डायरेक्ट एक्शन डे' के परिणाम: कलकत्ता में 4 दिनों में 4000+ मृत; नोआखाली, बिहार, पंजाब में दंगों की श्रृंखला; विभाजन अनिवार्य लगने लगा।

वस्तुनिष्ठ उत्तर (4.15 स):

प्रश्न	सही उत्तर
1	(स (1906
2	(ब (मुसलमानों को
3	(स (सावरकर
4	(अ (23 मार्च
5	(स (कलकत्ता
6	(ब (साइरिल रैडक्लिफ
7	(ब (30 जनवरी 1948

4.17 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझावित पठन सामग्री

मूल ग्रंथ एवं प्राथमिक स्रोत:

- Abul Kalam Azad — India Wins Freedom (1988 — complete version)
- Jawaharlal Nehru — Discovery of India; Letters from Prison
- V.D. Savakar — Hindutva: Who is a Hindu? (1923)
- Transfer of Power Documents (12 vols.) — Nicholas Mansergh (ed.)

द्वितीयक स्रोत (हिंदी):

- बिपिन चंद्र — 'भारत में साम्प्रदायिकता', हिंदी अनुवाद
- सुमित सरकार — 'आधुनिक भारत 1885-1947', राजकमल प्रकाशन
- जवाहरलाल नेहरू — 'भारत की खोज' (हिंदी)
- अबुल कलाम आज़ाद — 'इंडिया विन्स फ्रीडम' (हिंदी अनुवाद)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ:

- Bipan Chandra — Communalism in Modern India, Vikas Publishing
- Ayesha Jalal — The Sole Spokesman: Jinnah, the Muslim League and the Demand for Pakistan
- Urvashi Butalia — The Other Side of Silence: Voices from the Partition of India
- Gyanendra Pandey — Remembering Partition, Cambridge University Press
- Yasmin Khan — The Great Partition: The Making of India and Pakistan, Yale

ऑनलाइन संसाधन:

- https://1947partitionarchive.org — विभाजन की गवाहियों का डिजिटल संग्रह
- https://ncert.nic.in — NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तकें
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in — भारतीय इतिहास पर शोध
- https://www.education.gov.in/nep — NEP 2020 पोर्टल

॥ सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा ॥

— मुहम्मद इक़बाल

(वही इकबाल जिन्होंने बाद में मुस्लिम होमलैंड का विचार दिया — यह विरोधाभास विभाजन की त्रासदी है(

वंदे मातरम् — जन गण मन

NOTES

NOTES